# THE BOOK WAS DRENCHED

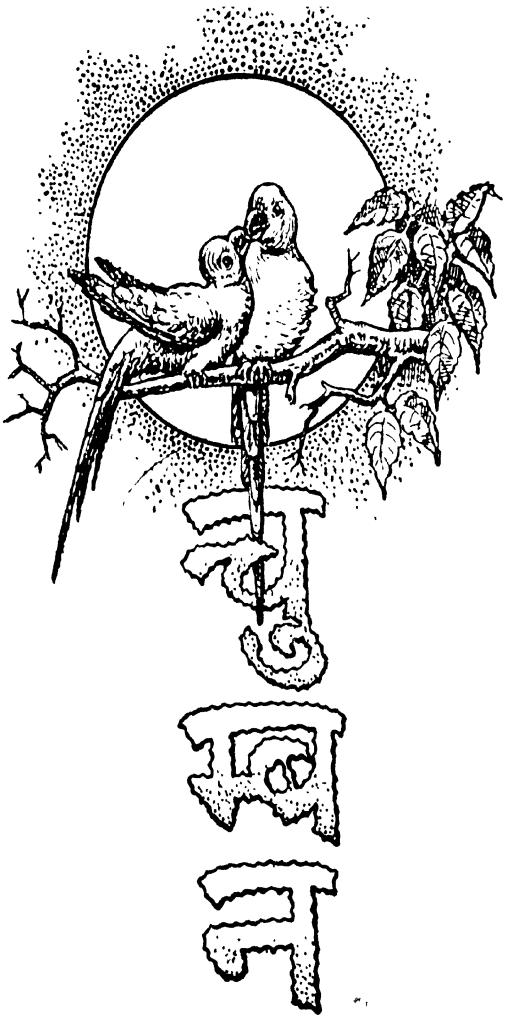
## PAGES MISSING WITHIN THE BOOK ONLY

TEXT DARK AND LIGHT

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182299

UNIVERSAL
LIBRARY



मूल्य तीन रुपये




## प्रकाशक

श्रीबैजनाथ केडिया

**हिन्दी पुस्तक एजेंसी,**

२०३, हरिसन रोड,

कलकत्ता।



CHECKED 1980
By SL. & Bs



| | | |
|---|---|---|
| ज्ञानवापी, काशी | शा<br>शा खा एँ<br>एँ | दरीबा कलां, दिल्ली |
| बांकीपुर, पटना | | गनपत रोड, लाहौर |



## मुद्रक

श्रीकृष्णगोपाल केडिया

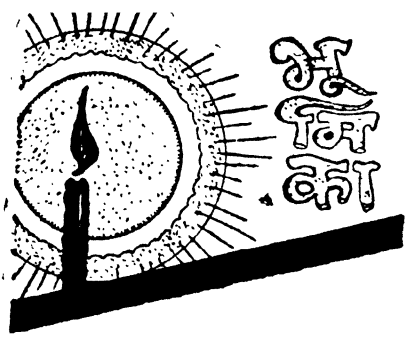
**वणिक् प्रेस,**

१, सरकार लेन,

कलकत्ता।



Checked 1969



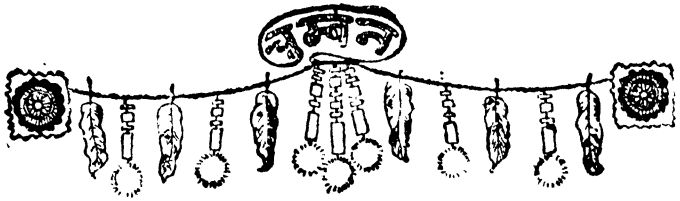

*हमपेशा व हममशरब व हमराज़ है मेरा*
*'ग़ालिब' को बुरा क्यों कहो अच्छा मेरे आगे*

तुलसीके '...रामचन्द्र कृपालु' को जितने साल वन विकरालमें बिताने पड़े थे, प्रायः उतने ही बरस बीते होंगे मेरा पहला नाटक हिन्दी भाषामें प्रकाशित हुआ था—'महात्मा ईसा।'

'चुम्बन' दूसरा गम्भीर नाटक है मेरा।

और गत १४ वर्षोंमें मेरी प्रतिभाके पुलके नीचेसे रचनालहरियों भरी कितनी ही नदियाँ गुज़र गईं। मेरे नामसे किताबें छपी दर्जनों, कविताएँ पचासों, कहानियाँ सैंकड़ों। मगर, नाटक मेरे नामसे यह दूसरा ही छप रहा है।

'महात्मा ईसा' के निर्माणके समय नाट्य-शास्त्र तो दूर—भरपूर मैं 'स्टेज' को भी नहीं जानता था और आज, 'चुम्बन'




निर्माणके समय नाट्य-शास्त्रकी कई किताबें मेरे सामने है — बङ्गाल, महाराष्ट्र और पारसी स्टेजों, उनकी विशेषताओंका मुझे पूरा पता है। 'मूक' से लेकर 'वाचाल' चित्रपटों तकके मेरे कई नाटक लिखे और लाखोंके ख़र्चसे तैयार भी किये जा चुके हैं। देशके अच्छे सिनेमा डाइरेक्टर, एक्टर और एक्ट्रेसें, नर्तक, वादक और गायक गुणवन्त मेरे मित्र हैं। अर्थात् १४ वर्ष पहलेसे मेरा नाटकीय-ज्ञान आज— सुभान अल्लाह !— कहीं आगे है !

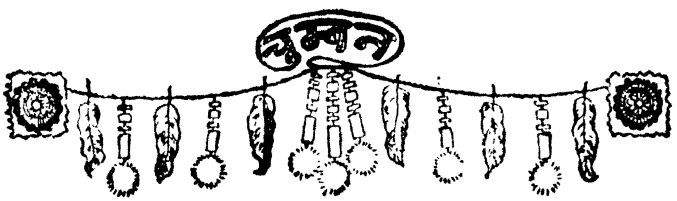
अब अगर मुझसे यह पूछें कि इनमेंसे कौन नाटक मुझको पसन्द है, तो ; मैं कहूंगा कि, यह सवाल किसी पपीहेसे इस प्रश्नकी तरह है कि, तेरी सुबहकी पुकार करुण थी या पिछली रातकी ?

और तुलसीने कहा—"निज कवित्त केहि लाग न नीका...।"



हिन्दीमें नाटककार ? हाँ; थे। हाँ, हैं। मगर; सभीकी महिमामें 'मगर' और प्रतिभाके पीछे 'अगर' लगा हुआ है।

प्रतिभा ? जिसके आंगनमें वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, और तुलसीकी पद रेखाएँ आज भी चमक रही हैं, उसको

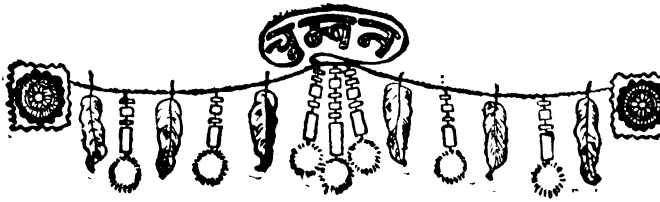



प्रतिभाकी परखके लिये परदेशोंमें भटकना न पड़ेगा। मेरे मत-से 'भारतेन्दु' हरिश्चन्द्रके बाद सम्यक् प्रतिभाशाली कलाकार हिन्दीमें नहीं पैदा हुआ।

भारतेन्दुके बाद आख़िर हुआ क्या हिन्दीमें पैदा? मैं कहूंगा अख़बार। पहले समझदारोंमें प्रतिभाका प्रसार होता था और अब अख़बारोंका होता है, जिनमें प्रतिभाके विज्ञापन-मात्र रहते हैं। आज अफ़सोस!—अख़बार इतने मज़बूत हैं कि एक बार तो किसी भी नत्थूख़ैरेको 'महाकवि' या 'साहित्य-सम्राट' या कुछ-न-कुछ, बेजोड़ प्रमाणित कर देंगे। आगे देरतक काठ-को हाँड़ी आँच बर्दाश्त न कर सके, तो उसका दुष्ट कपाल!

भारतेन्दुजीके बाद एकाधिक सुरचनाकारोंने नाटक निर्माण-की चेष्टाएँ कीं और आजतक कोशिशें बन्द नहीं हैं। मगर, फिर भी, हिन्दी नाट्य-साहित्यमें कोई रौनक़ नहीं ला सका।

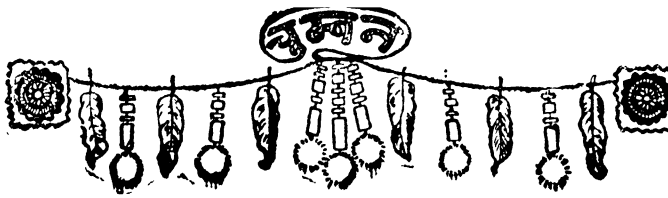
रौनक़से मेरा अभिप्राय है रंग जमानेका। जिस तरह आदरणीय प्रेमचन्दजीका रंग कहानीकारोंमें जमा हुआ है या सुकवि शिरोमणि मैथिलीशरणका रंग जैसे एक प्रकार-के शत-शत कविता पाठकोंपर जमा हुआ है, उसी तरह नाटक-निर्माणके बलपर कोई रंग न बाँध सका...




वस्तुतः नाटक लिखना साहित्य और ज़िम्मेदारीकी नज़रसे देखनेसे असाधारण काम है। आज ही नहीं १४ वर्ष पहले भी मैं उक्त सत्यको जानता था। 'महात्मा ईसा' की भूमिकामें संकेत भी कर दिया था मैंने कि,—'नाटककार'नामसे पुकारे जानेकी धृष्टता मैं नहीं कर सकता—कठोर साधनाओं-से सिद्ध हुए वग़ैर कोई नाटककार हो ही नहीं सकता और यहाँ मन्त्र है –

*होइहि भजन न तामस देहा*
*मन, क्रम, वचन मंत्र दृढ़ नेहा*

वह हज़रत जो लम्बे-लम्बेसे तगड़े और ख़ूबसूरत रिन्द थे,—जनाब आग़ाहश्र साहब काश्मीरी मेरा दावा है हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषाके वह एक महान और सफल नाटककार हैं। कई नाटकोंमें आग़ा साहबकी भाषा ज़रा फ़ारसी-मयी होकर अहिन्दीसी हो गई है अन्यथा अपने अनेक नाटकोंमें पूर्ण प्रसाद से,अनुभवसे,रंगसे,तरंगसे—हर तरहसे और हर तरफ़से—मरहूम आग़ा हश्र साहब काश्मीरी हमारी राष्ट्रभाषाके एक महान् सफल नाटककार हैं। 'हैं' नास्ति येषां यशः काये जरामरणजंभयम्।

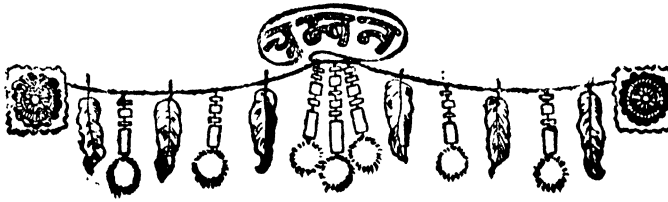


आग़ा साहबके एक-दो नहीं दर्जनों ऐसे नाटक हैं; जिन्हें छापकर प्रकाशित कर दिया जाय तो तुरन्त ही वे हमारे साहित्यका एक शिथिल अङ्ग चुस्त-दुरुस्त कर दें। वे प्रकाशित होंगे—और जब कभी वे प्रकाशित होंगे, उनसे हमारा साहित्य भी प्रकाशित हो उठेगा। आग़ा साहबके नाटकोंमें 'तमाशा' तो हरा-भरा हुआ है। देखिये यहूदीकी लड़की, ख़ूबसूरत बला, सूरदास, आँखका नशा, वग़ैरह—आप फड़क उठेंगे!

आग़ा साहब कसे हुए नाटककार थे, रससे भरे हुए—डूबे हुए—कवि थे और आग़ा साहब प्रतिभा और पागलपन तथा पाण्डित्यकी प्रतिमा थे। आग़ा साहब सदेह कलाकार थे। आग़ा हश्र काश्मीरीके जोड़का नाटककार हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दीमें दूसरा नहीं है...



प्रसिद्ध और सिद्ध हँसोड़-लेखक श्री अन्नपूर्णानन्दजीकी एक कहानी है 'महावीरकी माया'—जिसका कथानक उनके किसी मित्रके माथेकी उपज है। मगर; बम्बईमें वही कथा मेरे मित्र साहित्याचार्य पण्डित श्रीनिधि द्विवेदी सुनाने लगे




और बोले—यह कहानी तो उनकी तरफ़के एक-एक गाँवमें प्रति जिह्वापर है। जो हो !

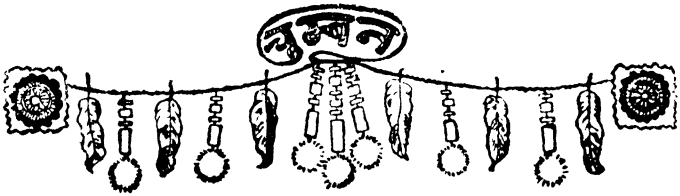
'चुम्बन' नाटकमें भी मूर्तियाँ बोलती हैं। उक्त लोक कथाहीके आधारपर मेरे नाटकमें भी रामचन्द्रदेवकी इच्छासे किसी आतुर भक्तको, ऐन वक्त पर कई हज़ार रुपये मिलते हैं, साथ ही एक लोभी धनिक हैरान भी किया जाता है हनुमान द्वारा...

कहानी या लोक-कथाकी जो बातें मुझे अपने उद्देश्यतक पहुँचनेमें सहायक मालूम पड़ीं 'चुम्बन' में मैंने उन्हें चुन लिया है।

गाँव या अन्नपूर्णानन्दकी कहानी हास्य रसकी है और 'चुम्बन' में 'लोचन जल रह लोचन कोना' है। कहानीका सारा ताना बाना मेरा अपना बुना हुआ है।



वाह ! किताब किस ठाटसे प्रकाशित की है—श्रीमान् बाबू बैजनाथजी केडियाने, कि; उनको धन्यवाद दिये बग़ैर कर्त्तव्य पूरा न होगा। जो कुछ भी मैंने चाहा—काग़ज़, छपाई, चित्र, कलाकार—सब कुछ उन्होंने दिया मुझे। इस




नाटकको प्रकाशित करनेमें पुष्कल व्यय करना पड़ा उन्हें...!

मैं आभारी हूँ सुलेखक पण्डित गिरीशचन्द्र जोशीका जिन्होंने पुस्तकको शुद्धतम निकालनेकी भरपूर कोशिश की, और सप्रेम। साथ ही धन्यवाद है पण्डित दयाशङ्करजी वाजपेयीको जिन्होंने 'बड़ाबाजार लाइब्रेरी' से गाहियों किताबें 'चुम्बन' प्रकाशन कालमें मुझे दीं—रस-रसकी!

और--जै मायाकी

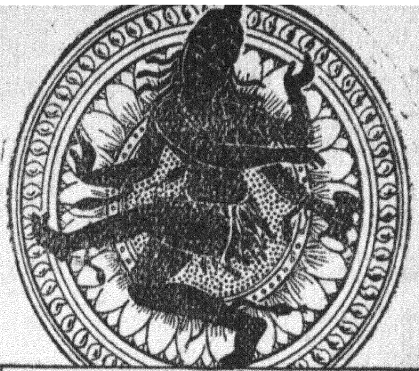
५—८—३७
कलकत्ता

पाण्डेय बेचनशर्मा "उग्र"



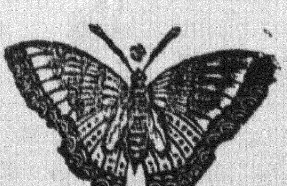
—लेखककी आज्ञा बिना कोई भी सज्जन इस नाटक या इसके किसी हिस्सेका उपयोग—थियेटर या फ़िल्मके लिये न करें।





# पात्र-परिचय

| | |
|---|---|
| दौलत ... ... | सख़्त अमीर |
| मल्लू ... ... | सख़्त ग़रीब |
| मैना ... ... | सख़्त बेवक़ूफ़ |
| विपत ... ... | सख़्त बदनसीब |



# गीत—


| | | |
|---|---|---|
| १—हे प्रमथपति पुरारि, हर ! ( मङ्गलाचरण ) | —उग्र | |
| २—है नीको मेरो देवता | ८—तुलसी | |
| ३—सारे जहाँसे अच्छा— | १७—अक़बाल | |
| ४—अम्मा मुझे गोदीमें— | २६—उग्र | |
| ५—हम क्या जाने सौदा क्या है— | ४०—उग्र | |
| ६—उसने कहा तू कौन है— | ५६—कोई | |
| ७—उसने कहा तू कौन है— | ६२—उग्र | |
| ८—ओ दीवाने— | ६५—उग्र | |
| ९—सियाराम बोल मनुवा— | ७२—उग्र | |
| १०—दे और ढाल— | ७५—उग्र | |
| ११—डफ बाजै हो— | ९२—उग्र | |
| १२—ग़ाफ़िल तू मत सो— | १०१—उग्र | |
| १३—तान तान मत कमान— | ११८—उग्र | |
| १४—भौंरा निकट मत आरे— | १२४—उग्र | |
| १५—सुमन चुन सुकुमार— | १४९—उग्र | |
| १६—बालम आओ !— | १८४—कबीर | |
| १७—केसरिया रंग रँगा चोला— | २११—उग्र | |








पर्दा उठते ही—एक विस्तृत-दृश्य नज़र आता है। सबके पीछे एक मामूली पहाड़ी! उसपर दिखाई देती कई झोपड़ियाँ। उसी बस्तीका नाम है *तिनकापुर* * *

पहाड़ीकी तलेटीमें एक नदी, ऐसी ख़ूबसूरतीसे लहराती चमक रही है, जैसे सुन्दरी रमणीके चिकने काले केशोंमें मांग—या घनश्यामके वक्षपर चञ्चला—रेखा! * *




पहले पहाड़ो, फिर झोपड़ियां, फिर नदी और अन्तमें उस विस्तृत विभूतिवान् नगरपर दृष्टि जाती है, जिसका नाम है *विलासपुर* * *

परन्तु विलासपुर, चमकती नदी और ऊँचे पहाड़को छोड़ हम तो तिनकापुरकी झोपड़ियोंपर आकर्षित होते हैं * *

पलभर, हमारी आंखें ढूंढ़ती नज़र आती हैं उस झोपड़ी-को जिसमें हमारा नायक रहता है लकड़हारा **मल्लू**—अपनी स्त्री **मैना** और बालक (पांच सालका) **विपत** के साथ।

**स्थान**—मल्लूकी झोपड़ी

**समय**—पौ फटनेसे पहले

खुली-सी झोपड़ीमें तीन जन सोते नज़र आते हैं—मद, औरत और बालक। मद एकाएक चौंक, जागकर—धीरेसे उठ, शंकितभावेन सोती औरतको देख, कुल्हाड़ी कांधेपर ले, दबे पांव, बाहर चल पड़ना चाहता ही है कि—बिजलीकी तेज़ीसे मैना उठकर मल्लूपर झपटती



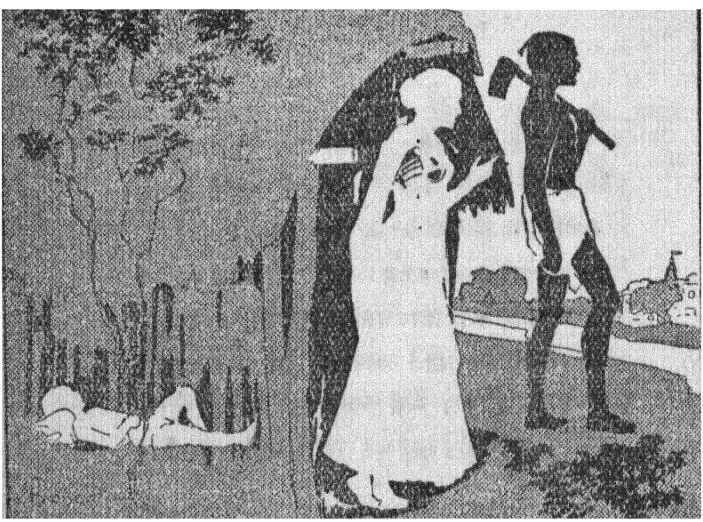
है! असावधान पतिके कन्धेका वस्त्र पीछेसे तावसे खींचकर, बिना कुछ बोले ही, संकेतमें पूछती है कि उठ—भोर वह कहाँ भागा जा रहा है?

रोशनी बढ़ गई न—अब हम मल्लूको साफ़ देख रहे हैं। वह ऐसा दुबला है, ऐसा काला, फिर भी; ऐसा आकर्षक कि वाह—वाह! बेचारा दीन लकड़हारा! लोके आक्रमणसे "बाज-झपट-जनु-लवा"-सा हो रहा। फिर भी, अपने उद्देश्यसे वह डिगा नहीं। मुस्कराकर बोला—

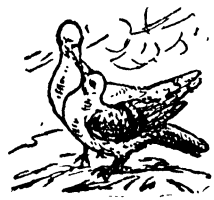
मल्लू—राजा रामचन्द्रकी सेवा-टहल करने जा रहा हूँ, अभी लौटता हूँ न।

और मैना—अलस-निमीलित-नैना, मन्दोदरी, श्यामा और सुन्दरी सलोनी तो है, मगर, पतिके प्रति उसका जो तिरस्कार-भाव है वह भयानक नाच रहा है उसके सौन्दर्य-आँगनमें—! "नासा-मोरि-नचाई-दृग" वह बोली—

मैना—राजाराम—! राजाराम कौन है जिसके पास हर रोज़ झख मारनेको तू जाता है?



*मैना* – राजाराम—! राजाराम कौन है जिसके पास हर रोज़ झख मारनेको तू जाता है ?



मल्लू—ऐसा नहीं ! मेरे राम-धनीका अपमान न करो मैना !
मैं थोड़ी ही देरमें लौट आता हूँ न !

मल्लू चला ही गया ! कुछ देरतक तो मैना मौन रही—
मगर, तुरन्त ही उसका पारा ऊपर चढ़ने लगा—!
आकाशकी तरफ हाथ उठाकर अपने अ-वश पतिको
उसने कोसा। इसी समय घोर निद्रामें बालक विपत
बर्रा उठा। बस, मैना अपने बेटे ही पर टूट पड़ी—

मैना—उठ ! मूँजले—उठ !!

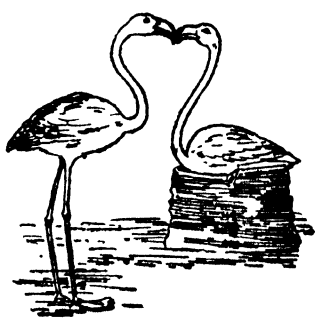
वह मुक्कियोंसे, सक्रोध ( विचित्र माता देखिये तो ! )
अपने बेटेको पीटती है—

मैना—तू भी वहीं जा—! जा—! वहीं—जहाँ "वह" कल-
मुहाँ, अभागा भागा गया है—। जा ! निकल !

फिर भी प्यारा बालक मातासे विमुख नहीं होता। मार
खाकर भी वह, रोते-रोते हँसता, मैनाकी छातीसे लगकर
प्रेमसे माताको चूमना चाहता है। मैना उसके मुँहपर
मारती है और निकाल देती है झोपड़ी बाहर ! अब
वह ऊँचे स्वरसे रो पड़ी ! देखा आपने "तिरिया
चरित्तर" ?




मैना—हाय री! मैं अकेली हूँ—! मेरा आज कोई नहीं।
मेरी माँ! मैं किस बन्दरके पाले पड़ी हूँ—!
[ नेपथ्यमें मुर्गेकी आवाज और गधेकी और मैनाकी! ]





**स्थान**—नदीतट

**समय**—प्रातः काल

इस वक्त हमें मल्लूकी जरूरत है। हम उसे नदी-तटकी तरफ भागते देखते हैं। किनारे आ उसने देखा कि नाव अभी उस पारसे लौटी नहीं। नदीमें चन्द देहाती स्नान कर रहे थे। एकने पूछा—

*देहाती*—कहाँ चले मल्लू भाई! उसी टूटे मन्दिरकी ओर न?

*मल्लू*—हाँ भैया! आज तनक देर हो गई।

*देहाती*—अरे उस टूटे-मन्दिरमें जो हनूमान है, उनकी पूँछ खण्डित है; इसीलिये, समझदार हिन्दू उसमें पूजा करने नहीं जाते। टूटी मूर्ति अशुद्ध मानी जाती है।

*मल्लू*—भैयाकी बातें! भला कहीं देवता भी अपवित्र हो सकते हैं? राम, राम भजो! (नावकी तरफ देख) बहुत धीरे-धीरे आ रही है।

*देहाती*—अरे! तो तैरकर क्यों नहीं चला जाता! राजाराम मल्लू लकड़हारेके इन्तज़ारमें रोते होंगे—रोते!

*मल्लू*—चमड़ेके बाहर झाँकती हड्डियोंपर तानें! ह—ह! भैयाकी




बातें ! हमारे राजारामके नामसे पत्थर भी पानीपर मक्खन-सा तैरता है। बन्दर, समन्दर पारकी उड़ान मारता है ! जै राजारामचन्द्रकी !!

मल्लू नावपर चढ़ दूसरे तटकी ओर जाता है जिधरसे किसी साधूके गानेकी आवाज़ आती है—

## गीत

( भरवी )

*है नीको मेरो देवता*

*कोशलपति राम !*

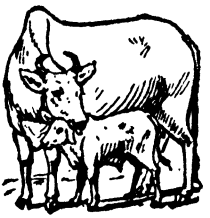
*सुभग सरोरुह लोचन सुठि सुन्दर स्याम ।*

*देस, काल पूरन सदा बद वेद, पुरान*

*सबको प्रभु सबमों बसे सबकी गति जान ।*

*को करि कोटिक कामना—पूजे बहु देव*

*"तुलसिदास" तेहि सेइये शंकर जेहि सेव ।*



नाव पार-पार आती है। मल्लू उतर, उस टूट मन्दिरकी तरफ़ झपटता है जिसकी मूर्त्तियाँ खण्डित होनेके कारण हिन्दू शास्त्रानुसार अपवित्र क़रार दी गई हैं। वह मन्दिरमें उसी तरफ़से घुसता है जिधरकी दीवार ढह गई है...

मन्दिरके अन्दर दाखिल होनेके क्षणभर पहले मल्लूको तलाशमें दौलतराम आता है। हाथमें मोटा सोटा लिये। स्थूल-काय! बिखरी मूँछें। तोंदीला नाटा। मल्लूको मन्दिरमें घुसते देख वह टूटी दीवारकी आड़से एकबार उसकी गति-विधिका निरीक्षण करता है—

मल्लू पहले तो गुनगुनाता है—"नीको मेरो देवता"

फिर झाड़ लगा, ज़रा जलसे मूर्त्तियोंको नहला, वह प्रार्थना करता है—

मल्लू—महाराज! मेरी ग़रीबी कब हरोगे, संकट कब दूर करोगे?...

...भगवानजी! आपको छोड़ मैं किससे माँगू? राजा-राम! दया कर मुझे तीन हज़ार रुपये दे दो और बस मैं—

नेपथ्य—अरे मलुआ!




आवाज़ दौलतरामकी आई और भयसे थरां बेचारा दुबल मल्लू अपने "राजाराम" को छोड़—दौलतराम-की सेवामें हाज़िर हो गया।

*दौलत*—क्यों बे! मेरे रुपये कब देगा?

*मल्लू*—सरकार.....!

*दौलत*—ख़ामोश! मैं सारे क़ायदे-क़ानून जानता हूं। मैं तुझ-को जेहलख़ाने याने ज़हरख़ाने याने झाड़ूखानेको भेज दूंगा।

*मल्लू*—दोहाई—दोहाई हुज़ूरकी! ज़रा सब्र कीजिये। राजा-रामसे रुपये पाते ही मैं पहले सरकारको दूंगा।

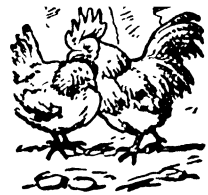
*दौलत*—जानता है मेरे कितने रुपये तेरी खोपड़ीपर चढ़े हैं?

*मल्लू*—भैयाकी बातें! मैं बेपढ़ा आदमी, शायद—सौ मूल और छ सौ भूल—ऐं!

*दौलत*—पागल "भूल" नहीं,—सूदके रुपये ही अमीरीके मूल हैं। मैं सारे क़ानून-क़ायदे चाटे बैठा हूँ—सुनता है रे!!

*मल्लू*—सरकार!

*दौलत*—रुपये जल्द दे!



मल्लू—ज्योंही मेरे राजारामने दिया त्योंही. मैं हुज़ूरको हाज़िर कर दूंगा। हाथ बाँधकर।

दौलत ज़रा चिन्तामें पड़ गया। उसके माथेपर कुटिल रेखायें चमकीं—

दौलत अच्छा— लकड़ियाँ तबतक बेगारमें मेरे बंगलेपर पहुँचाया कर! समझता है? मैं सारे क़ानून, क़ायदे, अदालत, कोर्ट, कचहरी, थाना, पुलीस, बंपुलिस तकको जानता हूँ। जा!

मल्लू पुनः मन्दिरकी ओर लौटता है। इधर दौलतरामकी नज़र राहगीरोंपर पड़ती है। तिनकापुरके ग्वाले घसियारे वगैरह विलासपुरमें बेचनेके लिये गांवकी चीजें लिये आ रहे हैं।

और आश्चय! वे—प्रायः सभी—दौलतरामके कर्ज़दार हैं—

दौलतराम पहले एक गाड़ीवानको रोकता है—

दौलत क्यों बे! मेरे रुपये कब देगा?

गाड़ी बंगलेपर लेकर आता हूँ सरकार—!




दौलत—फ़ौरन आना—नहीं तो मैं सारे क़ानून, क़ायदे, कान हरी—क्यों बे! ओ ग्वाले! (संकेतसे रुपयोंके बारेमें प्रश्न कर) मैंने कहा—मैं सारे क़ानून, क़ायदे—कोर्ट और कोर्ट-शिपोंको जानता हूँ। किसी ग़ैरके धोंके न रहना!

ग्वाला—माल बेच, रुपये लेकर तुरन्त आता हूँ महाराज!

दौलत—फ़ौरन!—अरी ओ—घासवाली!

दौलतके भयसे अपनी-अपनी चीजें संभाल तिनका-पुरके ग़रीब ग्रामीण भाग खड़े होते हैं। वह बिकट आवेश हाँफता, डगडग तोल, उनका पीछा करता है।..





**स्थान**—पाठशाला

**समय** — सवेरा

तिनकापुरकी एक कच्ची झोंपड़ीमें शायद देहाती बच्चों की पाठशाला है। दस-पांच लड़के स्लेट और बस्ते लिये खड़े हैं। बकरियोंके बीच जैसे बेल हो, वैसे ही उनके गुरुजी भी मोटा डण्डा तानकर, ज़ोर-ज़ोरसे कुछ बोल रहे हैं।

गुरु—अरे सुन्दरा !...अभी शालेमें झाड़ू नहीं लगाया गया ! रैना ! झोंपड़ीके बाहर वह 'बोर्ड' तुम सब अभी नहीं उठा लाये ? कृष्णा !

बेचारे बच्चे ही देहाती पाठशालामें झाड़ू लगाते। और सफाई खाते जो ५) मासिक मिलते उन्हें गुरुजी अपने गाय के कुर्ते में रख लेते। इस तरह उनका विश्वास था कि, वे किसी मैले अछूतसे सफाई न करा बालकोंको ही स्वावलम्बी बनाते थे। खैर, टाट बिछा। बोर्ड, और गुरुजीकी कुर्सी बाहर आई। एक टूटीसी मेज भी। अब गुरुजीने अपना शासन भार सँभाला.

गुरु - सुन्नर ! क से ?




सुन्दर—कबूतर—गुरूजी।

गुरू—ख से क्या होगा रैना ?

रैना—ख़रगोश—गुरूजी।

गुरू—क्यों रे बिपता—ग माने ?

बिपत—( रटता है स्मरणके लिये ) क से कबूतर, ख से ख़रगोश,
ग—से—ग-ग-ग से—गु-गु-गुरूजी—गग गनपती !
बस ! भयानक बिगड़ पड़े गुरूजी—

गुरू—अरे उल्लूके चेले ! ग से गनपती नहीं—गद्धा—गद्धा !
और गलती करनेवालेके कानोंको किचकिचाकर गुरू जीने
ऐसे उमेठा जैसे, जकड़े हुए जल-कलका कान कोई खिस-
आया बालक ऐंठे। इसी वक्त बाहरसे आ—एक लड़का
सूचना देता है—

कृष्णा—इन्सपेक्टर साहबकी सवारी आ रही है गुरूजी !
कान ऐंठे जानेके कारण तथा "स्पेशल" मारसे बचनेके
लिये, बिपत जोर-जोरसे चिल्लाकर रो रहा था। गुरूजी
इन्सपेक्टरके नामसे घबरा उठे !

गुरू—चुप रे ! रोना रोक ! नहीं तो मेरी नौक०—



इन्सपेक्टर साहब तबतक आ ही धमके !

इन्स०—कौन लड़का रोता है ?

बच्चोंसा मुंह बनाकर, गुरूजीने झूठ बोलनेकी कोशिश की—

गुरू—कोई तो नहीं हुज़ूर...

मगर वह बदमाश विपत भला माननेवाला था ! इसी वक्त हिचकियोंके साथ बड़े जोरोंसे रो उठा ! आदश मुख बना फ़ौरन, इन्पेक्टर साहब विपतके पास आये—

इन्स०—क्या बात है बच्चे ? सच-सच बताओ !

लेकिन बिना भरपूर नाटक खेले विपतने कोई भी जवाब न दिया और दिया भी तो यह कि—

विपत—गुरूजी—गुरूजी—ग—ग—गद्धा—गद्धा !

अब इन्सपेक्टरने ज़रा अधिकारसे गुरूजीसे पूछा—

इन्स०—क्या मामला है पण्डितजी ?

गुरू—( एक सांसमें झपाटेसे ) पाजी है हुज़ूर ! पढ़ेगा न लिखेगा और कुछ सिखानेपर ऐसे रोता है मानो किसीने हण्टर मार दिया है।




इन्स्पे०—याने ?

गुरू—पूछनेपर पाजी ग से गद्धा न बतला, अपने मनसे आय बायं-शायं—गनपर्ना — सनपर्ना !

गुरूजीका वक्तव्य सुन, साहिबाने बातेमें, जनाब इन्स-पेक्टर साहब क्रोधसे धरां उठे—

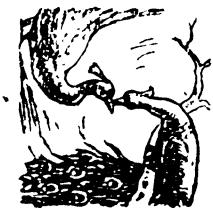
इन्स्पे०—समझा...मगर पण्डितजी ! आप भी समझ लीजिये। यह सरकारी सर्कूलर है कि, जो मास्टर बच्चोंकी बुद्धिको डण्डेसे चराये अध्यापकीके लायक़ वह कदापि नहीं।

गुरू—निहायत नालायक़ लड़के हुज़ूर माफ़ करें बिना लातके बात समझते ही नहीं।

और गुरूजीकी बातमें जो मनस्तत्व है, उसको मनही मन मानकर, बातको टाल, इन्सपेक्टरने बालक विपतको किसी अन्य प्रकारसे प्रसन्न करनेका निश्चय किया।

इन्स्पे०—सबक़ ध्यान लगाकर पढ़ा करो ! तुम्हारी किताब तो देखूँ !

मगर विपतके पास किताब-विताब थी ही नहीं। महज़



एक टूटा चप्पलका टुकड़ा था जिसे मल्लू विलासपुरकी सड़कपरसे, रत्नकी तरह, अपने बेटेके लिये, उठा लाया था ! विपतने इन्सपेक्टरको वही टुकड़ा दिखाया।

विपत—मेरे पास इसको छोड़ और कोई भी किताब नहीं है।

इन्स०—क्यों, मगर...?

विपत—मेरा बाप ग़रीब लकड़हारा है। वह रोज़ भर पेट, खाना ही हमारे वास्ते नहीं जुटा सकता...

इन्सपेक्टरकी आंखोंमें सजल दया झलक उठी—

इन्स०—ग़रीब ? ठीक है बच्चे ! दिलदारीमें सारे जहानका सरताज हमारा वतन—हिन्दुस्तान—ग़रीब है। लो इससे किताब ले लेना।

इन्सपेक्टरने विपतको एक रुपया दिया। पण्डितजीने प्रसन्न हो अन्य बालकोंको संकेत किया और वे सब जनाब अक़बाल साहबकी लिखी मशहूर क़ौमी ग़ज़ल स्वर्गीय स्वरसे गाने लगे—

## ग़ज़ल

*सारे जहांसे अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा*
*हम बुलबुलें है उसकी, वह गुलसितां हमारा।*

# कुसुम

यूनानो, मिस्रो, रूमा, सब मिट गये जहांसे,
अबतक मगर है बाक़ी, नामोनिशां हमारा।
कुरबतमें हों अगर हम, रहता है दिल वतनमें,
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा।
मज़हब नहीं सिखाता, आपसमें बैर करना,
हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्तां हमारा।





**स्थान**—दौलतरामका दरवाज़ा

**समय**—दोपहर

"दोहाई है ! दोहाई है !!"

की आवाज़ नहीं—पारसे सुनाई पड़ती है और हमारा ध्यान—कानकी सरगर्मतामें शमीर दौलतरामके घर या बङ्गलेकी ओर जाता है।

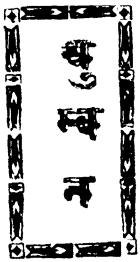
दौलतराम फाटकके ऊपर बने छज्जेपर हुक्का लिये तना तावसे खड़ा—उसके पासही उसका मुनीम भी, और नीचे तिलकापुरके सैकड़ों, हर जातिके, आदमी अस्त खड़े। क्योंकि, ये दौलतरामके कर्ज़दार हैं। दौलतकी धमकियोंसे डरकर बेचारे देहाती पुकारते और रोते।

*देहाती* - दोहाई है !!

*दौलत* — क़ानून - दफ़ायें - दावे - डिग्री—कुर्की—सम्मन सभी मेरे चाटे हुए हैं ! मत दो ! देखता हूँ तुम लोग मेरे रुपये कैसे नहीं देते ! सबको जेलखाने—!!

*देहाती* - दया ! भगवान —अल्लाहके लिये दया !!

*एक*—मैं आधे रुपये लाया हूँ।




क्षणभर दौलतराम न जाने क्या सोचता रहा फिर बोला—

दौलत—अच्छा, मैं सारे क़ानून-क़ायदे चाटकर बैठा हूँ। अब, जो आधी रक़म लाये हों वे एक ओर और ना देहन्द दूसरी तरफ़ आमने-सामने खड़े हो जाओ!

सौमें कोई दस आदमी आधी रक़म लाये थे। वे अलग खड़े हो गये।

जिनके पास महाजनको देनेके लिये तनमें रक्त भी नहीं वे—आधी रक़म लानेवालोंको भाग्यवान और सुखी समझ अपने दुर्भाग्यपर रो पड़े!

मोची—मेरे तो खाने तकका ठिकाना नहीं—सरकार!

उसी दलमें मल्लू भी है। उससे भी बिना बोले न रहा गया। क्योंकि, वह ईमानदार किसान है।

मल्लू—ज़रूर देंगे रामराजा—और मालिक! मैं भी पाते ही आपको ज़रूर दूंगा!

चिढ़कर आधी रक़म लानेवाले देहातियोंको दौलतने—कुछ भी न लानेवाले बेचारोंपर, ललकार दिया—

दौलत—मारो! मैं कहता हूँ, मेरे कहनेसे, इन बदमाशोंको मारो!



सब—नहीं! हर्गिज़ नहीं। हम अपने पड़ोसीको कदापि न मारेंगे।

अब तो दौलतराम ऐसे भड़का जैसे आगमें बारूद।
अपने डण्डेको उसने छज्जेकी पीठपर दे मारा और
शून्यको छातीपर हवामें कई घूंसे भी मारे!

दौलत—बदमाशो! मैं तुम सबको जेलखाने यानी झाड़ू खानेको...

सब—नहीं हो सरकार! दोहाई है...

दौलत—तब मारो, इन नादेहन्द पाजियोंको।

सब—मारेंगे—मारो!!

वे दसों, दौलतके नशेमें, अपने पड़ोसियोंपर डण्डा तान
टूटनेहीवाले थे कि, चमककर मल्ल, बीचमें आ गया।
दुबला, पतला, काला!

मल्ल—शर्म करो—डूब मरो अभागो! एक मूर्खके इशारेपर तुम अपने पड़ोसियोंको पीसोगे—क्यों?

दौलत—मारो! देखते क्या हो बुज़दिलो!

मल्ल—(बीचमें बैठकर) पहले मुझे मारो! दौलतरामका सबसे बड़ा क़र्ज़दार मैं हूं।




और मल्लूके सत्याग्रहसे तिनकापुरके मूर्खोंकी आँखें खुल गईं !

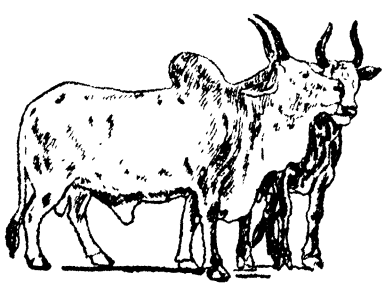
सब—हम नहीं मार सकते। अपने पड़ोसियोंको हम नहीं सतावेंगे।

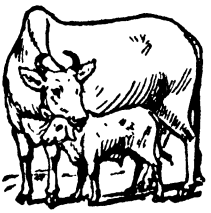
कोई—मैली-थैलीवाले दौलतराम ! तू हमें नहीं ठग सकता।

कोई—क़र्ज़ लिया है तो क्या हुआ—बड़े-बड़े भी क़र्ज़ लेते है। होगा तो पहुँचा जायंगे।

कोई—और अगर इसको अदालत पाप समझेगी—तो काट लेंगे जेल भी, मगर; अपने भाईका गला—धनीके इशारेपर—हम कदापि न काटेंगे !

सब—( जाते-जाते ) कदापि नहीं ! कदापि नहीं !!





**स्थान**—मल्लूका झोपड़ा

**समय**—तीसरा पहर

मल्लूकी झोपड़ीमें इन्सपेक्टरके दिये रुपयेसे विपत खेल रहा है और उसकी माता --मैना---लोभ-भरी आँखों-से उसको गुज़र रही है—

*विपत*—**माँ इस रुपयेकी...**

चील-सी झपटकर मैनाने विपतसे रुपया छीन लिया!

*मैना*—**इस रुपयेकी—अँगिया मलमली में सिलाऊँगी!**

*विपत*—**ना—अम्माँ! इसकी मैं चमकीली-सी टोपी लूँगा।**

विपतने पुनः झपटसे माताके हाथसे रुपया उड़ा लिया।

*मैना*—**मुझको दे! इसकी मुझे ज़रूरत है।**

*विपत*—**इसकी मुझे ज़रूरत है।**

अब तो, एक रुपयाके लिये, बेटेको मजबूतीसे पकड़कर वह माता तमाचे लगाने लगी!

*मैना*—**छोड़—! मुए—मुझे दे!**

शोर सुन आसपाससे पड़ोसिनें आ गईं।




*मैना*—मेरा है रुपया !

*विपत*—मेरा है रुपया !!

*पड़ोसिन*—क्या है ? है क्या बहन ?

मगर, पड़ोसिनके प्रश्नसे लोभिनी मैना चिढ़ गयी !

*मैना*—है—एकका दो है—तुम्हारा सर है। तुम सब क्या मरनेके लिये यहाँ दौड़ी आई हो ?

*पड़ोसिन*—जाने दो बहन ! नन्हें-से बच्चेको क्यों मारती हो ?

'क्यों मारती हो' पर तो मैना आगबगूला हो उठी—

*मैना*—मैं लाख बार मारूँगी—मूँ झौंसियो ! लड़का मेरा है।

( विपतको चपत लगा, रुपया छीन लेती है ) रुपया मेरा है।

इसी वक्त विलासपुरसे आटा-दालकी गठरियां बांधे मल्लू आ पहुंचा। दृश्य सारा देखते ही वह समझ गया घटना-क्रम। जरा गम्भीरतासे जरासा विचार कर वह बोला—

*मल्लू*—मैना ! वह रुपया विपतको दे दो ! किताबोंके वास्ते है।

*पड़ोसिन*—वाह भैया मल्लू—वाह ! खूब इन्साफ़ किया ! विपतका पढ़ना बेशक ज़रूरी है।



अब तो मैना ज्वालामुखी-सी फूट पड़ी, पड़ोसिनोंपर। उसके मुंहसे धुएं-सी गालियां बाहर होने लगीं और आंखोंसे लावा से आंसू— !

मैना—निकल ! निकलो ! इनके पूत-पतोंपर प्रेत चढ़े ! ये मरने-के लिये आती है मेरे घरमें ! कलमुहीं !!

और रिससे भरी पड़ोसिनें चली गयीं। मल्लू भी दुखी हो बाहर हुआ। लेकिन मैना शान्त न हो सकी। रुपयेको विपतपर पत्थरकी तरह फेंकती, रोती, वह बोली—

मैना—ले अभागे ! तुझको काली खाय ! ले अपनी रुपुल्ली ! आग लगे ऐसे रुपयेमें। ऐसे पापी मर्दके मुंहमें। ऐसे दरिद्र नरक-रूपी घरमें। अरी मेरी माँ ! ! ! !!

रोते-रोते मैना हिचकने लगी। बेचारा बालक त्रस्त और किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा था। अन्तमें मांका रोना उससे न देखा गया। उसने रुपयेको मैनाकी तरफ धीरेसे लुढ़का दिया—

विपत—तू ही खुश रहे माँ ! ले ! अब चुप हो जा। ले रुपया।



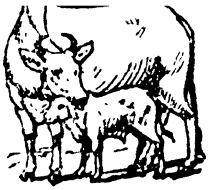

पढ़नेकी ऐसी तैसी ! तुझको रुलाकर मैं राजा भी न बनूंगा माँ !

और निर्मोहिनी माताकी पीठ और छातीसे लिपट, उसको घूमनेकी व्यर्थ कोशिश करता—विपत गाने लगा—

## गाना

*अम्माँ मुझे गोदमें अपनी सुलालें*
*सीने लगाले ! मेरी बला ले !*
*दौलत है क्या चञ्चला ले !...*
*फिर तो न रोऊँगा, गोदमें सोऊँगा*
*आँचल से तेरे हवा ले !...*
*मुझको जिलालें, फूला-फला ले !*
*चूमे मेरे बरमला ले !*
*अम्माँ मुझे गोदमें अपनी सुला ले !...*

मगर वज्र-हृदया मातापर बालकके स्वर्गीय आग्रहका ज़रा भी प्रभाव नहीं पड़ता। वह विपतको बरबस झोपड़ीसे बाहर करना चाहती है।



मैया निकल निगोड़ा ! ऐसा मस्ता अपने कलमुहें बापको दिखा—निकल !

हायरे ! मगर, वह छुट्टी छोकरा, अञ्चल थामकर माँके जानुओंसे लिपट गया, वैसे ही नहीं छूटा जैसे गोश्तसे नाखून। वह पूर्ववत् गाता ही रहा, मुस्कराता, सजल—

*फिर तो न रोऊँगा, गोदमें सोऊँगा*
*चूमे तेरे वरमला ले !*
*अम्मी मुझे—अम्मी—मुझे अम्मी मुझे*
*गोदमें अपनी सुला ले !*






**स्थान**—टूटा मन्दिर

**समय**—सन्ध्याकाल

उधर श्रीराम मन्दिरमें झाड़ू देकर मल्लू राजारामसे प्रार्थना करता है, तीन हज़ार रुपयोंके लिये ! आप मानें या न मानें मगर, मल्लू, जी-जानसे, विश्व-मान्य राजा रामचन्द्रको मानता था और पूरा विश्वास उसको था कि, एक-न-एक दिन भगवान अवश्य उसकी इच्छा-पूर्ति करेंगे।

मल्लू—प्रभो ! पण्डितकी कथा कहते मैंने सुना है कि आप भक्त-वत्सल और भक्तोंका मन रखनेवाले हो।

...आपनेही तो गणिका, गजराज और अजामिलकी इच्छा-पूर्ति की थी ? आपनेही तो 'भीलनी'के खाये फल, गोपिकी कियो सराध—' ?

...फिर, दीनबन्धु ! मुझे तीन हज़ार रुपये जल्द-से-जल्द क्यों नहीं देते ? मैं बहुत ही आरत, परम आतुर हूँ प्रभो !





**स्थान**—दौलतरामका आराम घर

**समय**—सवेरे १० बजे

दौलतराम अपने मुनीमसे उस दिन इस विषय पर गंभीरतासे सलाह कर रहा था कि तिनकापुरवालोंसे रुपये कैसे वसूल किये जायं।

दौलत—मुनीमजी! मैं सारे क़ानून-क़ायदे वग़ैरह-वग़ैरह जानता हूँ।

मुनीम—बिलाशक सेठजी!

दौलत—अगर तिनकापुरवाले किसी तरह भी रुपये देनेको तैयार नहीं हैं, तो, उनपर फ़ौरन दावे ठोंक दो! मैं सारे क़ानून—

मुनीम—मगर, दयालु सेठजी! एक बार उनको यह समझनेका मौक़ा और दीजिये कि दावेका फल कितना कटु होता है।

दौलत—ख़ैर, यही सही! आप ही जाइये और उनको मज़ेमें समझा आइये कि, वे शामतको दावत न दें। मैं बैरि-

# चुम्बन

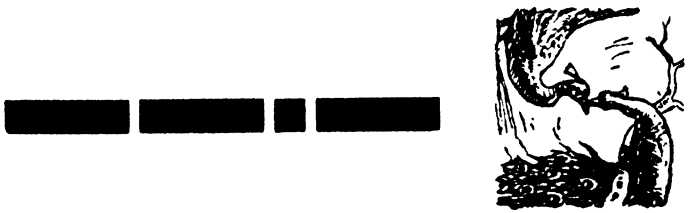




एटर्नीसे बड़ा क़ानूनी, पुलीससे ज़्यादा सख़्त और इम्पीरियल बैंकसे भी बढ़ा-चढ़ा हिसाबी हूँ। पैसेके बारेमें किसीकी भी नहीं सुनता। वह मैं ही हूँ जिसने अपनी सगी और एकलौती बीवीको, ख़र्चीली होनेके कारण—

मुनीम—घरसे निकाल बाहर किया था। बेशक आप पूरे न्यायी हैं। एक बार बीवी त्यागकर जो अखण्ड-ब्रह्मचर्य आप निबाह रहे हैं, आपकी सारी सफलताओंकी कुञ्जी वही है।





स्थान—मल्लाहकी झोंपड़ी

**समय**—तीसरा पहर

विपत झोपड़ीमें ज़ोर-ज़ोरसे, नयी पोथीसे सबक याद कर रहा है और मैना हमारे छायावादियोंके शेफाली फूल-की पीली जड़ें नाखूनोंसे काटकर एकत्र कर रही है।

*विपत*—**क** से कबूतर, **ख** से ख़रगोश, **ग** से गनप—नहीं गुरूजी ! ग से गद्धा—

मैना बालकके पाठपर नाक-भौं चढ़ाती अधिक आवेशसे फूलोंकी जड़ें नोचने लगी, कुछ गुनगुनाती हुई।

*मैना*—**मैं—तो—से—ना—हीं—बो—लूँ—गी**—ऐसा अभागा **बसंत मुहइनको दो**—हे निष्ठुर भगवान !

इसी वक़्त सामनेकी देहाती गलीसे जोलाहा गुज़रा गाता हुआ—

*जोलाहा*—*हम घर सूत तनत हमतानी।*

*विपत*—**च से चमगादिड़**। **छ से छतरी**—क्यों रमज़ान चाचा ! किसके लिये ताना तानते हो ?

*जोलाहा*—महाजन दौलरामके लिये। नहीं तो वह अपने ऋणके लिये हमें बेइज़्ज़त करेगा।




जोलाहा जाता है और इस लिये बलोंके साथ किसान गलीमें नज़र आता है। वह अपने साथीसे कहता है

किसान—"उत्तम खेती" वालीबात, चमरू भाई! अब झूठ है

चमरू—अब तो उत्तम है—"अधम चाकरी"। देखो न हाकिमों को और उत्तम है सूदपर रुपये बाँटना

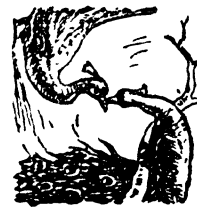
किसान—ज़रूर भैया! धनी महाजन दौलतरामहीको देखो न। इसके बाप गरीबराम ऐसे धनी नहीं थे। मरनेपर उन्होंने इसको केवल ग्यारह सौ रुपये नक़द छोड़ा था—

चमरू—और उन्हीं ग्यारह सौसे सूद-ब्याजका ऐसा रमझला फैला कि. इस वक़्त दौलतराम लखपती है! महाजन है! याने "बापका नाम साग-पात और पूतका नाम परोरा है!"

किसान—जो हो, है दौलतराम हमारा महाजन। दस बरससे उसका ऋण-भार मेरे माथे परसे उतर ही नहीं रहा है

चमरू—सात सालसे मेरी भी सारी कमाई उसी मोटे महाजन के लिये होती है।

किसान भी गलीसे गुज़र गया। अब अहीर भैयाके स्वरपर बिरहा गाता निकला—



# विरहा

अहीर—

*गैया जेनके राम देवैया*

*भइयाँ देला घाम रे*

*बड़े प्रेमसे गोरस दुहके*

*फिर भी गोप उदास रे*

*काहे ? कारन हमसे सुन ल ऊ तो हमरे पास रे*

*कठिन महाजनके गिनियाँ हम कैसे बने सुपास रे*

*दुधवा दौलत घर जात...!*

अहीर कानपर हाथ धर गाता चला गया; मगर विपतके पाठपर प्रभाव छोड़ता...

*विपत*—**ध से धनुष, त से**—"दुधवा दौलत घर जात।"

*मैना*—**पाजी ! पढ़ता है कि, विरहा गाता है।**

*विपत*—**यह दौलतराम कौन है अम्माँ, जिससे सारा गाँव दबता है ?**




मैना—दौलतराम तेरा बाप है, बाप! उसीने जब रुपये दिये तब इस झोपड़ीमें मैं आई और तू भी मरनेको आया!

विपत—मेरा बाप तुम्हारा कौन होगा अम्माँ?

मैना बिगड़कर विपतपर दांत पीसती मारने दौड़ी—
मगर, वह पाजी दूर भागकर हँसने लगा।

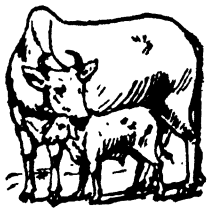
विपत—अम्माँ! पढ़-लिखकर जब मैं कमाने लगूँगा तब तुमको रानी बना दूँगा—रानी!

मैना—निगोड़े! तू झख मारेगा पढ़-लिखकर अपना मुँह फूंकेगा।

इसी वक्त बिलासपुरसे लकड़ी बेच और राजारामसे तीन हज़ारकी अर्ज़ी लगाकर मल्लू आया। बाज़ारसे कुछ सामान भी ख़रीद लाया था।

मल्लू—बिक्रीके रुपये तो दौलतराम सेठको दे दिये सूदमें। बचे पैसोंसे अपने राजारामकी पूजा की और ये चीज़ें ख़रीदी हैं—(विपतसे) तू पढ़! मूँ क्या देखता है?

विपत—आँ! ई! ई!—पढ़नेसे मुझे भूख लगती है। क से कबूतर—



कबूतरपर मल्लू गोरमें पड़ गया। उसको वह तुक जंचा नहीं।

मल्लू —क्या कहा ? क से कबूतर ? अरे भक्त। क से "कलुआ"—

बेचारा विपत इस नये "ट्यूशन" पर घबरा उठा

विपत —किताबमें कबूतर ही है बाबा !

मल्लू —सर है तेरा ! मेरी बात मान, कलके लौंडे—! अक्लके मैदानमें भी मैं तेरा बाप हूं—पढ़ ! क से कलुआ।

विपत क से कलुआ, ख से खलुआ, ग से गलुआ।

अब मैना तिनगी। उसके मनमें भी अपने बेटको पढ़ाने-की इच्छा हुई। उसने सोचा, दस महीने जिसने इस विपतको पेटमें पाला है, वही, पढ़ानेकी असिल अधि-कारिणी हो सकती है, न कि, यह बेकाम मद। मगर पहले उसने पतिको ही हतप्रभ करना चाहा--

मैना—ए कलुआके बाप ! चूड़ियाँ मेरी भूल गया ?

मल्लू —आज अधिक पैसे नहीं थे मैना !



मैना.—और उस दौलतरामको देनेके लिये रुपये थे ? मेरे ही लिये तेरी कमाईमें महामाई पैठ गई ? आग लग गई ? वह दौलत कौन है—तेरी जोरू ? मेरा खसम ?

बेचारा मल्लू उदास हो गया, दीनवत्। क्या बोले—कुछ देरतक तो सोच ही न सका। वह, कटु होनेपर भी, मैनाको प्यार करता था।

मल्लू.—वह महाजन है, और मैं कर्जदार मैना। बिगड़ो मत। सूदके रुपये न पाता तो वह मुझे मारता-बेइज्जत करता।

मैना.—मुझे कंगन, बाजू, बरेखी, हुमेल, टीक, पहुंची, बिछिया, हार—

मल्लू.—सब देंगे—मैना! राजाराम मेरे सब कुछ दे सकते हैं।

विपत.—क से कलुआ, ख से खलुआ—

मैना.—क्या ? निगोड़े! क से कलुआ नहीं—मलुआ, मलुआ।

विपत अब बाहरी दस्तन्दाजी बर्दाश्त न कर सका—

विपत.—माँ! तुम पढ़ना-लिखना नहीं जानतीं—तुम चुप रहो!

झपटकर विपतके कानोंको जोरसे मैनाने उमेठा—

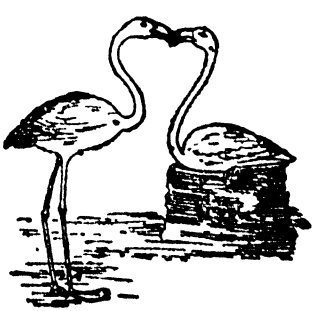


मैना और यह ! यह भिखारी । नामर्द । तेरा मुर्दा बाप—पढ़ा-लिखा है ? पाजी ! मैं तेरे बापसे भी ज़्यादा पढ़ी-लिखी हूं—चल, पढ़ ! क से मलुआ ।

लाचार, दांत निकालकर, बेचारा बालक आंखोंमें आंसू भर पढ़ने लगा—

तोता क से मलुआ, क से मलुआ

और मलुआ औरतकी डिठाईपर हँसता रहा ।






**स्थान**—खलिहान

**समय**—तीसरा पहर

उस दिन तिनकापुरके ग़रीब किसान और मज़दूर खलिहान में बैठकर अच्छी फ़स्ल और हरे-भरे खलिहानको आँखोंहीसे सराह रहे थे—।

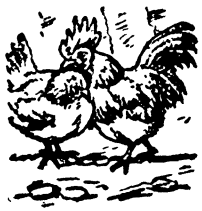
*जोखाहा*—पण्डित महाराज! बड़ी अच्छी फ़स्ल इस साल हुई है...

*मोची*—बड़े मियाँ! हल जोतते-जोतते हथेलियोंमें घट्ठे पत्थरकी तरह पैदा हो गये—तब कहीं, ऐसी फ़स्ल हुई है।

*अहीर*—जो हो। मगर, अपन-तुपन तो एक बार ही ज्वारकी रोटी और घासकी भाजी पा सकेंगे।

*पण्डित*—बरसमें छ महीने उपवास करने पर भी हम साधू नहीं, किसान है!!

*धुनियाँ*—फ़स्लकी जगह हमारे खेतोंमें सोना ही क्यों न बरस जाय—आधा ज़मींदारका होगा, बाक़ी महाजन—दौलतरामका...



पण्डित—हम पहले "दौलत" और फिर "राम" को जानते है।

मल्लू कभी नहीं सरकार! पण्डित महाराज आपका दास तो पहले अपने "राजाराम" ही को जानता है। जय राजा रामचन्द्रकी!

मल्लू आधा नाचता, परम विश्वासमें श्रीराममन्दिरकी ओर चला गया। पण्डितजी गंभीर नज़र आये। मगर, जोलाहा मल्लूकी मूखता पर अपनी राय दिये बगैर न रह सका—

जोलाहा—बहसी है। बेवकूफ़ दिनोंरात उस टूटे मन्दिरमें क्या जाने क्या बड़बड़ाया करता है।

पण्डित—वह राजारामसे धन माँगता है। पागल जानता नहीं कि, शास्त्रोंके मतसे भी, विष्णु, गंगा और अनेक देवी-देवताओंकी महिमा—इस कराल कलिकालमें—सो गई है—सो!

सब—हाय रे ज़माना!




इसी वक्त उक्त पंचायतका ध्यान ग्रामके युवकों और कुमारियोंसे मुखरित खलिहानके दूसरे किनारेकी ओर गया... ।

फ़स्लकी विपुलतासे मस्त वे नाच और देहाती गीत गा रहे थे—

## गाना

*हम क्या जानें सोदा क्या है*

*सस्ता क्या है महँगा क्या है*

*कर खून-पसीना पीते हैं,*

*हम सबसे गये या बीते हैं*

*हमको ज़मीन या आसमान जिस रङ्ग जिलाये जीते हैं*

*किस्मतका गिला अपना क्या है—*

*हम उपजाते हैं अन्न हरे,*

*जिनसे जग पुष्ट, प्रसन्न हरे*



जिनको सर्वस लेकर हमको—शहरी सभ्यन विपन्न करे
तिनका भी हरे दाना क्या है—

पर, जब वसन्त बरसे बहार,
हम हो उठते हैं बेक़रार...
ज़िन्दा ज़मीनपर कुछ रचनेको व्याकुल बन, खाकर उधार...
हमको बोना-लुनना क्या है—





**स्थान**—मल्लूकी झोंपड़ी

**समय**—सवेरा

तिनकापुरकी बात-बातमें तिनकनेवाली मैना एक दिन अभावोंसे ऊबकर अपने रामाश्रित पतिपर उबल पड़ी—

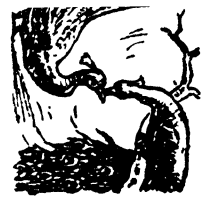
*मैना*—मैं ऊब गई हूं अब, इस फटीचर घर और कुटीचर नामर्दसे—

मगर, मल्लू साधुवत् अथवा मूर्खवत् मुस्कराताही रहा।

*मल्लू*—होगी, मैना! एक दिन अवश्य मेरे राजारामकी कृपा होगी।

*मैना*—चूल्हे-भाड़में जायँ ऐसे राजाराम! जब हम संसारकी मामूली-से-मामूली चीज़के लिये सिहक-सिहककर मर जायँगे, तब, होगी तेरे कठोर राजारामकी कृपा!

इसी वक्त दरवाजे, तोंदपर तुपट्टा कसे, दौलतराम दाखिल हुआ। मैनाको देख वह चमक पड़ा—इस तरह जिसका परिणाम अन्तमें गंभीर होकर ही रहता है!



दौलत—मल्लू ! बिना मेरा क़र्ज़ अदा किये घरमें बैठ बीवीसे गुलछर्रे उड़ानेमें तुझे लज्जा नहीं आती।

मल्लूके चेहरेमें अपने अभाव या अभाग्यके लिये लज्जा स्पष्ट थी, मगर स्वार्थका चश्मा चढ़ाये दौलतराम देख न सका उस ग़रीबकी मर्म-व्यथा।

मल्लू—लज्जा बड़े आदमियोंकी शोभा है सरकार ! ग़रीबोंके पास तो वह फटकती भी नहीं !

दौलत—सारे क़ानून, मैं जानता हूं, दफ़ा १०७में चोरोंको सज़ा दी जाती है—दफ़ा ११०में छिछोरोंको और ताज़ीरात हिन्दकी दफ़ा ५०६में उनको सज़ा दी जाती है, जो दौलतरामके रुपये एक युग बीत जानेपर भी अदा नहीं करते !

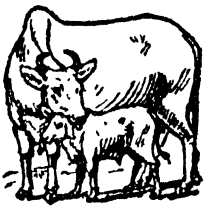
मल्लू—सरकार ! ज्योंही राजारामने दिया त्योंही—

दौलत—चुप, राजारामके भतीजे ! रुपये पैसेके बीचमें राजारामका नाम सपनेमें भी याद रख !—मैं नहीं सुनना चाहता—मैं सारे क़ानून...

मल्लू—अन्नदाता ! थोड़ा धीरज और। राजाराम ज़रूर देंगे।



दौलत—चुप, राजारामके भतीजे! रुपये पैसेके बीचमें राजा-
रामका नाम सपनेमें भी—याद रख!—मैं नहीं सुनना
चाहता--मैं सारे क़ानून...



दौलत—ठीक है। तेरे राजाराम देंगे और मैं पाऊँगा। मगर, याद रख! मैं सारे क़ानून जानता हूँ। एक दिन रुपयोंके लिये तेरे बेटेको पकड़ ले जाऊँगा—औरतको नीलाम पर चढ़ा दूँगा। मैं सारे क़ानून, क़ायदे, अदालत—

बड़बड़ाता, धमकाता दौलतराम दूसरे रिनियोंकी झोपड़ीकी ओर झपटा। मल्लूके सरसे गोया हत्या दूर हुई। उसने एक ठण्डी साँस ली। मगर मैना—उफ़ औरत! बोली—

मैना—अब मेरा निबाह तेरे साथ हो नहीं सकता। मेरी माँ! जानें किस दिन इस पापीके क़र्ज़में महाजन मुझे अपनी जोरू बना ले—मेरी माँ!

मल्लू—घबराओ नहीं—मैना, मेरी रानी! ये दिन भी कट जायँगे। अब जग में प्रभू श्रीराजारामसे जाकर कह दूँ...

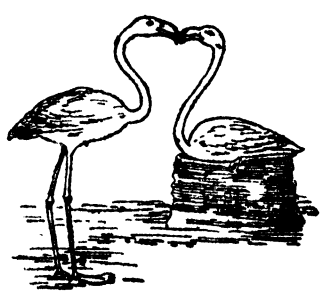
मल्लू फिर टूटे मन्दिर की ओर परम विश्वाससे झपटा। राजारामको यह बतलाने कि अब धनाभावसे उनके सेवक की कैसी दुर्दशा हो रही है।

मैना—कमरमें न बूता—राम देना पूता! हाय मेरा करम! हाय मेरी किस्मत!!

# चुम्बन

टूटे मन्दिरमें पहुंच परम आशावान मल्लू प्रार्थना करने लगा—

मल्लू—राजाराम! अब ज़रा भी देर न करो! नहीं तो भगवानजी! मेरी लुटिया डूब जायगी। प्रभो! अब मेरी औरत भी—रुपयेके नामपर—मुझको छोड़ना चाहती है। महाजन मेरा नाश करनेपर तुला हुआ है! दोहाई राजारामकी! दुख हरो जानकी नाथ, शरणमें तेरी!





**स्थान**—मल्लूकी झोंपड़ीके सामने

**समय**—दो पहर

मल्लूकी झोंपड़ीके सामनेकी गलीमें तिनकापुरकी अनेक मैली-कुचैली, दरिद्रा स्त्रियां उस वक्त अपने बच्चोंकी तलाशमें दीवानी-सी दौड़ रही थीं।

एक—मोहना।

दो—रैना! बचधा रे!

मगर, इस कोलाहलको पतिसे तिनकी 'तिनकापुरवाली' मैना बर्दाश्त न कर सकी।

मैना—क्या हुआ? हुआ क्या राँड़ो! दिन दहाड़े मेरे दरवाजे पर सियालिनों-सी दहाड़-कराह क्यों रही हो?

तीन—महाजन दौलतराम आज ग़रीबोंके बच्चोंको पकड़ रहा है—

चार—आवे तो दौलतराम महाजन मेरे सामने! मैं उसका मुंह नोंच लूं, अगर वह मेरे बेटेपर नज़र लगावे तो—भैया! सोहना!!

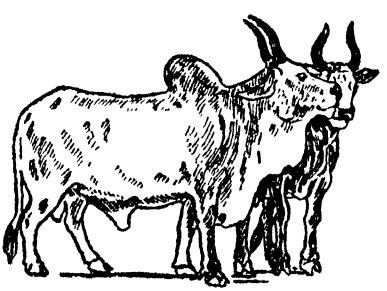



एक—( मेनासे ) तुम्हारा बेटा कहाँ है बहन ! बचाओ उसको !

मैना—वह मर गया ! चूल्हेमें डालकर मैंने अपने बेटेको भून दिया—अब हुई तुम्हारी छाती ठंडी ?

दो—यह औरत ग़ुस्सेको तो नाकपर लिये फिरती है ।

मैना—चल ! कानके पर्दे न फाड़ ।





**स्थान**—दौलतरामका घर

**समय**—तीसरा पहर

उक्त घटनाके एक सप्ताह बाद एक दिन दौलत राम अपने नौकर महंगूको हिदायतें दे रहा था कि—

*दौलत*—महँगू ! बेटे, आज दो-चार मेहमान आनेवाले हैं।

महँगू अव्वल दर्जेका समझदार था। उसने झुटते ही निवेदन किया—

*महँगू*—तो, सदर फाटक पर 'नाट-एट-होम' का पटरा लगा दूँ ?

*दौलत*—ख़ूब समझा। बेटे, मैं सारे क़ानून—क़ायदे, डिग्री—वसूली जानता हूँ। मगर, आनेवाले लोग बड़े-बड़े ज़मीन्दार हैं। वे क़र्ज़ चाहते हैं, जिसमें मुझे, एक सौ पर पाँच सौ का लाभ होगा।

*महँगू*—फिर, मुझे क्या हुक्म है ?

*दौलत*—अभी कुछ भी नहीं; मगर, मेहमानोंके आनेपर सावधानीसे सब काम करना—किफ़ायतसे। अगर मैं कहूँ कि शरबत या पानी ला, तो क्या लायेगा ?



महँगू—पानी...!

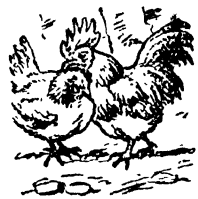
दौलत—वाह पट्ठे ! भारी समझदार है। मैं तुझको प्रोफ़ेसर बनाता हूं। मैं सारे क़ानून-क़ायदोंको समझता हूं। आजकल अगर बजानिये और मदारी और चिड़ीमारतक,अपने-अपने फ़नके प्रोफ़ेसर कहे जाते हैं, तब तुझे भी क्यों नहीं नौकरोंका प्रोफ़ेसर बना दिया जाय ? क्यों नहीं ?? जब कि, मैं सारे क़ानून क़ायदे अदालत और बंपुलिसको भी चाटे बैठा हूँ। महँगुआ !

महँगू—हुज़ूर !

दौलत—मैं सारे क़ानूनदाँओंकी दुम हूँ। मैं तुझपर निहायत खुश हूँ। महँगू ! जी चाहता है कि पागल होकर गाऊं "तोके लेके सवँरिया निकल चलबै।" ध्यान रहे ! मेहमानोंकी ख़ातिरदारीमें रंग जमे और...

महँगू—...हर्रे लगे न फिटकरी, माल हो चोखा—क्यों हुज़ूर !

दौलत—वाह पट्ठे, वाह पट्ठे ! महँगुआ ! तेरे गुणोंसे मैं तुझपर पुत्रकी तरह रीझ रहा हूँ। जा तेरी तरक़्क़ी की गई—



आजसे दीवानख़ानेमें भी तू ही झाड़ू दिया कर। देख! सारे क़ानून मैं घोख चुका हूँ घोख!

*महँगू*—बापरे! यह कैसी तरक़्क़ी हो दादा!

*दौलत*—बेटे! चूक गया न! अरे तू कनिष्टबलसे जमादार—बग़ीचेके बोहारकसे दीवानख़ानेका झाड़ूबरदार हो गया। देख तो, कौन आया? आइये! आइये!! अभी आपकीही चर्चा थी—आनन्द मङ्गल—मैं, हाँ, आज मङ्गलवार ज़रूर है। मैं क़ानूनोंको चाट सकता हूँ, महँगुआ!

*महँगू*—हुज़ूर।

*दौलत*—ज़रा शर्बत-पानीसे मेहमानोंका ख़ातिर तो कर!

*महँगू*—क्या होना सरकार?

*दौलत*—घरमें है क्या नहीं—सब कुछ है। क़ायदे क़ानूनकी किताबोंसे लेकर हीरेकी अँगूठी तक—जा! शरबत नहीं, तो ठण्डा पानी सही, मगर फ़ौरन ला।

*ज़मिन्दार १*—मैं, दौलतरामजी! बीस हज़ार नक़द चाहता हूँ। ज़मानत या बेचीके लिये ज़मीन है मेरे पास।





ज़मीन्दार १—और मैं नव्वाबी ज़मानेके जवाहरातोंकी पिटारी लेकर आया हूँ।

इसी वक्त महँगूको चाँदीके गिलासमें बढ़िया शबत लाते देख दौलतरामके काटो तो खून नहीं।

दौलत—अबे! यह क्या उठा लाया?

मगर, दुर्भाग्यसे दौलतरामके मेहमान प्यासे थे। उन्होंने गिलास नौकरसे प्रायः झपट लिया।

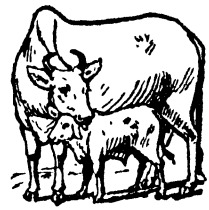
ज़मीन्दार १—कुछ भी सही!

दौलत—महाशयजी! यह नालायक नौकर शर्बतें-जुलाब उठा लाया। बदहज़मीकी दवा। अबे मूँ क्या देखता है—जा! कुछ पान वगैरह नहीं तो, लालिया ही ला।

महँगू—क्या होना सरकार!

दौलत—सुनहले मगही पान या मामूली सुपारियाँ, कुछ ले तो आ! जल्द रे! (महँगू भागा।)

ज़मीन्दार १—मेरी आधी ज़मीन्दारी भोग-बन्धक रख लीजिये और मुझको बीस हज़ार रुपये तुरन्त दीजिये।



बड़ा अच्छा और सस्ता सौदा था। मार लुशोंके दौलत राम मन-ही-मन मगन हो बोला—,

*दौलत* — अपने भाइयों और बुजुर्गोंकी ख़िदमतमें मैं हर तरहसे, हर वक्त तैयार—अरे, क्या उठा लाया ?

*ज़मीन्दार २* —वाह पान ! ये तो मेरी जान हैं जान ! महँगुआ पुनः चूक गया था। सस्ती सुपारियाँ ला, घुनहले पान—सा भी पचीसों बना लाया ! मगर, युक्ति-से, पानोंको भी धृतराज दौलतरामने बचाना चाहा।

*दौलत* —अर्जी जनाब ! ये तो जापानके बने काग़ज़ी पान हैं। इनमें रंग नहीं, रस नहीं, कोर्कीनका केवल किमाम है— इन्हें खानेसे घोर नशा—

*ज़मीन्दार १* —वाह ! नशेका नाम सुन मेरे मुँहमें पानी आ गया। नशेहीके लिये तो मैं ऋण लेने आया हूँ। सेठ, कुछ छनाओ पहले।

*ज़मीन्दार २* — दारू ! शराब ! छने।

लाचार मेहमानोंका मन रखनेके लिये, बेमनसे, दौलत-रामने नालायक़ महँगकी ओर ताक कर कहा—




दौलत—महंगुआ—होशियार! दीवानापन दिखावेगा तो, मैं भी सारे क़ानून-क़ायदे चाटे बैठा हूँ—याद रहे! जा, जल्द कुछ ले आ—सुन! क्या लायेगा?

महँगू—आपको होना क्या?

दौलत—अरे पागल, जैपुरी अंगूरी ला—या क़ाबुली तम्बाकू—कुछ नशा ला! जनाब! विश्वास मानिये, मैं भारी क़ानूनदाँ हूँ—। मैं इस नौकरसे योग्यतामें इञ्चों—याद रहे!—बड़ा हूँ। अबे गधे! क्या उठा लाया? सर्वनाश!

ज़मीन्दार १—लाओ! लाओ!

*मेरी जानी शराब, लासानी शराब!*
*आजा तुझे डालूँ पेटमें!*

सरके बाल नोचता, नथने विकट फुलाता दौलत अपने मूर्ख नौकर महंगुआपर निहायत नाराज़ हो उसपर झपटता है—

दौलत—रख—रख दे सुराही! फौरन मेरे सामनेसे भाग!



भाग ! भाग ! पार्जी जानता नहीं कि मैं सारे क़ानून-क़ायदे जानता हूं ...

अब तक तो दोनों ज़मीन्दार आधी छराछी सरा छरक गये थे। यह अनुभव कर दौलतराम मक्खीचूस हाथ और दिल मसलकर रह गया। फिर भी, उसके उद्-गार दूसरे रूपमें सावेश निकले।

दौलत—देखिये जनाब ! मैं सारे क़ानून-क़ायदे वग़ैरह-वग़ैरह-का हाफ़िज़ हूँ—आचार्य ! आप लोग अगर क़र्ज़ मुझसे लेना चाहते हैं, तो लें—बेशक। मैं सूद भी कुछ ज़्यादा, नहीं—फी सैकड़ा एकसठ लेता हूँ—महज़...

ज़मीन्दार १—फक़त—मात्र—वाह एक सठजी !

ज़मीन्दार २—मैं—रहम कीजिये—मैं इस तंग हालीमें इतना ज़्यादा सूद नहीं दे सकता। मैं दे सकता हूं—बस—माफ कीजिये—फ़ी सैकड़ा पैंसठ !

याने अब ज़मीन्दारोंपर दुस्तरे-रज ने अपना रंग जमा लिया था— तेज़ जंपुरी शराब देखते ही देखते उन्हें हवामें ले उड़ी।



ज़मीन्दार १—और पैसठसे एकसठ उतना ही बड़ा है, जितना
कुल्हड़से मटका—या चनेसे दालमोठ...
इसी समय बाहरसे खिलखिलाता, उछलता-कूदता,
लायक़ नौकर महँगू आया—वह पाजी मस्तीसे गुन
गुनाता गा भी रहा था—

महँगू—सैंया भये कोतवाल
अब डर काहेका—मोरे० !

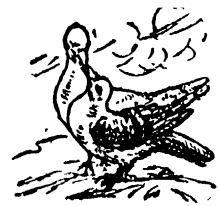
दौलत—अबे चुप ! पाजी, मैं सारे क़ानून-क़ायदे...

महँगू—सैंया भये कोतवाल !
अब डर काहेका—मोर !

ज़मीन्दार १—वाह ! वाह ! छोकरा सुरीला है ।

महँगू—इनाम ! इनाम मुझे मिले सरकार ! बहुत बड़ी ख़ुश-
ख़बरी लाया हूं ।

ज़मीन्दार १—वाह बेटे ! किसके लिये ख़ुशीकी ख़बर लाया है ।
अगर वह मेरे लिये है, तो, सुन ! मैं महज़ एक ख़बर
से ख़ुश हो सकता हूँ और वह है 'डब्बीकी लाटरी'—



*ज़मींदार २*—स्वयं मैं, न तो डब्बीकी लाटरीमें लाखों रुपये जीतनेकी ख़बरसे ख़ुश हो सकता हूं, और न स्वर्ग जानेका पासपोर्ट "फ़्री" पानेकी ख़बरसे। अरे छोकरे! मैं तेरा मूं मीठा करूँ, अगर तू मुझे मेरे पड़ोसीके मरने या ग़ारत होनेकी ख़बर दे!—दे! दे! मैं अपने पड़ोसीका सर्वनाश चाहता हूं...!

*दौलत*—और सुन, पट्ठे! मैं सारे क़ायदे याने दफ़ा १४४ से ४२० तक जानता हूँ। अगर तू मुझे ख़ुश करना चाहे, तो यह समाचार दे कि, तिनकापुरके पाजी, "बने" बदमाश-लुटेरे, मेरे रुपये लेकर आ गये।

*महंगू*—आ गये! आ गये! सारे तिनकापुरवाले! सभी सरपर एक-एक बन्द टोकरा उठाये आ रहे हैं। दूरहीसे देख मैं हुज़ूरसे इनाम लेने दौड़ा—

*दौलत*—मिलेगा पट्ठे! इनाममें तुझे ताज़ियाना मिलेगा—

*महँगू*—ताज़ियाना क्या हो बाप?




*ज़मीन्दार १*—हण्टर ! चाबुक ! वाह लड़के वाह ! ख़ूब इनाम पाया—वाह !

*दौलत*—अबे नासमझ, समझले ! ताज़ियाना माने ताज़े-अनार । समझा ! मैं सारे क़ानून चाटे बैठा हूँ ।

*ज़मीन्दार २*—ताज़ियाना—ताज़ियाना—गाओ कोई गाना !

*ज़मीन्दार १*—खाना !

*दौलत*—खानेसे गाना अच्छा है उतना ही, जितनी बरफ़से हवा । अजी जनाब मैं सारे क़ानूनोंकी चटनी हूँ । चटनी भी नौ रतन !

*ज़मीन्दार २*—चटनी मुझे पसन्द है, गाना मुझे पसन्द ।

*ज़मीन्दार १*—जाना मुझे पसन्द है, खाना मुझे पसन्द ।

*ज़मीन्दार २*—नादान, भूख लगने पर दाना मुझे पसन्द ।

*जमीन्दार १*—बेगाना मैं भला हूँ, न गाना मुझे पसन्द ।

*दौलत*—हर्गिज़ न हाथ पावँ हिलाना मुझे पसन्द ।
देनेके लिये बुत्ता—बहाना मुझे पसन्द ।



ग़ैरोंका जो मिले वही खाना मुझे पसन्द,
अपना नक़द, कभी न भुनाना मुझे पसन्द।
मैं मेज़बाँ हूँ सख़्त मैं क़ानूनदाँ भी हूँ,
बस बात मान लीजिये! गाना मुझे पसन्द।

महँगुआको दौलतराम सेठने मणेकी तुकबन्दीमें ललकारा। मगर, अब वे पद्य नहीं पूरे गद्यकार थे—

दौलत—अबे महँगुआ! क्या तू नहीं गा सकता? मैं कहता हूँ, मैं सारे क़ानून जानता हूं। तू क्यों नहीं गा सकता?

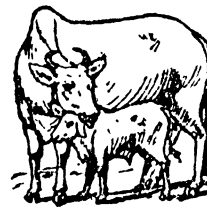
महँगू—हो सरकार! मैं जब मस्त होकर गानेपर कमर कस लेता हूँ; तब—क़सम शारदाकी!—कुत्ते मेरे साथ सुर भरते हैं, कुत्ते! देखिये। अँ—अँ—अ—अ—सा नि प—ध—ध—ध—धा—

## ग़ज़ल

*उसने कहा—तू कौन है?*
*मैंने कहा—शैदा तेरा...!*




उसने कहा—मतलब है क्या ?
मैंने कहा—सीदा तेरा...!
उसने कहा क्या नाम है...
और किस नशेसे काम है ?
मैंने कहा—मैं मस्त हूँ
और हूं मैं दीवाना तेरा..!
उसने कहा—दिल ले गया...
मैंने कहा—हाँ, ले गया...!
उसने कहा—वह कौन है ?
मैंने कहा—ग़मज़ा तेरा...!
उसने कहा—हट, दूर हो !
मैंने कहा—हर्गिज़ नहीं...!!
उसने कहा—दावा है क्या ?
मैंने कहा—चन्दा तेरा !!!



ज़मीन्दार तो महंगुआकी ग़ज़ल पर झूम उठे। मानो क़व्वालीके शौक़ीन ही थे।

ज़मीन्दार २—निसार! निसार!! सिरसे पैरतक निसार मान लेनेको दिल चाहता है। ले पट्ठे!

नशेमें, बन्धक रखनेको लाये गहने-जवाहरात महंगुआ को वे सहर्ष देने लगे—

ज़मीन्दार १—ले पट्ठे! तू भी क्या गाता है कि वाह!

नौकरके भाग्यको चमकते देख दौलतरामके मुंहमें पानी आ गया! क्षण भर गम्भीरतासे सोच महंगुआ हीके शब्दोंमें, पागल ज़मीन्दारोंके जवाहरात लूटनेका निश्चय दौलतरामने तुरन्त किया। पहले प्रतिद्वन्दी महंगुआको उन्होंने मैदानसे दूर किया—

दौलत—चल, बाहर बैठ—! बाप न मारी मेंडकी बेटा तीरन्दाज़—! मैं बहुत बड़ा तजरबेकार क़ानूनी हूं, हाँ। सुनिये। अब मुद्दे पर आइये! असिल बात यह है कि गान-विद्यामें महंगुआका मैं गर्भ-गुरू हूं—मुलाहज़ा फ़रमाइये—




## ग़ज़ल

उसने कहा—तू कौन है ?

मैंने कहा—दादा तेरा !

उसने कहा—क्या सड़ गया...?

मैंने कहा—भेजा तेरा !

उसने कहा—ख़ामोश कर !

मैंने कहा—नाला-यक़ हो...

उसने कहा—डूबेगा क्या ?

मैंने कहा—बेड़ा तेरा...!

उसने कहा—परहेज़ कर !

मैंने कहा—महेज़ धर !

उसने कहा—फ़िज़ूल है...

मैंने कहा—बकना तेरा !!



इसी वक़्त तिनकापुरवाले बड़ी-बड़ी बन्द टोकरियां सरपर उठाये एक-के-बाद-दीगर दौलतरामके दीवानख़ानेमें दाख़िल हुए। उनके आते ही दौलतरामने गाना बन्द कर दिया। बरबस, गम्भीर बन गया। लगा ऊंटने—

*दौलत*—मैं—! मैं तिनकापुरका राजा हूं। ये सभी मेरी रिआया हैं! यह रूपा मोची—! यह सधवा अहीर—! यह पण्डितराज—ओह! आप सभी क्या लाये हैं? हा हा हा हा—मैं!

टोकरे सरसे उतारते ग्रामवासी ग़रीब गम्भीर नज़र आये। न जाने क्यों उनके आते ही दोनों मदान्ध ज़मीन्दार भी चुप-से हो रहे!

*एक देहाती*—दोहाई सेठजी! धर्मावतार आपका बेटा जीये! मुझे जेलख़ानेसे बचाइये—! विश्वास कीजिये। मेरे पास भोजन और तनके लिये भी धन नहीं है!

*दूसरा*—कफ़नके लिये भी कुछ नहीं है सरकार!

*दौलत*—बदमाशो! मैं सारे क़ानून जानता हूं—! रुपये नहीं हैं? नहीं हैं रुपये, तो क्या किताबमें क़ानून और क़ानून




में दफ़ायें भी नहीं है? तुम सबको जेलकी हवा न खिलाऊँ तो--

देहाती दोहाई है! महाजन राजा! हम तुम्हारी शरण हैं। हमारी रक्षा करो—इनको सँभालो!

बन्द टोकरोंकी तरफ़ इशारा कर।

देहाती--इनकी रक्षा करो या मार डालो—जैसी मर्ज़ी हुज़ूरकी।

गण--इनके भोजनका भार, अब, हमसे नहीं संभलता है। तिसपर आपके भयानक दावे!

इसी वक्त सारे टोकरे फूटकर खुल पड़े—और वाह! उनके भीतरसे एक-ब-एक अनेक देहाती बच्चे बाहर निकले—। वे—पागल, भीम और भयानक दौलतराम-को देख—फूलोंकी तरह निर्भय हंसने लगे।

बालक--कैसा मोटा!

बालक--कैसा खोटा!

बालक--एक बकोटा!

बालक--मारो सोटा!



बालक—दिलका छोटा !

बालक—कैसा मोटा ! भैसा मोटा !!

दौलतरामने तो आवेशमें अब तक बेचारे बच्चोंको शायद मार ही डाला होता; मगर अलमस्त ज़मीन्दारोंने उसको मजे में क़ाबूमें कर रखा था। उस दृश्यमें बच्चोंका खिलना, मदहोश ज़मीन्दारोंको निहायत भाया। बच्चे मोटकमल महाजन दौलतरामको उछल-उछलकर चिढ़ाते रहे—

बालक—हा हा हा हा ! हू हू हू हू !

## गाना

( सारंग )

ओ दीवाने !

दीवानी तेरि मतिया... ओ दीवाने !

बोलत टेढ़, ठगत सूधनको—

टूक न हो तेरी छतिया...ओ दीवाने !



*जो दुखियारे जनको मारे—*

*सो, रोवे दिन रतिया...ओ दीवाने !*

बच्चे, तिनकापुरके ग़रीब और—लो !—दोनों ज़मी-न्दार भी अपना मालोज़र सँभाल, दौलतरामको मंहगू-के साथ रोनेके लिये छोड़, चले गये ! और अब, एकान्त पा, दौलतराम सेठका रक्त मंहगू 'दि सरवंट' पर खौला—

*दौलत*—क्यों बे नमकहराम ! तूने उन्हें भीतर क्यों आने दिया ?

*हण्टरसे मज़ाक़िया मारना चाहता है।*

*महँगू*—यह क्या रे बाप !

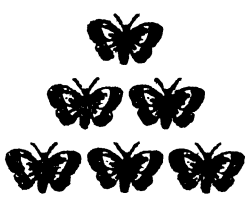
*दौलत*—ताज़ियाना—इनाम !

*महँगू*—हे राम ! हे राम !!

मंहगुआ दो-चार चाबुकें चखकर, फोंफर पा, सनक भागा। मगर, अभी अपमानित दौलतरामका ग़ुस्सा शान्त न हो सका। उसने तावसे चमक, अनेक बार, पृथ्वीपर चाबुक़ फटकारा। फिर—झख मारनेका नाट्य कर वह बोला—



दौलत—तिनका—तिनकापुरको मैं बवण्डरकी तरह—और ला के अण्डर—उड़ा दूँगा उड़ा! ठहरो—पाजियो! मैं सारे क़ायदे-क़ानूनोंका नाना हूं—नाना!





*सिया राम बोल ! मनुवाँ*

*सियाराम बोल !*

*प्यारे, मनमें अमृत घोल !!*

—( पृष्ठ ७२ )





**स्थान**—मल्लूकी झोपड़ी

**समय**—सवेरा

उस दिन फिर, सवेरे उठते ही मल्लू लकड़हारेने अनुभव किया कि राम मन्दिरमें पहुंचनेमें उसको देर हो गई। आनन-फाननमें बिस्तरसे उचक, कुल्हाड़ी उठा, वह भागा—गाता हुआ—



## गीत

*सिया राम बोल ! मनुवा*

*सियाराम बोल...!*

*प्यारे, मनमें अमृत घोल !!*

*श्री राम नाम रस पी ले...*

*ओ, मरने वाले ! जी ले...*

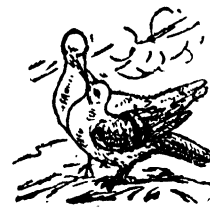
*कर ढीले रे भव-बन्धन, तेरा झूठा पँचरंग चोल !!*

*मनुवा सियाराम बोल !*

मल्लूके बाहर जाते ही मैना भी जगी। दूरसे पतिकी मन्द रागिनी सुन वह समझ गयी कि वह, कहाँ जा रहा है।

मैना—गया अपने बापके मन्दिरमें मरने। हे राम! क्या मेरे लिये और कोई मर्द नहीं था...?

मैना चीख उठी जिससे बालक बिपत आग खड़ा हुआ—कौरन माँके पास झपटा आ, प्यारसे लिपट वह बोला—



विपत —तू उदास क्यों है अम्माँ—अम्माँ! बोल!

मगर मैनापर वात्सल्य भाव उदय ही नहीं हुआ था।

निगोड़ीने झटककर बालकको दूर कर दिया—

मैना—भाग, तुझे काली खाय!

विपत—अम्माँ, आज मुझे गोदमें तालाबके किनारे ले चल—हाँ, चलना होगा।

मैना—तेरा मुर्दा निकले! गोदमें चलेगा। मारूँगी ऐसा हत्थड़ कि, तेरी छाती टूट जायगी—भाग! हाय रे! मेरा बाप कलकत्ताके साहबका खानसामा, और मैं मरूँ भूखों इस बन्दरके साथ—हे मेरे राम!

विपत प्यारसे माँकी गोदमें छिपना चाहता है—मैना तिरस्कारसे चिकोटकर, मारकर, उसे अलग करती है।

विपत—ना—आज मैं न मानूँगा। मार! मार ही डाल माँ! मगर, आज तो मैं तेरी गोदीमें बैठकर, काँधेपर चढ़कर—तालाब नहाने चलूँगा।

मैना—कहाँसे यह नरक मेरी कोखसे पैदा हो गया! क्या मैं बाँझ नहीं रह सकती थी—हे राम! तुम्हारा मुँह जले! ऐसा जन्म तुमने क्यों दिया?




वह कपड़े सँभाल, पात्र ले तालाबतट जानेकी तैयारी करने लगी, मगर ; विपतने उसका पीछा न छोड़ा—

*विपत*—मैं मानूँगा नहीं। ज़रूर तेरी गोदीमें—देख! कल तूने वादा किया था—देख! देख!

आख़िर खीझकर मैनाने पहले तो बेटेको ख़ूब मारा, फिर कपड़ेसे उसके हाथ-पाँव बाँध, बेचारेको बिलखता छोड़, वह तालाब नहाने चली!

*मैना*—आज मैं सारा दिन उधर ही रहूँगी। भोर उठते ही बर राम-मन्दिर चला गया है तो, राम ही उसके लिये पूये पकावेंगे। मैं किसी मर्दुयेके बापकी बाँदी नहीं।

वह चली गयी। कुछ देरतक तो हताशमन विपत रोता रहा, फिर उसे कुछ सूझी। उसने दूरपर अपने बापको बिना डगडंकी एक कुल्हाड़ी पड़ी देखी। वह लुढ़क कर कुल्हाड़ीके पास जा रहा और घुटनोंमें दबाकर उसकी धारसे, काफ़ी उछल कर उसने अपने बन्धन काटे। मुक्त होते ही वह भागा अपनी माँकी तरफ़—तालाबकी ओर!





**स्थान**—ताड़ीका अड्डा

**समय**—सवेरे ६ बजे

और वह तालाब तिनकापुरके पश्चिम तरफ था। उससे थोड़ी ही दूरपर तो ताड़ीके ठेकेदारकी झोंपड़ी भी थी। ताड़ीके अड्डेपर गाँवके अनेक मनचले दरिद्र चीथड़े-घरे, दुबले, और काले, इन्तज़ार-साफ़ीमें डटे थे। उनमेंसे अनेकके सामने पात्र खाली थे। इससे पता चलता है कि इसके पहले भी दौर चल चुके थे। क्षणभर बाद ही नये घड़ेमें ताज़ी ताड़ी लिये ठेकेका नौकर नज़र आया और उसे देखते ही विविध भाव-भंगिमा बनाते एक साथ ही सभी गा उठे—

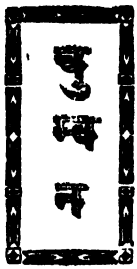
**गान**—

**एक**—*दे और ढाल !*

**दो**—*दे और ढाल !*

**तीन**—*मस्तोंका राजा तू कलाल ..*

**सब**—*तेरी अटपट बेहोश चाल*




*रे टूट न जाये पात्र—लाल*

*अपने डगमग पगको सँभाल...*

*दे और ढाल ! दे और ढाल !!*

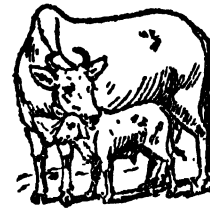
कलालका नौकर उदारतासे उत्सुकोंके पात्र पूर्ण करने लगा। प्यासे पियक्कड़ चुक्कड़ सँभालने और आपसमें बातें करने लगे—

एक—दौलतराम महाजनके डरसे औरत और बच्चोंका चिल-चिल्लाते छोड़ सभी मर्द भाग खड़े हुए—

दो—मैं-मैं नहीं भागा यार ! मेरा बाँधा झोपड़ीमें है और म महल्लमें—चहल पहल्लमें...

तीन—लो ! कहते मियाँको तो नशेने दबोच लिया—

दो—नशेकी तेसी और कहनेवालेकी तेसी ! मेरी बाँधापर दौलतराम छापा नहीं मार सकता। कर्ज़ लिया है मैंने हाँ, और ताड़ी पीनेके लिये। ताड़ी पी लेनेके बाद मैं चुका दूँगा - भर दूँगा—पटा दूँगा। फिर भी अगर दौलतराम मेरी बाँधापर बद-नज़र डालनेका इरादा करे,



सो वह पीटा जायगा- पीटा। पाजी! औरतपर नज़र! पाजी!!

कलमियों नशेमें पासके पियक्कड़को दौलतराम समझ उसकी कुटम्मस करने चले! ताड़ी बेचनेवालेने देखा बात बढ़ जायगी। मगर: पियक्कड़ोंका स्वभाव—और उस पर वाग्-प्रयोगोंका प्रभाव—वह किसी वैज्ञानिकसे कम नहीं जानता था। लोगोंको लड़ते देख वह तड़पकर ज़ोरसे गाने लगा--

## गीत

*अरे —कौन छबीली नारि...*

*तलैयामें कंगन मले!*

*जोबन, अलकें—पलियोंमें झलकें*

*अरे—नागिन और तलवारि...*

*तलैयामें कंगन मले!!*

गानका प्रभाव पूरा पड़ा। पियक्कड़ स्तब्ध रह गये। मगर, गायकके रुकते ही उसपर प्रश्नोंकी झड़ी लग गई—



एक—किस तालाबपर मल रहा है ?

दो—किसकी औरत रे !

तीन—नागिन और तरवारि ?—दादा रे दादा !

चार—गप है। तुम सब तो नशेमें पागल भूत बन रहे हो। पुराना, सड़ा हुआ मामूली गाना है। साला उधरहीसे पीकर मस्त ; किसी गड़ेरियेसे सुनकर पिपिया रहा है—गा—गा—पट्ठे !

ताड़ीवाला—सुनकर नहीं—आँखों देखता आ रहा हूँ ...

इसी वक्त कुर्की याने 'सिविल कोर्ट'के आदमियोंके साथ ताड़ीखानेमें दौलतराम आया। एक बार तो उसके आनेसे सभामें सन्नाटा छा गया। मगर, नशेमें पागल पियक्कड़ इस वक्त यह न समझ सोच सके कि उनका महान महाजन, कानूनोंका पण्डित, दौलतराम सामने है...

एक—क्या देखा आँखों ?

ताड़ीवाला—मलुआ लकड़हारेकी लुगाई मैना...



दो—जो कलकत्ते के उस खानसामेकी लड़की है जो पहले लकड़हारा था।

ताड़ीवाला—मैं नहीं जानता कि वह किसकी लड़की है, मगर, वहीं, भुतहे तालाबपर अकेली—मदमस्त—नहा रही है!

इतना सुनते ही दौलतराम तेज़ीसे ताड़ीखानेसे भाग खड़ा हुआ।

तीन—भला रे! गौरकी बीबीको मदमस्त कहते तुझे शर्म नहीं आती।

ताड़ीवाला—जब खुद बीबीहीको शर्म नहीं, तब मर्द कबतक शर्मायगा भैया!

चार—वाह! वाह पट्ठे! तू पूरा वकील है। कैसा सच्चा जवाब दिया कि, चौधरी लोटन रामकी बोलती बन्द हो गयी।

सब—दे और ढाल!

दे और ढाल!

मस्तोंका राजा तू कलाल!




असिलमें ताड़ीखाने जानेके पहले दौलतरामने मलूकाकी ख़बर ली थी; मगर झोपड़ी सूनी मिली। क़र्ज़दारकी औरत तालाबके किनारे है, यह सुनते ही दौलतराम दौड़ा उसको अपमानित करने—धमकाने—भरसक कुछ भी ऐंठ लेनेके लिये। इसके पहले दौलतरामने हज़ारों बार मलूआकी औरतको उपन्यासमें देखा था। स्त्री-सुलभ-सौन्दर्य और आकर्षण एक लकड़हारेकी औरतमें हो सकता है ऐसा सपनेमें भी वह नहीं विचार सकता था... मगर, एकान्त...! अधनग्ना पर-स्त्री स्नान करती! स्त्री-वञ्चित या वञ्चक दौलतरामका मन हवा पानेके बाद अधमरे सांपके फनकी तरह सर उठाने लगा! बहुत देरतक वह एक दरख्तकी आड़में छिप, मैनाका स्नान-शृङ्गार; उत्सुक देखता रहा। ज़रूर वह इस इरादेसे नहीं आया था—तब? तब क्या—असिल बात है एकान्त, अर्ध-नग्नता, युवती, और पुरुष..! और पुरुष भी पागल! दौलतरामको बहुत देर बाद कर्त्तव्य-ज्ञान हुआ। अब वह लता-ओटसे प्रकट हुआ और खखारकर, ज़ोरसे पांव पटकता किनारेकी तरफ बढ़ चला।

इसी वक्त दूरसे बालक बिपतने ये सारा वाक़या देखा—



[redacted]

यह दूर हो, मगर कान लगाये और सजग होकर सुनने लगा—

दौलतरामकी आहट पाते ही मैनाने भरसक अपनेको गीले पुराने वस्त्रसे ढाँपा। क्षणभर वह भी चकित और 'क्या-करे-सी' रही—मगर 'स्त्रो बुद्धिः प्रलयावहाः!'

*दौलत*—तुम किसकी औरत हो?

*मैना*—तू किसका मर्द है?

*दौलत*—मर्द? अपना हूँ मैं—हँसो मत! मैं सारे क़ायदे-क़ानून अदालत-कचहरी जानता हूँ। कोई बारह बरस बीते, ख़र्चीली होनेका इल्ज़ाम लगा, मैंने अपनी सगी धर्म-पत्नीको निकाल दिया था। तभीसे मैं आजतक—अर्धाङ्ग नहीं, सर्वाङ्ग हूँ—

इसी वक्त दौलतरामके माथेपर एक कंकरी 'कट' से आ लगी। उसने चारों तरफ़ बड़ी-बड़ी आँखोंको तेज़ीसे दौड़ा कर देखा, मगर; कोई नज़र न आया।

विपत अब एक पेड़की दो मोटी डालोंमें छिपकर क्षण-क्षणपर दौलतरामकी खोपड़ीको चाँद-मारीका निशाना बना रहा था—



दौलत—तुम किसकी औरत हो ?

मैना—तू किसका मर्द है ?



मैना—ख़र्चीली होनेसे तूने अपनी लुगाईको घरसे निकाल दिया, इधर मैं, कम-ख़र्च होनेसे, अपने मर्दको छोड़ देना चाहती हूं।

दौलत—ना—सुन्दरी! मलुआको छोड़ना मत। तुम्हारे ही ब्याहके लिये उसने मुझसे रुपये लिये थे। मेरे रुपये और मलुआके बीचमें 'अस्थाई सम्पत्ति' सी तुम भी हो मैं सारे क़ानून जानता हूँ। मेरी इच्छा बिना,मेरे क़र्ज़-दारकी बीबी मर्द भी नहीं बदल सकती। मैं सारे क़ानून-क़ायदोंकी ताज़ीरात हूँ, ताज़ीरात!

मैना—आग लगे तुम्हारे क़र्ज़में! मैं तो जल्द ही अपने ख़ानसामे बापके पास कलकत्ता भाग जाऊँगी—

दौलत—क्यों? आख़िर मैं सारे क़ानून-क़ायदे जानता हूँ—ज़रा बोलो तो, किस आइनसे तुम कलकत्ते जा सकती हो?

मैना—कलकत्तामें मेरा बाप जानसन साहबका ख़ानसामा है। साहबने मुझे बुलाया है। खाना, कपड़ा, रहनेको बंगला और पैंतालीस रुपये महीना साहब देंगे। मैं साहबकी 'आया' बनूँगी। मुझे दौलत चाहिये...




दौलत—दौलतराम—सुन्दरी! मेरा पूरा नाम दौलतराम है।

मैना—चूल्हे-भाड़में जाय कोरा नाम। मैं तो ऐसा मर्द चाहती हूँ, जो अपार धन मेरे पाँवके पास ला धरे, और झुककर नम्रतासे कहे—'लो रानी! लुटाओ!'

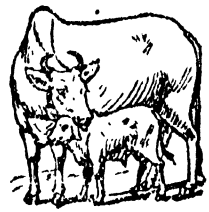
दौलत—धन? है तो अपार—अटूट मेरे पास; मगर उसका लुटाना—मैं सुन्दरी! क़ानूनकी करोड़ों किताबें काबुलसे मँगा-मँगाकर फाँक गया हूँ—फाँक!

कंकरी तीसरी बार 'कड़ां' से लगी। इस बार दौलतराम व्याकुल हो उठा—

दौलत—मैं सारे क़ानून जानता हूँ, ये कँकरियाँ कहाँसे बरस रही हैं?

मैना—भुतहा तालाब है—यह, मामूली जीवटके लोग यहाँ नहीं ठहरने पाते।

दौलत—भूतकी ऐसी तैसी! मैं एक बात कहूँ—मलुआको छोड़ तुम मेरी नौकरी क्यों नहीं कर लेती? मैं सारे क़ानून जानता हूँ।



मैना—नौकरी ! मेरी जूती करे ! मैं तुझ जैसे कंजूस, मक्खी-चूसकी नौकरी करूँगी ? छिः !! इस मर्दुयेको यह कहते शर्म न आई कि, धनके लिये इसने अपनी धर्म-पत्नीको निकाल दिया—छिः ! भाग !!

दौलत—धीरे-धीरे नौकरानीसे तुम रानी भी बन सकती हो ! मैं सारे क़ानूनोंकी किताब हूँ किताब ! अब तुम, बिला उज्र, मेरे साथ चलो चलो। जिस औरतको मैंने निकाल दिया था उससे, रंगमें काली होनेपर भी, तुम सौगुना अधिक सुन्दरी हो ! चलो।

मैना—मुझे सुख चाहिये—आराम। खर्चनेको हज़ारों—उड़ानेको लाखों। दे सकता है ? ज़रा इस लहरीले तालाबमें अपना सूरतसा मुँह तो निहार !

दौलत—वे तरह दूँगा सुन्दरी ! जिस तरह माँगोगी, उसी तरह दूँगा—तन, मन, धन—(चमककर) मैंने क्या कहा ! मैं सारे क़ानून—(चमककर) कौन कंकरी मार रहा है पाजी ?

मैना—यह भुतहा तालाब है—भाग जा !




दौलत—मैं सारे क़ानून-क़ायदे जानता हूं। अब चलो तुम!

इसी वक्त...

दौलतरामने तालाबके किनारे, सद्यःस्नाता सुन्दरी मैनाका अनायास ही पाणि-ग्रहण कर लिया...

इसी वक्त एक कंकरी और उसके माथेपर कड़की—साथ ही प्रेमसे पागल बालक विपत माताकी ओर झपटा—

विपत—माँ—अम्माँ! तू कहाँ जायगी—माँ?

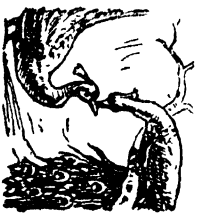
मैना जल उठी! झपक—अपने बेटेको देखकर—उसके सारे निश्चयोंपर पानी फिर गया। दौलतराम भी निहायत उदास वदन हो उठा!

मैना—ना! मैं नहीं जा सकती—यह मेरा विपता...

सहसा मैना 'स्त्री' हो उठी—शर्मीली। उसने अब डाटा दौलतरामको—

मैना—भाग! मैं जहाँ हूँ वहीं ठीक हूँ—भाग!

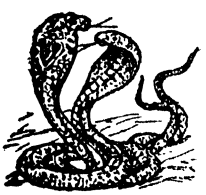
सरपर पाँव रख भागनेमें ही दौलतरामने कल्याण समझा। वह भाग खड़ा हुआ।



एकान्त हाल हो, पूरी शक्तिसे विषधरके दोनों कान पकड़,
दाँत पीस, मैनाने उसे अधर ऊपर उठा लिया—

*मैना*—मेरे पाप! तू मर भी नहीं जाता। जी चाहता है तेरा गला घोंट तुझे भुतहे तालाबपर बलि। चल! पापी!...

और रोज-रोज मार खाते-खाते विषधाके लिये कुटम्मस रोज मर्रा हो गयी थी!
वह मार खाता ही रहा, खिलखिलाता ही रहा और सारे रास्तेमें अपनी मतवाली माँके चरणोंसे चिपट-चिपटकर ठोकरोंसे खेलता ही रहा!!






**स्थान**—राम मन्दिर

**समय**—१ बजे दिन

उक्त घटनाके दूसरे ही दिन होलीका त्यौहार पड़ता था। मनाने मल्लूको भली भाँति समझा दिया था कि, अगर त्यौहारके दिन भी उसे ये चीज़ें और ये चीज़ें न मिलीं तो वह जो न कर बैठे थोड़ा होगा। अतः उस दिन बाज़ार लकड़ी बेचने जानेके पहले मल्लू राम-मन्दिरमें गया—

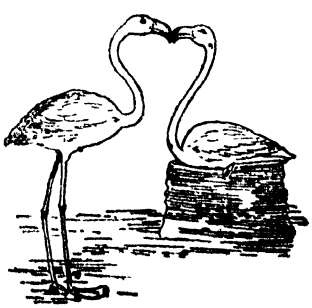
मल्लू—राजाराम! कल होली है। कल सारे देश और गाँव और मुहल्लेके लोग सुखोंसे नाचते नज़र आवेंगे—
तो क्या हम, आपके भक्त, कल भी उपासे सोवेंगे? क्या कल भी मुझे अपनी स्त्रीसे अपमानित होना और बेचारे बच्चेका रूखा मुँह देखना पड़ेगा—?
महाराज! आपके श्री दरबारमें ऐसा न्याय तो न होना चाहिये। फिर दो—दो न राजाराम! महज़ तीन हज़ार रुपयेसे मेरा बेड़ा पार हो जायगा।



भावावेशसे विह्वल मल्लू लकड़हारा कुछ गुनगुनाने और बेताल ही नाचने लगा।

*मैं अपने सैंया सँग साँची !*

*तब काहेकी लाज सजनी ! जब परगट नाची ।*






**स्थान**—तिनकापुरका बाहरी भाग

**समय**—सायंकाल ७॥ बजे

उसी शामको तिनकापुरमें होली जलाई गई। हफ्तोंसे गाँवके युवकोंने एक जगहपर लकड़ियाँ, उपले और टूटी-फूटी काठकी चीजोंको जमा कर रखा था—उस दिन ख़ास मुहूर्तपर गाँवके पण्डितजी आये और प्रायः हरेक पुरुष और बच्चेकी उपस्थितिमें मन्त्रोच्चारण करके वह होलिका-दाहकी विधि पूर्ण करने लगे—

*पण्डित*—पहाड़से गिराने और विष पिलानेपर भी जब राम-भक्त प्रह्लाद न मर सके, तब उनके पिता, प्रचण्ड असुर हिरण्यकश्यपने अपनी उस बहिनकी सहायता ली जिसे वरदान था कि, वह आगमें जल न सकेगी...

इसी वक्त दौलतराम दण्डा ताने वहाँ पहुँच गया और कथा-पूजा, वक्त-बे-वक्तका ख़याल न कर, गाँववालों-को धमकाने लगा—

*दौलत*—क्यों बे सधवा, ला मेरे रुपये! बच्चू मैं सारे क़ायदे क़ानून और अदालतका कीड़ा हूँ।



खीरमें मक्खीकी तरह दौलतरामका प्रवेश किसीको भी रुचा नहीं। मगर, गरीबोंके मुँह बलवानोंके विरुद्ध बंधे होते हैं न! फिर भी पण्डितजी बर्दाश्त न कर सके। उन्होंने तीव्रतासे दौलतरामको सावधान किया—

पण्डित—बाबू साहब! इस समय तो ज़रा धैर्य रखिये। यह पुण्य काल है। रुपये-पैसेकी माया तो दुनियाके पीछे ज़िन्दगीभर लगी ही रहेगी।

और दौलतराम सन्न रह गये। क्षणभर बाद भीड़से उन्होंने अपना रास्ता नापा।

पण्डित—परन्तु भाइयो! जब असुरोंने उस चिताकी राखका निरीक्षण किया जिसमें जलनेके लिये प्रहलादको लेकर उनकी बूआ दुण्ढा बैठी थी, तब आश्चर्यसे उन्होंने क्या देखा। देखा, बूआजी जलकर राख हो गयी थीं और राम-भक्त, तपे सोने-सा दिव्य और गुलाबके फूल-सा सजीव खिलखिला रहा था—

सब—बोलो राजा रामचन्द्रकी जय!



पण्डित—नये वर्षके शुरूमें होलिका-दहनकी पुण्य-तिथि मनाने और माताकी तरह श्रद्धासे उनकी पूजा-प्रार्थना करनेसे बच्चों, जवानों, बूढ़ों, महिलाओं और सबको रामचन्द्र-देवकी कृपासे वांछितफल प्राप्त होता है—

होलिहार—१

## कबीर

*अ र र र र र र कबीर !*

*राम-भक्त पहलाद बड़ेरा दुश्मन जिसका बाप*

*लाख मुँड़ मारा झखमारा रहे बचाते आप*

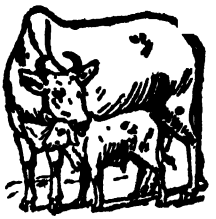
*राम राजाकी जय बोलो ! जवानो ! बच्चो ! होली है !*

इसके बाद डफ नामक बाजा बजाते गांवके गरीब नाचते—गाते ग्राम-परिक्रमा करने लगे—

## गीत

*डफ बाजै हो ! डफ बाजै हो !!*

*साज देख मन राजै हो !*



इत घनश्याम मदन-मन मोहन
उत श्यामा रति साजै हो...
अरे उत राधा रति साजै हो !
आज देख मन राजै हो !
डफ बाजै हो ! डफ बाजै हो !!






**स्थान**—मल्लूकी झोपड़ी

**समय**—सवेरे १० बजे

होली खेलनेवाला दिन आया मगर, सवेरे होसे मलुआ झोपड़ीसे गायब था। शायद लकड़ी काटनेके लिये...

मैना नाक-भौं चढ़ाये, पांवपर पांव रखे बैठी, क्रोधसे जम्हाइयां ले रही थी। कभी-कभी दूरसे होलिहारोंका विचित्र मस्त स्वर उसके कानमें तीरकी तरह घुसता था। और, बेचारा विपता, घरसे दूर, किसी घूरेपर खड़ा शायद गांवके उन बच्चोंके भाग्य सराहता था, जिनके पास खानेको मिठाइयां, पहननेको रङ्गीन वस्त्र और खेलनेको एक चमकीली पिचकारी थी...

इसी वक्त होलिहारोंका एक दल 'रसिया' गाता और ढोल, करताल, मंजीरादि बजाता मल्लूकी झोपड़ी और बिगड़ी मैनाके सामनेसे गुजरा...

होलिहारोंकी एक-एक तान, बानकी तरह, दरिद्रतामें परीशान मैनाकी जानमें बिंध गयी। मगर; उसने गालियां न दीं। जिस लोकाचारका विचारकर दौलत-



राम उस दिन पगिडतराजकी बात मान गया था; शायद उसीके मौन-प्रभावसे मैना भी अपने दुःखमें ताने मारनेवालोंको गालियां न दे सकी।

## रसिया

*केसरिया रंग रँगा चोला...*

*मन मोहनकी राम रसीली*

*ललचाये जियरा भोला...*

मैना—देखती हूँ, कई दिनोंसे, झोपड़ीके चूहे भी कहीं भाग गये है। उपवास करते-करते साधू बनकर बदमाश चूहे जङ्गलमें भाग गये! और मैं—मैं..?

इसी वक्त मैनाको संकेत कर एक होलिहार,देहाती कबीर ललकार उठा—

## कबीर

*छ र र र र र र कबीर !*

*अरे—मलुआ बेटा 'मैना' लाया जिसके पंख पचास*




*पिंजर विपत देख वह भड़के उड़नेवाली खास !*

*अरी मैना जब उड़ जाना ! क़सम है ! मेरे घर आना !*

अब मनाके मौनकी सीमा टूटने लगी—

मैना—अब मैं इस घरमें एक क्षण न रहूँगी—खाना न दाना, सारे गाँवका ताना ! ग़रीबकी लुगाई—सबकी भौजाई !

वह तेज़ीसे कहीं भाग जानेके लिये अपनी चन्द चीज़ोंकी गठरी बनाने लगी—और बनते ही वह झोपड़ीके बाहर झपटी—और इसी वक्त कहींसे, न जाने किस संयोगसे दौलतराम वहाँ आ फटा ! उसे देखते ही, गत दिनकी तालाब किनारेकी घटना मैनाकी आँखोंमें खेल गई। दौलतरामसे आँखें चार होते ही मना आँखोंमें मुस्कराई, होठोंमें तिरस्कार प्रदर्शन किया उसने और प्रायः सटकर उस शठके पास वह खड़ी हो गयी।

दौलत—शुभं ! शुभं !! मलुआ कहाँ है ? आज मैं उसको समझा दूँगा कि मैं ज़रूर अपने शहरका सबसे बड़ा क़ानूनदाँ हूँ—वह—मलुआ कहाँ है ?



मैना - नरकमें—! मैं तो इसी वक़्त उस पापीको छोड़कर अपने बापके पास कलकत्ता भागी जा रही हूँ।

दौलत - अहँ! कलकत्तेमें क्या धरा है—सारे क़ानून-क़ायदे तो मेरे हाथमें हैं। तुम मेरे घर चलो! पाजी मलुआपर मेरे सात सौ कलदार होते हैं।

मैना—क्या? मर्दके गुनाहपर औरतको सतायेगा—बाँदी बनायेगा? तेरा मूँ जले—भाग!

दौलत—देखो! मैं सारे क़ायदे-क़ानूनोंका मुरब्बा—याने मुरब्बी हूँ। एक औरत खोकर आज मैं उसकी क़ीमत समझ रहा हूँ। एक बार चलो तो मेरे बँगलेपर—तुम्हें रानी बनाकर रखूँगा—रानी! चलो! बाहर मेरी पालकी तैयार है।

दौलतरामने मैनाका हाथ पुनः मतलबसे पकड़ा और इस बार मैना ख़ुश नज़र आई। वह चुपचाप जा, पालकीमें बैठ गई। सारे गाँवके सामने ग़रीब मलुआकी लुगाई अमीर दौलतराम निकाल ले गया!



पालकी जानेके क्षणभर बाद ही एक पैसाके लिये व्याकुल बेचारा विपता दौड़ता आया—और झोपड़ीमें अपनी माँको ढूंढ़ने लगा।

*विपत*—माँ, अम्मी! एक पैसा दे मुझे—! मैं भी रंग खेलूँगा माई! तू कहाँ है??

झोपड़ीमें माँका पता न पा विपता मानो फ़ौरन सूँघकर समझ गया कि उसकी माँ किधरको गई होगी। वह पालकीवालोंकी पग-रेखाएं ताड़ता हुआ नदीके तटपर पहुँचा, जहाँ पालकी नावके इन्तज़ारमें रेतपर रखी थी। दौलतराम विपताको भी अपने साथ ले गया—उस पार!





स्थान—बाज़ार

समय—दोपहर

जिस वक्त मलुआकी औरत और बटा दौलतरामके घरमें—किसी और ही रङ्गमें दाखिल हो रहे थे, उसी वक्त बिलासपुरके बाज़ारमें मलुआ लकड़ी बेच रहा था। आज उसने बहुत बड़ा बोझ काटा और बाँधा था। मलुआका बोझ इतना भारी था कि, एक पढ़े-लिखे बाबू साहब उसके बारेमें बिना भरपूर पूछ-ताछ किये न रह सके—

बाबू—अरे! इतना भारी बोझ! तू आदमी है या देव??

मलुआ—ग़रीब हूँ बाबू, मुसीबतज़दा हूँ। आज त्यौहार है न। सरकारके चरनोंकी कृपासे सेवकके घरमें भी बच्चा है, जोरू है—धन छोड़कर और सब कुछ है।

बाबू साहब लकड़हारेकी बातसे बहुत खुश हुए—

बाबू—वेल! मैं जानता था कि असभ्य-देहातियोंके हृदयही नहीं होता—मगर—उफ़! यह बोझ! कितनी देरमें




तैयार हुआ—?

मलुआ —तड़के ६ बजेसे १२ तक लगातार परिश्रम करनेसे - राजारामकी कृपासे बाबू बोझ भारी है त्योहार मज़ेमें मनाऊँगा।

बाबू—क्या दाम लेगा? एक बात बोल!

मलू—मैं दाम कभी नहीं करता सरकार! जो भी गाहक-गोसाईं दे दे उसीको बहुत मानता हूँ—

बाबू—फ़िलासफ़र!! अह! अच्छा देख! यह बोझ मेरे घरपर पहुँचा दे! चार पैसे दूँगा—बस—समझता है?

मलू—सरकार, राजाराम आपका भला करें! चार पैसे तो बहुत हैं—चलिये!

मगर; घरपर समझदार, दिलदार बाबू आहलने मलुआ-को पूरे पाँच रुपये दिये..!





**स्थान**—मलुआकी झोपड़ी

**समय**—तीसरा पहर

मलुआ जब सारी, पूड़ियां, मिठाइयां और विपताके लिये कपड़े नये ख़रीदकर अपनी सूनी झोपड़ीकी तरफ़ लौट रहा था, उसी समय नदी तट पर कोई फ़क़ीर एक गीत ऐसा गा रहा था जिसे सुनकर न जाने क्यों मूख मलुआके मनमें करुणा और वैराग्यका उद्रेक होने लगा—

## होली

*ग़ाफ़िल तू मत सो उठ रे !*

*मुंह धो !*

*दुनिया—दौलत चार दिनोंकी*

*हो जा रे, नौ—दो*

*नाहिं तो झिलमिल भूल गुलैया*

*रोएगा रो रो—उठरे !*




झोपड़ीके पास आनेपर भी मलुआके माथेमें 'गाफ़िल मत सो !' की बानी ही गूँजती रही। झोपड़ीपर सहसा दृष्टि जाते ही वह चौंका—गोया जलते कोयलेपर पैर पड़ गया। उसने छूटते ही पुकारा—

*मल्लू*—विपताकी अम्माँ ! विपताकी माँ—माँ ! विपता ! विपता ! अरी मैना !

तब तक तो कई पड़ोसी आ गये ! एकने मलुआको आगाह किया—

*पड़ोसी*—तेरा लुगाई और बेटेको—महाजन दौलतराम—पकड़ ले गया।

*मल्लू*—पकड़ ले गया ? और तुम लोग अपना काला मुँह लिये कठपुतलीसे खड़े रहे !

*पड़ोसी*—भला हम कर ही क्या सकते थे ?

*मल्लू*—सीता हरण देखकर जटायू नामक पंछीने जो काम किया था, वही तुम भी, आदमीके नाते, कर सकते थे। आततायीका जान ले सकते, नहीं तो; अपनी शानसे दे सकते थे !



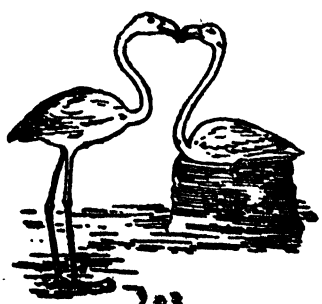
पड़ोसी—अरे पागल, लगाम दे लगाम! ज़ुबानको संभाल! माता सीताका नाम मैली मैनाके साथ न जोड़।

पड़ोसी २—माता सीताका हरण मदान्ध रावणने छलसे किया था और तेरी मैना! तेरी मैना फुदकती, चहकती, सोनेके पिञ्जरेमें बन्द हो, तेरे उजड़े घोसलेमें उल्लू बसाकर अपने आप उड़ गई है।

बेचारा मल्लू सन्नाटेमें आ गया—बापरे!

मल्लू—चली गई? चले गये! लो! राजाराम—दौलतराम—मैना, हाय मेरी रानी!

बेचारा तेज़ीसे नदी तटकी ओर भागा। खुशी और त्योहारकी चीज़ें अभी उसके साथ ही पोटलीमें थीं



# दृश्य ८

**स्थान**—नदी तट

**समय**—२ बजे दिन

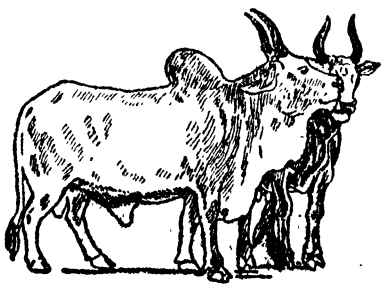
नदी तटपर आते ही उसने देखा आज भी नाव नहीं है।

मल्लू—कोई हर्ज नहीं। गठरी सरपर बाँध तैरकर जाऊँगा—

कोई—अरे नादान! डूब जायगा डूब!

मल्लू—जल्दसे जल्द उस पार न पहुँचनेसे मेरी इज़्ज़त डूब जायगी—हे राजाराम!

मलुआ पानीमें कूद इस तेज़ीसे सर्पकी तरह उस पारकी तरफ़ सरका कि देखनेवाले हैरान रह गये।





**स्थान**—दौलतरामका घर।

**समय**—तीसरा पहर।

इधर दौलतरामके विशाल कमरेमें पहुंचते ही महाजनके आग्रहसे मैनाके लिये बीसों नई साड़ियाँ और विपताके लिये रङ्गीन कपड़े मंगाये गये। उसी दिन दौलतरामने अपनी पुरानी स्त्रीके आधे गहने मैनाको सौंप दिये—गहने पहनती हुई ढीठ या निर्लज्जा वह नारी, अपने बेटेपर ताने कसने लगी—

*मैना*—कलमुहें! भाग सराह अपने भाग; जो मुझ-सी माँ तुझे मिली, नहीं तो; ऐसे कपड़े तू स्वप्नमें भी न देखनेको पाता।

*विपता*—मगर अब तो बहुत देर हुई माँ! चलो अपने घर चलें ज़रा बाबा भी तो इन चीज़ोंको...

मगर बीचहीमें बलसे मैनाने विपताका मुंह बन्द कर दिया—

*मैना*—चुप कर! नहीं तो तेरा कलेजा फाड़ दूँगी। अब चूल्हे-



भाड़में जाय तेरा बाबा और उसका नरक-रूपी घर...

इसी समय नीचे, मकानके सामनेके बागीचेमें, घनघोर शोरोगुल सुनाई पड़ा। हाँफता दौलतराम भी भीतर आया—

*दौलत*—( फुस फुसाकर ) धीरे-धीरे! मलुआ पाजी, सैकड़ों आदमियोंकी भीड़ लेकर तुम लोगोंके लिये शोर मचा रहा है।

*विपत*—आया बाबा! मेरा बाबा! लोय!—लोय!!

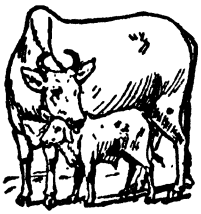
उछल कर कुमाताने कोमल बच्चेकी गर्दनको अपने पंजोंमें जकड़-पकड़ लिया—

*मैना*—बाबाके हरामी बच्चे! चिल्लायगा तो गला घोंट दूँगी।

*नेपथ्यसे*—( मलुआकी पुकार ) दोहाई—दोहाई! महाजन राजाकी! ग़रीबकी लुगाई और बेटेको लौटा दो! त्यौहारके दिन मुझे न कलपाओ।

*मैना*—निकालो! उस कंगालको फ़ौरन बंगलेके बाहर कर दो!

*दौलत*—ऐसे नहीं, फटकारनेसे लोगोंको शुबह हो जायगा कि मैं तुम्हें ले ही आया हूँ—इस वक्त बुद्धिकी ज़रूरत है



और मैं सारे क़ायदे-क़ानून वग़ैरह—ठहरो !

दो छत्तोंके साथ ही एक छज्जा भी था। वहींसे दौलत-रामने नीचे जुड़े लोगोंको ताड़ा। दौलतको देखते ही मलुआने पुनः करुण दोहाई खींची—

*मलुआ*—सरकार ! मैं उनके लिये बारह बजेतक लकड़ी काटता रहा। ये कपड़े, ये मिठाइयाँ—दोहाई है राजा महाजन-की ! मेरी औरत मुझे लौटा दीजिये।

*दौलत*—मलुआ ! तू ताड़ी पीकर तो नहीं बक रहा है। बच्चू मैं सारे क़ायदे-क़ानूनोंका बादशाह हूँ—

*मलुआ*—सरकार ! तिनकापुरके एक-एक बच्चेने आपहीका नाम लेकर बतलाया है कि, 'रुपयेके लिये महाजन तेरी जोरू और बेटेको' (फूट-फूटकर रोता है) दोहाई है सरकार ! मैं उनके बिना जी न सकूँगा—मेरी जान उन्हींके लिये है। उन्हें छोड़ दीजिये !

*दौलत*—अच्छा ठहर !

और धूर्त दौलतरामने पूर्ण विश्वासके साथ अन्धेरेमें एक तीर मारा...




सजी-सजाई, बिलकुल परिवर्तित मैनाको छज्जेपर सबके सामने वह ले आया और मल्लूसे बोला—

दौलत—यह देवी अभी मेरे घरपर मेरे साथ स्टेशनसे आई है। यह मेरी सगी भाभीकी फूफीकी दीदी है—देख इनको तू पहचानता है?

बेचारा मल्लू नये परिधानमें चमाचम चमकती उस मैनाको न पहचान सका, जिसे हमेशा चौथड़ोंहीमें उसने देखा था—उसने अपनी स्त्रीको पर-स्त्री और महाजनकी मान्या मान—सादर नमस्कार किया।

दौलतरामने ताड़ लिया कि मल्लू पूरा उल्लू बन गया। तुरन्त उसने नये वेशमें, टोपी, जोड़े, मोजेमें सजे विपतको भी सबके सामने किया।

दौलत—इसे देख! इन देवीजीका यह बेटा है—क्या तू इसको पहचानता है?

मल्लू आँखें गुरेर-गुरेर कर, कुछ पहचानी-सी शक्ल होने पर भी, अपने बेटेको दृढ़तासे न पहचान सका, उसने इस लड़केको भी दौलतरामका सगा और मान्य मान सादर नमस्कार किया।



दौलत—अरे मतवाले ! इतनी भीड़ लेकर चढ़ाई करनेवाले ! मैं सारे क़ानून-क़ायदे वग़ैरह चाटे बैठा हूँ—बोल ! क्या ये लोग तेरे परिवारी है ?

मल्लू—( हताश, अभागा, मूर्ख ) मेरे ! हें हें हें—सरकार मेरे परिवारी रंक है, वे ऐसे नहीं हैं हुज़ूर !

दौलत—निकल बंगला बाहर, पाजी ! नहीं तो अभी पुलीसको बुलाकर लाठी चार्ज करा दूँगा। मैं सारे क़ानून जानता हूँ—तुम्हारा इस तरह मेरे बंगलेपर चढ़ आना दफ़ा १००८ में साफ़ आता है—साफ़ !

अब एकत्र जन-मण्डली मलुआपर नाराज़ नज़र आई।

लोग—पागलके पीछे, 'जस्टिस' के जोशमें हम चले आये।

लोग—बदमाश देहाती एक रईस महाजनको झूठमूठ बदनाम करता है...

दौलत—मैं कहता हूँ निकलो ! —निकलो !!

हरेक आदमी मूर्ख मलुआ, हैरान मलुआको तिरस्कार-पूर्ण स्वरमें दुत्कारता है—



सब—भाग ! भाग ! धूर्त्त !!

लज्जेसे दौलतराम भीतर आकर मैनाके प्रति रसीले भाव प्रकट करने और रङ्ग बाँधने लगा—

दौलत—मैं सारे क़ानून-क़ायदे जानता हूँ। दौलतकी चकाचौंधसे कंगाल चकरा जाता है। तुम लोगोंको साला पहचानतक न सका—

विपत—अजी हे बाबू साहब ! मेरे बापको साला कहोगे तो तकरार हो जायगी !

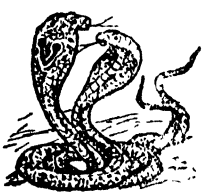
मैना—निकल ! जा बाहर, रंग लेकर होली खेल !

विपतके दूर होते ही दौलतराम—युगोंसे औरतके लिये प्यासा दौलतराम—मैनाके परम निकट हो गया—

दौलत—सुन्दरी ! मैं सारे क़ानून जानता हूँ—विश्वास करो ! तेरह बरस बाद मालूम पड़ता है कि आज मेरे घरमें लक्ष्मी साक्षात् आ गई हैं। निकट आओ ! रुपयेके लिये मैंने पहली औरतको निकाला था—अब रुपये मेरे पास



लाखों हैं—तुम-सी लक्ष्मीकी अब मैं अपने मन्दिरमें सादर पूज सकता हूँ—इधर आओ ! अब हम भी होली खेलें—



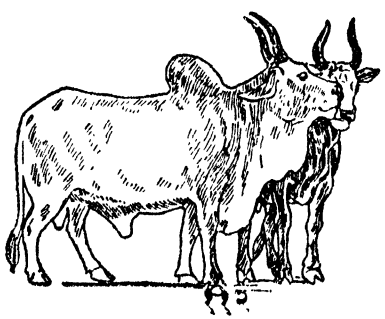
# चुम्बन

**स्थान**—टूटा मन्दिर

**समय**—सन्ध्या

टूटे मन्दिरमें हारा उदास बेचारा मल्लू मृतक-सा आकर खड़ा हो गया—रोने लगा वह—

मल्लू—राजाराम ! स्वामी ! देखा ? तुमने मुझे धन न दिया, न दिया और आख़िर मेरी लुगाई, और बेटा दोनों आज बरस दिनके दिन, मुझे छोड़कर न जाने कहाँ चले गये ! हाय ! घट-घट व्यापी राम ! मेरा कलेजा फटा-सा जा रहा है। राजाराम ! राजाराम !! रघुपति-राघव-राजाराम ! पतित-पावन-सीताराम !





**स्थान**—दौलतरामका घर

**समय**—तीसरा पहर

दौलतरामके घरकी दो दासियां बरामदेमें घूल-घुलकर बातें कर रही हैं—

एक—बड़ी मिजाज़न है...

दो—मारूँ बासी झाड़ू ऐसे बदमिजाज़पर...!

पाससे झाड़ू उठा ज़मीनपर पटकती है—सावेश...

एक—चुप! चुप! इस घरमें इस औरतके आनेसे पहले न तो "बॉय" थे और न "आया"...इसीको वजहसे हमारी नौकरी, रोटी है।

दो—रोटी देते हैं भगवान! यह राँड क्या देगी? यह तो दिन रात गालियाँ ही दिया करती है।

एक—कमज़ातकी लड़की—लुगाई भी बदज़ातकी और अब हिस्सेमें पड़ी शैतानके—यह जो न करे—

दो—इसका बाप ख़ानसामा है कलकत्तामें—सुना बहन!

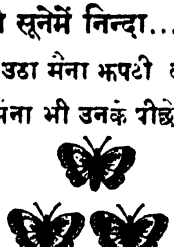


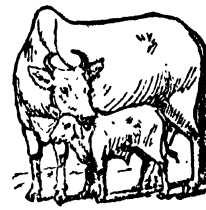
एक—तुझे ठीक मालूम नहीं। मैंने पता लगाया है कि, इसका बाप पहले लकड़हारा था तिनकापुरका। उसके काले रंग और गोल-गोल, लाल-लाल आँखोंपर एक दिन कोई शिकारी साहब जंगलमें रीझ गया। तभीसे वह कलकत्तामें है और खानसामा है। तभीसे इन बीबीजीका दिमाग़ हवाई जहाज़पर उड़ता—

इसी वक़्त न जाने कहांसे मैना आ गई। शायद वह छिपकर दासियोंकी बातें सुन रही थी। तभी तो, आते ही उनपर बरस पड़ी—

मैना—किसका दिमाग़ नाप रही हो चुड़ैलो! तुम्हारा मुंह जले! तुम्हें रँड़ापा भोगना पड़े! जिसका नमक खाना उसीकी सूनेमें निन्दा...! निकलो! भागो!

पासहीसे झाड़ उठा मैना झपटी दासियोंपर—वे भाग गईं बाहर—मैना भी उनके पीछे गई—!





**स्थान**- दौलतरामकी बाहरी बैठक

**समय**-- सायंकाल

सैकड़ों तरहके रोज़गारी या उनके नौकर 'बिल' ले-लेकर रुपये लेने आये हैं। मुनीम नाक-भौं चढ़ाये लोगोंको रुपये दे रहा है—

एक आदमी एक सौ रुपयेके 'नोट' पर सन्देह कर बोला—

*एक*—इसको बदल दीजिये, मुनीम जी!

*मुनीम*—क्यों, आख़िर?

*एक*—यह नोट जाली मालूम पड़ता है—देखिये! इसमें भीतरी लिखावट नज़र ही नहीं आती—काग़ज़ भी कुछ हलका...

*मुनीम*—तुम्हारे कहनेका तो यह मतलब हुआ कि हमलोग 'नोट' बनाते हैं—अजी जनाब! ले जाइये, असली है।

*एक*—अच्छा, अगर न चलेगा तो मैं—

*मुनीम*—लौटा दीजियेगा—क्या—नंबर मेरे पास 'नोट' है।




तबतक दूसरे रोज़गारीने अपना 'बिल' भरपाईके लिये मुनीमको दिया। उसको भी मुनीमने कई नोट और रुपये दिये। उससे भी एक रुपयेको ले बहस—

*दो*—यह रुपया बदल दीजिये तो—

*मुनीम*—क्यों ? क्या हुआ है रुपयेको ?

*दो*—यह बड़ी चोटीका पुराना रुपया है—

*मुनीम*—भाई मेरे ले जाओ ! इसमें ज़्यादा चाँदी है।

*दो*—रुपयेको गलाकर मुझे चाँदी नहीं बनाना है—बदलिये—कामके वक्त दिल्लगी—

*मुनीम*—अच्छा लाओ ! खोपड़ी न चाटो !

उसका रुपया बदलते ही तीन-चार हाथ एक साथ ही मुनीमकी तरफ झपटे—यह उजलत मुनीमको भाई नहीं—

*मुनीम*—एक-एक ! मैं कहता हूँ आप लोग सेठ दौलतरामका सर्वस्व ले जाइये—उस औरतकी ख़ुशीके वास्ते—मगर; मेरी जान न लीजिये ! क्या है आपका ?



तीन—मेरी दूकानसे पाँच हज़ार रुपयेके सुनहले गहने आये है। सेठजी स्वयं लेने गये थे—साथमें देवीजी भी—समझे ?

मुनीम—समझता हूँ, लीजिये—मज़ेमें गिन लीजिये। हज़ार-हज़ारके पाँच हैं।

चार—मुनीमजी ! सिलाईका बिल मेरा है ३३५।) का।

पाँच—मुनीमजी ! मैं देवीजीको आजकल अंग्रेज़ी पढ़ा रहा हूँ—मेरी तनख़ाह पिछले माहकी ६०) बाक़ी है।

छ—मुनीमजी ! मैंने एक घोड़ागाड़ी बेची है सेठजीको—मेरे हैं महज़ ६०० रुपये नक़द !

सात—मुनीमजी ! सेठजीने कल मेरी दूकानसे इत्र मंगाया था ग्यारह सौके तीन बड़े-बड़े कंटर...

आठ—मुनीमजी !

नौ—मुनीम !

और परम व्यग्र मुनीम बेचारा !



# दुश्मन

**स्थान**—दौलतरामका अन्तःपुर

**समय**—रात्रि ११ बजे

कमरेमें रंगीन रोशनी है, चारों ओर फूल-मालाएँ बिखरी हैं। एक छोटे सुन्दर टेबुलपर इत्रदान, पानदान वगैरह सजे हैं। ड्रेसिंग टेबुलके आईनेमें अपनी बाँकी-झाँकी स्वयं लेती मैना कटारीपर धार चढ़ा रही है, याने शृङ्गार कर रही है।

कलकत्ताके खानसामेकी लड़की है, तो क्या हुआ—मगर मैना देशी शृङ्गार बिलकुल नापसन्द करती है। टेबुल-पर सुर्मेदानी नहीं फ्रेञ्च 'लिपस्टिक' है, माँगमें फुलेल नहीं फ्रेञ्च लोशन और उसके हाथमें फ्रेञ्च पाउडरका नन्हा-सा "पफ़" है। वह विनोदिनी अपने गालों और फ्रेञ्च पफ़ और पाउडरसे खेलती—आईनेपर नैन बान बरसाती हुई गा रही है—

## गीत

*तान, तान, मत कमान !*
*नयन बान, हियमें लागे आन, आन !...*



*मत कमान तान, तान !...*

*ऋषि, मुनि सब छाड़े ध्यान*

*विधि, हरि, हर मूर्तिवान*

*जड़वत् ! हत् —ज्ञान मान, बेजबान !...*

*आन तान—आन बान !*

*तान, तान, मत कमान !*

गानेके बीचहीमें दौलतराम सेठ कमरेमें चुपके-से दाखिल हो गये। मैना आईनेके सामने, रूपके अभिमानसे मतवाली होकर अपनेको सुनाकर गीत गा रही है। कंठ उसका स्त्री-सुलभ याने सुरीला, कामल है। दौलतरामने भी आज नशा गहरा किया था, मगर, मैनाके सामने बहकनेकी हिम्मत उसमें नहीं। मन्त्र-मुग्ध सर्पकी तरह उसके पीछे खड़ा हो वह, बहुत देर तक गीत सुनते-सुनते उस चुलबुलीको छेड़नेकी मनोकामना संकेतसे करता है मगर हिम्मत छूनेकी नहीं होती।

खैर हुई। मैनाने आईनेमें दौलतरामके विशाल वपु को देखा आखिर; वह चौंककर खड़ी हो गयी—

*मैना*—तुम बड़े चोर हो...

*दौलत*—मैं सारे क़ानून-क़ायदे जानता हूँ—सुन्दरी! चोर नहीं—मैं महाजन हूँ, महाजन!

*मैना*—मगर, किसी भी अदालतमें मैं इस बातपर डिग्री पा जाऊँगी कि तुमने मेरा दिल, धोका देकर हाँ, चुरा लिया है।

*दौलत*—क्या? मैं और दिलका चोर—? मैं सारे क़ायदे-क़ानून जानता हूँ अप्सरे! दिल तुमने मेरा चुराया है—आह! मुझ-से चिकने घड़ेकी तरह सूमड़ेको तुमने फ़ौव्वारे-सा उदार—बना दिया—जानती हो?

*मैना*—वाह! जाननेवाले वाह! क्या जनाना है?

*दौलत*—आह! ढीठ मज़ाक करनेवाली छोकरी! मैं सारे क़ानून जानता हूँ—सारे!

*मैना*—अच्छा बैरिस्टर साहब मान गयी आप सारे क़ानून



जानते हैं—बस तो ? अब आप मेरे 'प्राइवेट चेम्बर' से फ़ौरन बाहर चले जाइये !

*दौलत*—( हताश ! ) मैं प्रेम करता हूँ ...

*मैना*—पहले 'इटिकिटि'—तमीज़—सीखो ! यह मेरा 'पर्सनल रूम' है। मैं अभी ड्रेसिंग कर रही थी—बिना घण्टी बजाये, बिना अपने नामका 'कार्ड' भेजे तुम भीतर क्यों आये ? क्या क़ानूनोंको कुचलनाही आपकी बुलन्द क़ानूनदानी है ?

*दौलत*—मैं हुज़ूर—याने अदालत ख़ास—से माफ़ी माँगता हू ... मैं सारे क़ानून जानता हूँ ।

मैना, अदासे, दांतोंमें अंगुली दबा बिचार करने लगी—
उसने निश्चय किया—आख़िर...

*मैना*—मैं माफ़ कर दूँ, बशर्ते कि, मुजरिम ज़िन्दगीभरके लिये मेरी ग़ुलामी मंज़ूर करे !

*दौलत*—मंज़ूर है...। युगोंसे मैं स्त्री-हीन हूँ लक्ष्मी ! मैं किसी भी शर्तपर तुम्हारा हृदय, प्रेम, पीयूष, अमृत—सुन्दरी



क्या विश्वास करोगी ?— मैं सारे क़ायदे-क़ानून, कचहरी, कोर्ट चाटे बैठा हूँ।

*मैना*—अदालतके सामने फ़िज़ूल बातें न बको! अगर मेरी ग़ुलामी मंज़ूर है, तो पहले मालमतेका पता और ख़ज़ानेका झब्बा मेरे हवाले करो! चलो! अरे, वाह जी प्रेमी! टाँय-टाँय फिस्स...!

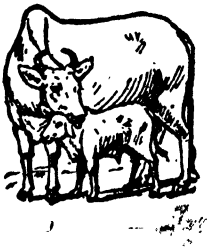
ख़ज़ानेका झब्बा मैनाके हवाले करनेके पहले स्वभावतः दौलतराम रुका—मगर, उसने मदपान किया था—इस वक़्त खीसे अच्छा उसकी नज़रमें कुछ नहीं—

*दौलत*—लो! यह है मेरा पैतृक याने ख़ानदानी झब्बा! लक्ष्मी!

अब इसकी इज़्ज़त—

चाबियोंका गुच्छा मुग्ध दौलतरामके हाथसे ले—उसके मुंहके करीब अपना मुंह ललचानेके भावमें ले जाकर फिर विचित्रता-से नाक सिकोड़ वह बोली—

*मैना*—छिः! ऐसी तेज़ शराब! तुमने ठर्रा पिया है क्या...? भागो! निकलो बदमाश!



दौलतराम कांप उठा मैनाके गर्जनेसे—वह, दो क़दम पीछे हट गया।

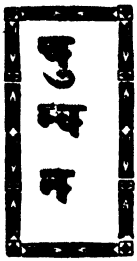
*दौलत*—देखो! धीरे बोलो—! मैं सारे क़ानून—बापरे! कोई सुनेगा तो...!

मैना मगर कबकी माननेवाली—वह तो ज़ोरोंसे बरस पड़ी अपने शिकार दौलतरामपर।

*मैना*—बापरे! मेरा बाप साहबका दोस्त "बिलायती" पीने-वाला और यह जानवर—लालची,—ठर्रा पीता है...!

और मैनाके ऊपर न तो महीनोंकी शिक्षा और न सभ्य पोशाकका कोई प्रभाव पड़ सका। वह चमककर मानो फिर वही, मल्लूकी झोपड़ीवाली झगड़ालू और कठोर दिलवाली असन्तुष्ट औरत बन गई...

मगर, दौलतरामका पैतृक झब्बा—मुट्ठीमें मज़बूतीसे कर लेनेके बाद...मैनाका वह विकट रूप देखते ही दौलत-रामका नशा हिरन हो गया। वह झपाटेसे कमरेके बाहर भागा...और उसके जाते ही मैना फूल-फलकर हंसने लगी।




हंसते-हंसते उसके पेटमें बल पड़ गये...आंखोंमें मोती चमकने लगे...

मैना—मूर्ख ! सारे क़ानून जानना तो दूर, तू क़ानूनकी A. B. C. भी नहीं जानता...

कमरेको वह भीतरसे बन्द कर लेती है, और अलामारी से विलायती बोतल निकाल मद पान करती गाती है—

## गीत

*भौंरा ! निकट मत, आ रे ! मेरे अधरोंमें नशा है*
*गुन-गुन, गीत न गा रे ! मेरे अधरोंमें नशा है*
*साँवरिया, हट जा रे ! मेरे अधरोंमें नशा है*
*मधुकर, मधु बिरमा रे ! मेरे अधरोंमें नशा है*
*मैं मतवालिन प्यारे ! मेरे अधरोंमें नशा है*
*भौंरा ! निकट मत आ रे ! मेरे अधरोंमें नशा है*





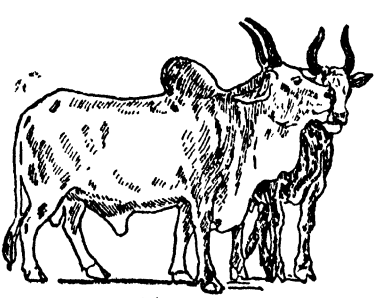
**स्थान**—तिनकापुरका जङ्गल

**समय**—दोपहर

मल्लू पसीनेसे लथपथ किसी पेड़का तना कुल्हाड़ीसे काट रहा है। वह एकाएक रुककर उदास हो जाता है।

मल्लू—मगर, क्यों? किसके लिये ऐसी तपती दोपहरीमें मैं कुल्हाड़ी और लकड़ीसे माथा मारूँ? जब वे ही नहीं रहे, जिनके लिये कमाते-कमाते अपनेको खपा देनेमें स्वर्ग नज़र आता था, तो अब क्यों? मगर, राजाराम! राजारामके लिये मुझे काम करना ही चाहिये—हे दीनानाथ!

कुल्हाड़ी पुनः चलाने लगा बेचारा!





**स्थान**—तिनकापुरका ताड़ीख़ाना

**समय**—सायंकाल

दर्जनों ग़रीब, काले और दुबले, देहाती पियक्कड़, घोर नशेमें, जो मुंहमें आता—वही बकते—

*पियक्कड़*—वह मलुआ सनक गया है—सनक...!

*पियक्कड़*—पागलके बाल सुफ़ेद हो गये, औरत-बच्चा छोड़ गये, फिर भी, वह पत्थरके राजारामको नहीं छोड़ता!

*पियक्कड़*—साला एक दिन अगर ताड़ी पी लेता तो—

*पियक्कड़*—भूल जाता—अलबत्त—भूल जाता अपने "राम" को...

*पियक्कड़*—अरे चुप! ताड़ीके साथ ईश्वरका नाम न जोड़...!

*पियक्कड़*—ऐसी तैसी ईश्वरकी! मैंने दस साल उनकी पूजा की, मगर; बराबर नुक़सान ही उठाया। अब पिछले तीन बरसोंसे मैं नाटी-इमलीके शैतानको पूजता हूँ—और बात मानो यार! मैं बहुत ख़ुश—बहुत ख़ुश हूँ!



*पियक्कड़*—मगर, सुन तो ! मलुआकी वह औरत क्या हुई जो बड़ी लड़ाक थी...?

*पियक्कड़*—जहन्नुममें गई होगी—चुड़ैल !

*पियक्कड़*—जहन्नुम नहीं; वह आजकल, सेठ दौलतरामकी रखेली बनी गुलछर्रे उड़ा रही है। मैंने देखा तो नहीं सुना है कि, वह ऐसे ठाट-बाटसे रहती है कि, अब हम-तुम उसे पहचान भी न सकेंगे।

*पियक्कड़*—तब तो भजन किया मलुआने और फल मिला मैना-को—वाह ! ईश्वर भी किसीका भाग किसीको लुटा देते हैं !

*पियक्कड़*—मलुआ बेचारा जिनके ग़ममें पागल है, वे मज़े उड़ा रहे हैं—!

*पियक्कड़*—अजी छोड़ो भी ! कहाँका चर्चा तुमने छेड़ा कलुआ-मलुआका ! सारा नशा उखड़ गया मेरा—

*पियक्कड़*—ख़बरदार मलुआके बारेमें—





पियकड़—बदज़बान बकनेवालेकी—

कुछ—ज़ुबान खींच ली जायगी! वह हमारा चौधरी है, भक्त है। ऐसे लोग दुनियाकी बातोंमें—पागल तो होते ही हैं।

कुछ—मलुआ साला ढोंगी है!

कुछ—ख़बरदार! मलुआ भक्त है—

कुछ—तुम्हारी ऐसी तैसी...!

कुछ—ऐसी तैसी तुम्हारी!

सब—मारो! मारो! मारो!!

याने, ताड़ीके नशेमें मूर्ख देहाती मर्दकियाँ चला-चलाकर, एक दूसरेको मारने लगे...।





**स्थान**—दौलतरामकी बैठक

**समय**—दोपहर

दौलतराम आँखोंपर मोतियाबिन्दवाला चश्मा चढ़ाये खाता-पत्तर देख रहा है। पास ही मुनीम—कुछ खीझा-सा खड़ा है। रह-रहकर कुछ बोलनेके लिये फड़कते हैं उसके ओठ। आख़िर वह बोला—

*मुनीम*—सेठजी!

*दौलत*—ठहरो! क़ायदे-क़ानून मैं सारे जानता हूँ। मैं मलुआ लकड़हारेका हिसाब देख रहा हूँ...। आजसे आठ बरस पहले, ब्याह करनेके नामपर, उसने मुझसे सौ रुपये क़र्ज़ लिया था। साढ़े सात सैकड़े मासिक सूदपर...

*मुनीम*—और सूदके बाद, दरसूद लगनेकी शर्त भी थी।

*दौलत*—और इस तरह ग़ैर क़ानूनी सूद देनेपर भी, मेरे क़ानूनी सौ रुपये न अदा हुए। आजतक, दो-दो, चार-चारकर उस बदमाशने महज़ सवा पाँच सौ नक़द मुझे लौटाया है।



मुनीम—अब भी उसके माथे आपके एक हज़ार एक सौ एक्यासी ग्यारह आने एक पाई निकलते हैं...

दौलत—आठ बरसमें, सौ देकर केवल पाँच सौ पानेसे तो जी चुके दौलतराम। इस मलुआने मुझे निहायत हैरान किया—!

मुनीम कुछ कहते-कहते रुका...

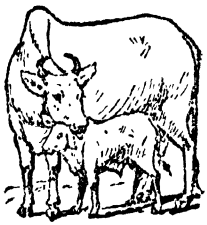
दौलत—क्या कहते-कहते रुके मुनीमजी? मैं भारी 'लाँ'—दाँ हूँ। मैंने आपके फड़कते ओठोंसे ताड़ लिया—बोलिये!

मुनीम—श्रीमान्, मैं कुछ ऐसी बात कहना चाहता हूँ, जो मेरे कहनेकी नहीं—

दौलत—क्यों-क्यों? अजी, जब मैं सारे क़ानून जानता हूँ, तब आपको मेरे सामने कुछ भी बोलनेमें क्या डर है? गरजिये! क्या मलुआके बारेमें कुछ कहना है—? मैं उसको जल्द ही बड़े घर भेजूँगा—

मुनीम—मलुआ नहीं महोदय! मलुआकी—

दौलत—बदक़िस्मती?



मुनीम—नहीं, मलुआकी—

दौलत—झोपड़ी—नीलाम करा दूँ ?

मुनीम—नहीं सेठजी ! मेरा कहना है कि, आपकी जड़में दीमक-सी लगी है मलुआकी—

दौलत—ग़रीबी ? अजी मैं सारे क़ानूनोंको, 'लॉ' की तश्तरीसे पोंछ-चाट गया हूँ। मलुआ ग़रीब नहीं, चोर है—'जाँगर-चोर'...

मुनीम—मगर, मेरा मतलब मलुआसे नहीं, बल्कि, उसकी बीवी—औरतसे है—जो, आजकल हमारे ऊपर हुकूमत करती है...

दौलत—मुनीमजी ! मलुआकी औरतका क़ानूनन् हमसे कोई भी रिश्ता नहीं। आप कैसी ग़ैर-क़ानूनी बातें बक रहे हैं ?

मुनीम—मेरी बात मानिये ! आपका सर्वनाश हुआ जा रहा है। बरसोंका जोड़ा हुआ धन, आजकल महीनोंमें ख़र्च हो रहा है...। मेरी अर्ज़ इतनी ही है कि, रोज़गारी—व्यापारीको ख़र्राच नहीं होना चाहिये।



दौलत मुनीमकी बातोंसे आज चिढ़ गया। मैना—उस पागलकी विचित्र प्रियतमा—के बारेमें शिकायत वह ईश्वरके मुंहसे भी सुननेको तैयार नहीं। फिर यह अभागा, क्षुद्र, मुनीम कौन होता है ?

दौलत—मैं सारे क़ानून जानता हूँ। कहाँ है मलुआकी बीबी ? मलुआ ख़ुद तो अपनी बीवीको, तलाशी लेनेपर भी, मेरे घरमें न पा सका और आप,—अरे विभीषण...! ग़ैर क़ानून-गो...! हटो मेरे सामनेसे...

मुनीम बेचारेके सरपर सक्रोध खाता-पत्तर फेंकता, ग़ुस्से-से कांपता-हांफता दौलत अन्तःपुरमें चला गया !





**स्थान**—दौलतरामका अन्तःपुर

**समय**—तीसरा पहर

एक जगह दोनों दासियां सक्रोध खड़ी फुसफुसा रही हैं—

*दासी १*—उसने मोटा 'रूलर' उठाकर तीन-चार धमाधम, मेरी पीठपर जड़ दिये !

*दासी २*—अभागी ! नौकरोंको गुलाम समझती है—!परन्तु मुझे भी कई थप्पड़ ऐसे लगे कि...

*दासी १*—हमारा धनी अन्धा है...

*दासी २*—यह औरत अगर तीन महीने भी इस घरमें और रहेगी, तो चारों कोने चौका फिर जायगा—चमाचम्म !

*दासी १*—चुप ! चुप ! आ रही है...

*दासी २*—( बहुत धीरे ) बूट पहने है—कंगालिन !

मैना अंग्रेज़ी कितेके शिकारी ड्रेसमें हण्टर लिये बाहर आई...

आते ही, मज़ाक़ाना ढङ्ग, मगर गम्भीरतासे, हवामें




चाबुक फटकारा कई बार उसने...
दासियाँ डरकर, काँपकर, सजग हो गईं—

*मैना*—जब देखो तभी—दोनों गप मारती मिलेंगी। तुम्हारा बाप मरे! तुम्हें क्या झख मारनेके लिये तनख़ाह दी जाती है? चल!

*दासियाँ*—आज्ञा? मेरी रानी! हुक्म?

"मेरी रानी' को स्तुतिसे मैना फूल-सी उठी वह मुस्कराई भी—

*मैना*—अभी सेठ बाहर हैं। मैं भी मोटर सीखने जाती हूँ तब तक तुम दोनों नीचेसे ऊपर, और ऊपरसे नीचेतक—सारा बंगला पहले झाड़ूसे बुहारो, फिर ब्रशसे पोंछो, फिर 'फ़िनायल' से साफ़ करो, इसके बाद—गर्म पानी-से धो डालो।

*दासियाँ*—मेरी रानी! इतना...?

*मैना*—इतना ही नहीं—थोड़ा परिश्रम और करनेसे मकान 'क्लीन' हो जायगा। गर्मके बाद ठण्डे पानीसे धोकर



तौलियाके बाद रूमालसे सारा बंगला पोंछ रखो—।
मैं अभी आई...

मेना हवामें हण्टर घुमाती—चलती नहीं, बल्कि; सुरीली
चिड़िया-सी गतिमें उछलती बाहर हो गई...

दासियोंने, सक्रोध, अपने दांतोंको ऐसे दर्रा कि, आवाज़
कमरेमें गूंज उठी—

इसी वक्त दौलतराम, मुनीमसे लड़कर मेनाको यह
ख़बर देने आया कि, जिसकी वह हमेशा शिकायतें
करती थी उसी मुनीम पाजीको दपेट-चपेट-रपेट मारा
आज उसने—

मगर, कमरेमें घुसते दासियोंके दांतोंका दर्राना सुन,
दौलतराम चसका—

दौलत—ज़मीन घड़घड़ा रही है क्या ? क्या ज़लज़ला—भूकम्प—
उहँ ! मैं क़ानूनदाँ—एक शब्दसे—! क्यों ? अभी कैसी
आवाज़ हुई ?

दासी ?—हुक्म सरकार...!

दौलत—'वह' कहाँ है ?




दासी २—रानीजी ?

दासी १—हुज़ूर, वह गई है—

कुछ बोले बिना ही आंखोंमें हंसने लगी—

दौलत—अरे, तू हँसना चाहती है—मुझ जैसे 'लॉइयर' के सामने—

दासी २—देवीजी गई हैं, अपनी नयी 'लेंशिया' लेकर—मोटर चलाना सीखने—

दौलत—किसके साथ ?

दासी १—आपहीके 'दोस्त' वह कौन सेठ हैं...?

दौलत—दोस्त...चूल्हेमें जाय ? कब गई है—? 'लीगल' टाइम बोलो—

दासी २—तीन बजकर एकसठ मिनिट...

दासी १—चार बजकर एक मिनट हुज़ूर !

दौलत मारने झपटा दासियोंको—जो तेज़ीसे भाग गईं कमरे बाहर...



दौलत—ज़रा भी क़ानून नहीं जानतीं—! दोनोंके दुरंगे बयान !

अदालत भला सुनेगी ! कभी नहीं...

...मोटर ..लेंशिया...महँगी मगर, अच्छी—अच्छी है—मैना...! क्या कहा मुनीमने...?

उहँ ! मुनीम ग़ैर-क़ानूनी है। मैं जो कुछ करता हूँ वह ठीक—ही—मगर...

...दासी ! दासी !! एक 'टैक्सी' ला ! फ़ौरन—मैं देखूँगा कि, मेरी लक्ष्मी हवा गाड़ीपर कितनी चंचल, चमकदार लगती है ! मोहनी !...





स्थान—विलासपुरकी मोटर-सड़क

समय—सन्ध्याकाल

दौलतरामकी प्रेयसीको उसका जो मित्र मोटर चलाना सिखा रहा था वह था वही ज़मीन्दार नम्बर दो—जिसने नव्वाबी जवाहरातोंके ज़ामिनपर उससे हज़ारों क़र्ज़ लिया था।

विलासी ज़मीन्दार किसी कामसे किसी दिन दौलतरामकी अनुपस्थितिमें उसके बङ्गलेपर आया था और कहा जाता है कि, उसी दिनसे, मैनाने उस 'छबीले' को पसन्द कर लिया।...

लकड़हारेकी कलकत्ता-देखी मनचली लुगाई, झक्की और युगोंसे स्त्री-विरही महाजनकी प्रेयसी, अपने नये प्रेमीके घरमें आनेके एक सालके अन्दर ही दौलतरामको नापसन्द और उस ज़मीन्दारको पसन्द करने लगी! मनचलोंका मन, जब चलनेपर उतारू होता है, तब वह हवासा—ऊंचे या नीचेकी ओर—सरकता है...

दौलतराम मैनाकी मुट्ठीमें इस क़दर आ गया था कि,



मोटरके अन्दर मैना और ज़मीन्दार ज़ोर-ज़ोरसे—
जैसे नशेमें—हँस बोल रहे थे।



एक वर्षके अन्दर ही उसने लकड़हारेकी बीबीको सब कुछ दिया। मूल्यवान जेवरात, जवाहरात, ख़ज़ानेका झब्बा, शिक्षा, स्वेच्छया व्यय या अपव्यय करने योग्य सम्पत्ति—नक़दी! मोटर, गाड़ी, नौकर—चाकर, बॉय-आया—क्या नहीं दिया, एक बाँकी औरतकी अदापर मक्खीचूस महाजन दौलतरामने! मतलब—'नारि-नयनशर-जाहि-न-लागा' ऐसा भला कौन संसारी है? फिर भी, उस ज़मीन्दारका अस्तित्व दौलतरामके मनमें काँटेसा चुभ रहा था।

इसी लिये तो—वह झपाटेसे एक टैक्सीमें मैनाकी तलाशमें शहरकी बाहरी सड़कोंकी परिक्रमा लगाने लगा।

आख़िर, किसीका कोई पता न लगा, दस बजे राततक झख मार, दौलतराम लौट ही रहा था कि, रामबाग़के सामने उसे अपनी गाड़ी...वही, 'लेंशिया'...नज़र आई।

दूर ही पर टैक्सी रोक धीरे-धीरे दूसरी गाड़ीके पीछे जा, दौलतरामने छिपे-छिपे ताड़ा कि, मोटरके अन्दर मैना और ज़मीन्दार ज़ोर-ज़ोरसे—जैसे नशेमें—हंस बोल रहे थे।



दौलतरामके काटो तो लहू नहीं!

दौलत - (अध स्वगत) ऐं—लेंशिया तो वही मेरी ही है—खुली! ऐं? यह ज़मीन्दार साला...। मैं सारे क़ानून जानता हूँ—देख लूंगा।

मगर, आज, मैनाको दूसरेके जालमें देख दौलतरामने उसको परम मूल्यवान माना। घरसे निकाल देना तो दूर उसने इस बार खानसामेकी लड़कीको जी-जानसे चाहना चाहा...

एक्सोपर लौटता वह प्रायः ज़ोरसे बुद-बुदा रहा था।

दौलत—मैना! युगों बाद मैंने तुम्हींसे दिलका सौदा किया है। अब जाओगी कहाँ सुन्दरी! मैं भी भारी क़ानून-याफ़्ता हूँ...।






**स्थान**—राम-मन्दिर

**समय**—सवेरा

खींसें काढ़ परम गम्भीरतासे मानो पत्थरके राम सुन हो रहे हैं—मल्लू उनसे बातें कर रहा है।

मल्लू—देव! कहाँ गये वे—? घटघटकी जाननेवाले राम! तुम नहीं जानते कि मेरी स्त्री और मेरा प्यारा विपता कहाँ है?

क्या दिल्लगी, तुम भी करते हो लीलाधर! तीन हज़ार रुपया तुमने अगर वक्त पर दे दिया होता, भक्तका बसा हुआ घर उजड़ न जाता...

...प्रभो! आज भी महाजन मुझे तंग करता है। उसका ऋण सूद, दरसूद और परसूदकी सीढ़ियोंसे ऊपरकी ओर झपट रहा है। प्रभो! राजाराम! जानकीनाथ!!

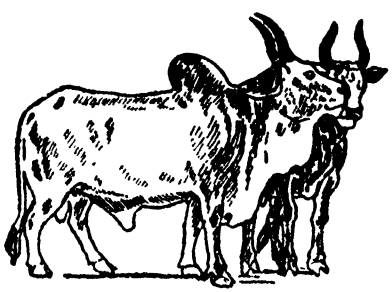
.. मैं, मलुआ, आपका मन्दिर बटोरनेवाला—भक्त, बेइज़्ज़त हो रहा हूँ नाथ!



पुलकित हो, गद्गद कण्ठसे प्रार्थना कर रहे मलुआ पत्थरके उन टुकड़ोंके चरणोंपर गिर पड़ा जिन्हें कलाकारोंने काट-तराश, एक 'रूप' दे कोई 'नाम' दे दिया था—लक्ष्मण, राम, सीता—हनूमान! और खास उसी दिन जाने क्यों लकड़हारा, अज्ञान, परन्तु विश्वासी मलुआने अनुभव किया—मानो...

मानो उसके भगवान रघुवीर रामचन्द्रदेवकी श्यामली मूर्ति मुस्करा रही थी।

हाँ—पत्थर!—विश्वास!!—क्या??






**स्थान**—दौलतरामका घर

**समय**—सवेरा

प्राइवेट ट्यूटर पढ़ा रहा है—मगर, पढ़नेको बालक विपत पूरी 'बिपत' समझता है।

वह दौड़ सकता है, मिहनत भी कर सकता है—मगर पढ़ नहीं सकता...

फिर भी, इसी बहाने दौलतरामने अपने विलास-पथके कांटे को दूर किया। क्योंकि, वह लड़का उस निर्मोहिनी मांका साथ एक क्षण—भरसक—छोड़ना नहीं चाहता था। जो हो!

*शिक्षक*—किताबें कहाँ हैं—? सारीकी सारी खो गईं? उफ़, पाजी!

*विपत*—खो नहीं गईं—फ़िज़ूल समझ मैंने मालीके बेटेको सारी किताबें दे दीं।

*शिक्षक*—और अब? बदमाश!

*विपत*—पढ़ेंगे, लिखेंगे, होंगे ख़राब...खेलेंगे कूदेंगे, आली जनाब!



शिक्षक—चुप, बदतमीज़ ! एक साल्में दो हर्फ़ भी न समझ सका। तेरा भेजा है या पत्थर...? दिमाग़में गोबर भरा है—गोबर...!

विपत—ही ही ही ही ! हा हा हा हा !!

शिक्षक—दाँत क्या निकालता है ? हरामख़ोर !

विपत—आपहीकी तरह तिनकापुरके मशहूर चौधरी, चमार चिथड़ू चाचा भी, बात-बातमें, बदज़बान बोलते हैं !

शिक्षक—पाजी ! मुझको 'चमार' बनाता है ! मारूँगा ऐसी मार कि...

ब्यूटर मारने दौड़ा, मगर; दौड़में वह विपतका मुकाबिला न कर सका। लाचार हो, उसी दिनसे शिक्षक महोदयने विपतमें ज्ञान भरनेका प्रयास बन्द कर दिया !





**स्थान** – दौलतरामका अन्तःपुर

**समय** – सूनी रात

एकान्तमें, केवल एक दीपकके सामने एक ही पलङ्ग-पर—मगर ; बेजोड़से—दौलतराम और मैना बड़े साथ ही 'पी' रहे हैं...

दौलतरामको आप मामूली कंजूस न समझिये। अब वह ज़मीन्दारके मुकाबिलेमें मनाको मुग्ध करनेकी कोशिशमें काफ़ी पीने लगा। पीते ही पीते वे प्रलाप करने लगे—

दौलत – सुन्दरी ! क़सम 'क्रिमिनल...कोड' की ! तुम्हारे लिये मेरा प्रेम मधु-सा है—उस शहद-सा जिसको बनानेमें कहाँ-कहाँसे रस या माल या तत्व...

मनाने भी मटककर 'बनाया' अपने 'गाँठके पूरे' ग्राहकको—

मैना—और सुनो ! तुम्हारे लिये मेरा प्रेम है—फागुन मासके बादल-सा ; रंगीन, सरस !



दौलत—मगर; मैं समझता हूँ सुन्दरी ! मुझे धोका ? मैं कहता हूँ दिल न दो, मगर; धोका देनेकी तो कोशिश न करो। मैं सारे क़ानूनोंका किताबिस्तान हूँ। हिन्दुस्तानमें...फागुनमें बादल कहाँ ?

...सुनो ! प्रेयसी ! मैं तुम्हें...

मैना—लेकिन जल्दी...'गो, आन...!'

दौलत—मैं तुम्हें प्यार करता हूँ—

मैना—एवमस्तु...मगर, 'जी जान' और जोड़ लो अपने कोरे प्यारमें। रूठो नहीं—सरकार, महाजन ! मैं तो आपकी ज़र-ख़रीद बाँदी हूँ। सूद या ब्याज हूँ, मैं आपके भयंकर मूलका...

अब नशा घनघोर और दोनों पागल बेहोशीके क़रीब आ गये...

दौलत—मैना ! बात-बातमें बातें न बनाओ ! मैं सारे क़ानून जानता हूँ...

मना भी दबनेवाली कबको—तड़प पड़ी वह।

# चुम्बन

मैना—दौलतराम ! मैं तुमसे लाख दर्जे अच्छा उस लकड़हारे-को मानती हूँ जिसका मामूली नाम है—मल्लू...

दौलत—ऐसा न कहो, प्राणप्यारी ! मेरा सुकुमार प्रेम-प्रसून इन बातोंकी आँचसे झुलस जायगा...

मैना—क्या झुलसेगा ? तेरा मुँह...! पापी ! मारूँ बासी झाड़ू तेरे ऐसे नामर्दको...! खड़ा रह...शराबी !

एकाएक मैनाका 'स्वभाव' उत्तेजित देख 'पलायन' मन्त्रको मन-ही-मन जपते वहांसे भाग जाना ही हित-कर समझा दौलतरामने—

रस-भंगसे अभागेका सारा नशा नष्ट, मज़ा किरकिरा हो गया !





**स्थान**—दौलतरामका नज़रबाग़

**समय**—सवेरा

बाग़की क्यारियोंमें हिरनके बच्चे-सा कूद-कूदकर विपत फूल चुन रहा है। वह कोई गीत भी गुनगुना रहा है—

## गीत

*सुमन चुन सुकुमार,*

*मैं गूथूँ नव-हार—मनके*

*शृंगार तब सजत पिया हृदय... !*

*छोड़े कुसुम—डाल, कोकिला छोड़के*

*विकल हो वेधसे—तब सजत पिया हृदय··· !*

विपतके गानेकी आवाज़से खिंच, बाग़का बूढ़ा माली उसके पास आ गया—

*माली*—ओ बाबूजी ! फ़िज़ूल ही फूलोंको न तोड़िये। इनमें भी जान होती है—जीने दीजिये बेचारोंको...!




विपतने मुड़कर मालीको देखा—फिर मज़ाकिया ढङ्गसे
उसने सलाम किया उस बूढ़े को—

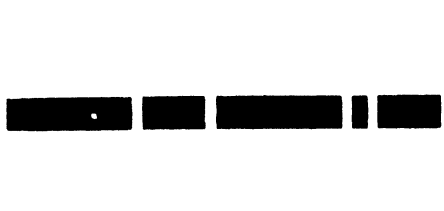
*विपत*—तुम्हारी दोनों बातें ग़लत हैं चाचा ! पहले तो मैं तिनकापुरके ईमानदार मल्लू लकड़हारेका बेटा हूँ—'बाबूजी' नहीं। और दूसरे, फूलोंको फ़िज़ूल ही नहीं एकट्ठा कर रहा हूँ...

*माली*—भैया ! आप सेठजी 'की'...'के'—'बाबूजी' नहीं तो क्या है ? मैं तो आपको महाजनका बेटा मानता हूँ। अच्छा फ़िज़ूल नहीं, तो क्या काम है फूलोंका ?

*विपत*—इनसे एक हार—बाहारदार—तैयार करूँगा...

*माली*—खेलवाड़के लिये—छिः ! भैया ! हम हिन्दुओंमें खेलवाड़ या शौकके लिये नहीं, केवल देवताके पूजनके लिये फूल चुने जाते हैं...

*विपत*—मुझे भी वैसा ही कुछ काम है चाचा ! जिसे हिन्दू लोग पसन्द करते हैं। मैं भी पूजा करूँगा...





*माली*—किसकी ! ह-ह बाबूकी बातें ! बड़े आदमियोंके बच्चे जन्मते ही पिटिर-पिटिर बोलने लगते हैं ।

*विपत*—झूठ नहीं चाचा ! मेरी माँको ताज़े फूल और अच्छे गजरे बहुत भाते हैं । तुम्ही तो रोज़ आजकल बाज़ारसे हार ख़रीद लाते हो...?

*माली*—हाँ...। क्योंकि, बाग़में फूल कम होते हैं। क्योंक रानीजीको मेरे बनाये गजरे नापसन्द आते हैं...

*विपत*—इसीलिये तो—चाचा ! आज एक हार मैं ख़ुद बनाकर अपनी माँको देना चाहता हूँ—। मैं बहुत—बहुत बढ़िया गजरे बनाता हूँ—हाँ...

*नेपथ्य*—"अबे गजरेके बच्चे !"

दौलतरामकी आवाज़ आई। दोनों चौंक पड़े। तबतक वह आ ही धमका...

आते ही उसने विपतका एक कान ज़ोरसे ऐंठा। मगर, वह बालक दौलतरामके भयसे डरा नहीं...

*विपत*—कान छोड़ ! कान छोड़ दे—बदमाश !



दौलत—गाली !—गाली देगा, तो नोंच लूँगा तेरा कान...! पाजी ! मैं भारी क़ानूनी हूँ...

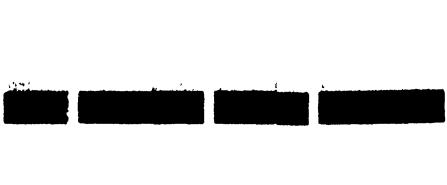
विपत—तू बदमाश ही नहीं, बुज़दिल भी है। अपने बराबरके किसी मर्दका कान पकड़ता, तो, अभी तुझे आटे-दाल का भाव मालूम हो जाता...

विपतकी बदज़ुबानीसे दौलत हमेशा खौफ़ता और वह बालक हमेशा उसको चमकाया करता, इसीलिये; मौक़ा पाते ही दौलतराम हमेशा उसको दो-चार चांटे सहेज देता था। इस वक्त भी वही हुआ। लड़केको चपतियानेके बाद वह मालीपर बिगड़ा—

दौलत—हरामख़ोर ! मैं सारे क़ानून जानता हूँ। तू इस लड़केके साथ गप क्यों हाँक रहा था अभी !

माली—हुज़ूर माफ़ी...

दौलत—बहुत माफ़ी हो चुकी—। दूसरी बार कुसूर करनेपर कोई भी क़ानून या अदालत मुजरिम को नहीं माफ़ करती...। जानता नहीं ?



*माली*—जानता हूँ सरकार...!

*दौलत*—मैं सारे क़ानूनोंकी 'काकटेल' हूँ—देख ! सुन ! समझ !

दौलतरामके प्रत्येक गर्जन-तर्जनपर बेचारा बूढ़ा माली
काँपता रहा...

*माली*—हुज़ूर...

*दौलत*—मैं 'गवर्नमेंट गज़ट' की क़सम खा, बरखे—लॉ कहता हूँ—यह लड़का पढ़-लिख नहीं सकता।

*विपत*—तो फिर, किसीके बापका क्या जाता है ?

दौलतने तरेरकर ताका विपतकी ओर और आंखोंहीसे,
एक चमकमें, बतलाया कि, अभी उसको अपने कर्मका
कटु फल भोगना पड़ेगा...

*दौलत*—माली ! मैं हुक्म देता हूँ—और मेरा हुक्म क़ानूनके फ़तवे-सा अटल है—आजसे, अभीसे, इसी मिनिट, सेकेण्ड, पलसे,

*विपत*—पागलसे न बातें करो—माली चाचा ! इसको पिछले ग्यारह महीनोंसे मेरी माँने पागल बना रखा है। मेरी



माँ बंगालेमें रह चुकी है न—वह आदमीको भेड़ा बनाना जानती है...हाँ, चाचा !

*दौलत*—माली ! मेरी बात सुन, मैं कानूनी-फ़ितना हूँ। आजसे, इसी मिनिटसे, इस छोकरेके बच्चेसे तू बाग़की सिंचाई-का काम लिया कर !

...कुएँसे पानी निकाले यह, सरपर रखकर बालटियाँ या घड़े क्यारियोंतक लाये यह...

*नेपथ्य*—"विपता ! अरे तेरा मूँ जले ! कहाँ तू मर रहा है...?"

मैनाने पुकारा...और माँकी आवाज़ विपतके कानमें जादू-सी गयी, देव-वाणी-सी ! अभी तक वह दौलतकी उपस्थितिसे ज़रा सुस्त था, मगर; मैनाकी पुकारपर—अहा !—वह तीर-सा झपटा आवाज़की तरफ़, दौलत-रामको ठेंगा दिखाकर चिढ़ाता हुआ—

*विपत*—मोट खिंचाओ इस मोटेमलसे माली चाचा—मोट !

विपतके भागते ही मुनीम आया। ज़रा परीशान...

*दौलत*—क्या हुआ—हुई भेट...?



मुनीम—हुई तो, मगर...

दौलत—क्या मगर; जल्दी बोलो !—मैं क़ानूनी आदमी, बे-फ़ुर्सत रहता हूँ...

मुनीम—ज़मीन्दार ....साहबने आनेसे इंकार कर दिया...!

दौलत—नामंज़ूर, किस दफ़ासे ? किस क़ानूनसे ?

इसी वक्त नौकर आकर ख़बर देता है...

नौकर—सरकार ! चमनपुरके ज़मीन्दार साहब आपका इन्तेज़ार कर रहे हैं ..

मुनीम—( साश्चर्य ) ज़मीन्दार...!

दौलत—ज़मीन्दार . ! आया...? क्यों मुनीमजी ? आप तो कहते थे उसने नामंज़ूर कर दिया...! आप हमेशा बातें समझनेमें चूक जाते हैं...। मैं सारे क़ानून जानता हूँ ...।





**स्थान**—दौलतरामकी बैठक

**समय**—११ बजे दिन

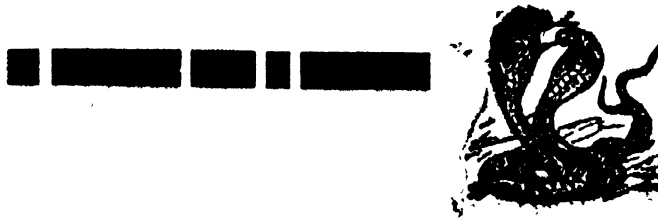
दौलतरामकी बैठकमें ज़मीन्दार टहलता हुआ, रुककर एक चित्रकी तरफ़ तरेरता...चित्र है मेनाका—दौलतके सारे दौलतख़ाने—एक-एक कोठरीमें—मेनाकी तस्वीरें सजी हैं...

दौलतराम जिस वक़्त कमरेमें दाख़िल हुआ, उसने ज़मीन्दारको मेनाके चित्रके सामने ही पाया...

*दौलत*—जनाब! आदाब! मगर; किसीकी औरतकी तस्वीरको इस बेशर्मीसे ताकना क़ानूनन बदतमीज़ी है।

*ज़मीन्दार*—मगर; परवर ग़रीब! अगर किसीका किसीकी औरतसे किसी तरह कोई राहो-रस्म हो, तो?

*दौलत*—मैं कहता हूँ, अक्सर इण्डियन लोग क़ानूनको भूल जाते हैं। ऐसी भाषामें, ऐसे व्यक्तिके सामने गुफ़्तगू करना जिसकी मुट्ठीमें कोई ऐसी ज़बरदस्त चीज़ हो, जिससे ज़मीन्दारियाँ ख़त्म हो जायँ—गुनाह है—गुनाह!



ज़मीन्दार भी दबा नहीं। मानो दौलतरामसे लड़नेके लिये नशेमें वह आया था।

*ज़मीन्दार*—ठीक है। मगर; ऐसे ज़मीन्दारोंपर ताने कसना भी उज़बकई है, जिनके हाथोंमें मामूली महाजनोंकी चुल-बुली नकेलें रहा करती हैं...

*दौलत*—देखिये, जहाँ व्यवहार बनाये रखना हो, वहाँ नीरस चर्चा क़ानूनन नाजायज़ है।—बैठ जाइये। आपसे कुछ ज़रूरी बातें करनी है—क़ानूनी ..

*ज़मीन्दार*—मगर, जनाब! मुझे इतनी फ़ुर्सत नहीं...। आजकल मैं अपने एक 'लेडी फ़्रेण्ड' को मोटर सिखानेमें बुरी तरह मशगूल हूँ ।

*दौलत*—'लेडी फ़्रेण्ड'—मैं समझता हूँ। सारे क़ानून मेरे फाँके हुए हैं...। अब मुद्देपर आइये!—मैं आपको नोटिस देता हूँ कि, आप अपने जवाहरात ले जाइये—और दे जाइये मेरे रुपये, मैसूद।



*ज़मीन्दार*—रुपये मै-सूद? ह-ह-ह! जब किसीकी अक़्ल घास चरनेपर उतारू होती है, तब; वह ऐसी ही बातें करता है। अजी जनाब! मैं रुपये भरपाई कर गया... और ले गया अपने जवाहरात...

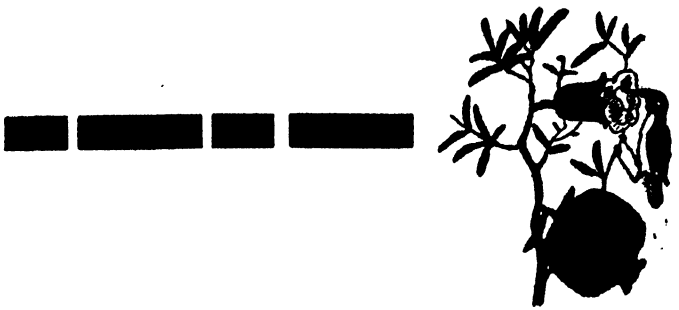
दौलतराम चपट, कुछ समझ ही न सका। क्या ज़मीन्दार नशेमें है? क्या वह अब उन रत्नोंको टके सेर बिक जाने देगा—छुड़ा न सकेगा?

*दौलत*—जनाब! तेज़ न बोलिये! मैं सारे क़ानून, सारे संसारसे पहले जानता हूं। आप ज़रा साफ़ बोलिये!

*ज़मीन्दार*—साफ़ इससे और क्या कहूँ कि, अब मेरा-आपका देना-पावना कुछ भी नहीं है। महीनों हुए, रुपये देकर अपने सारे जवाहरात मैं ले गया। अगर आपको मेरे कहनेमें सन्देह हो, तो, लाइये! दीजिये मेरे रत्न। मैं दोबारा रुपये दूँगा।

चमककर दौलतरामने पुकारा...

*दौलत*—महँगुआ! मुनीमजी! माली! मैना! आह...मैं ख़ुद



जाता हूँ और जवाहरात तिजोरीसे लाकर आपकी आँखोंके सामने ढेर कर देता हूँ...। ज़रा ठहरिये।

दौलतराम एक ओरसे मकानके अन्दर ज्योंही गया त्योंही दूसरी ओरसे मैना आई—

*मैना*—किसने...मुझे पुकारा...? अह! तुम...वह कहाँ है? वही 'मोटा महाजन'...!

*ज़मीन्दार*—गया है मेरे जवाहरात तिजोरीसे लाने—हा-हा-हा-हा! जवाहरात!

*दोनों*—( हाथ मिला इशारे करते ) जवाहरात!

*मैना*—चलो!

*ज़मीन्दार*—वह आता होगा...

*मैना*—हैरान होने दो...चलो! हम मोटरके मज़े लें...!






**स्थान**—दौलतरामका कोषागार

**समय**—दोपहर

दौलतराम दरवाज़ा खोल भीतर जा चारों ओर तिजोरियों और फ़ौलादी सन्दूकोंकी भीड़ देख मन-ही-मन फूल उठता है...

*दौलत*—मूर्ख मुनीम कहता था—मैनाके ख़र्चनेसे मेरी दौलत घट गयी! हिः! उसको पता नहीं कि, असिल ख़ज़ाना मेरा क्या है। इसको मैनाको छोड़ दूसरा कोई जानता ही नहीं। मैं मामूली क़ानूनी नहीं हूं—(एक सेफ़ खोलता) इसमें सन् '१ की गिन्नियाँ हैं एक हज़ार एक... मगर, सेफ़ खोलते ही वह चौंका। एक भी गिन्नी उसमें नहीं थी। उसमें थी महज़ एक तस्वीर—मैनाकी!...

*दौलत*—ऐं—! मैं सारे क़ानून जानता हूँ—गिन्नियाँ गईं कहाँ...? (दूसरे सेफ़की तरफ़ जा) इसमें अकबरी मुहरें रखी हैं, पाँच हज़ार—(खोलते ही चौंका) अरे! यह भी ख़ाली... महज़ तस्वीर...! (तीसरी तिजोरीके पास जा) इसीमें मेरे



लाखोंके रत्न भरे पड़े है ( खोलता है और केवल एक तस्वीर मैनाकी पाता है—मारे क्रोधके वह तस्वीरको बाहर फेंक देता है )

क्या ?? सारा ख़ज़ाना साफ़...! क्या ज़मींदारको उसने मेरा सारा माल सौंप दिया ? मैं देख क्या रहा हूँ ?? अपना सर्वनाश...! मैना ! मैना !

वह ख़ज़ाना घर खुला ही छोड़ मैनाकी तलाशमें अन्तः-पुरमें झपटा भागा। वहां दासियोंसे पता चला कि, मना मोटर सीखने बाहर गई है...

हाथ मलता, किंकर्तव्य विमूढ़ दौलतराम बैठकमें लौट आया, मगर : यहां भी सन्नाटा—! ज़मींदार नदारद...अब भावोंसे दौलतराम भभक उठा..

—महँगुआ ! मुनीमजी ! दौड़ो ! बचाओ ! मैं लुट गया...!! लाओ मेरी क़ानूनकी किताबें—दावा, डिग्री, कुर्की—दौड़ो ! दौड़ो !!

हर तरफ़से दौलतरामके नौकर दौड़ते आते ..






**स्थान**—विलासपुरके बाहर उपवन

**समय**—२ बजे दिन

मोटरमें मैना और ज़मीन्दार एक पेड़की छायामें आये..
गाड़ी रुकते ही मैनाने ज़मीन्दारके गलेमें बाहें डाल दीं

*मैना*—प्यारे! हम कब यहाँसे कलकत्ता भाग चलेंगे?

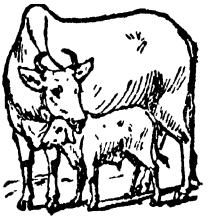
*ज़मीन्दार*—पहले दौलतरामका सारा माल क़ब्ज़ेमें कर लें—तब...

*मैना*—अब उस बन्दरके पास कुछ भी नहीं है।

*ज़मीन्दार*—झूठ! अभी उसके पास लाखोंकी सम्पत्ति और है...मैं बख़ूबी जानता हूँ।

*मैना*—मेरी बात मानो प्यारे! भला मैं तुमसे झूठ बोलूँगी... अब उसके पास कुछ भी नहीं है।

*ज़मीन्दार*—मैं नहीं मान सकता। अभी ज़रा पहले वह मुझे सुना रहा था कि, उसके पास भारी ख़ज़ाना है...। प्रेमके नामपर मैना! मुझसे तो झूठ न बोलो...



मैना—कैसी बातें—! प्रेमका बहाना—तुमसे...प्यारे !

मैना सप्रेम ज़मीन्दारके सन्निकट हो गई।

ज़मीन्दार—दूर रहो ! झूठ बोलनेवाली नारीसे मेरी नाड़ी काँपती है।

अब मैना बर्दाश्त न कर सकी...

मैना—ज़ुबान सँभालो ! बार-बार मुझ जैसी औरतको झूठी कहते हुए तुम्हें डरना चाहिये...

ज़मीन्दार—क्या ? डरना...! तुझसे...! देखो ! मैं नशेमें रहता हूँ आजकल चौबीसों घण्टे...ख़ानसामेज़ादी !

मैना—हरामज़ादा...!

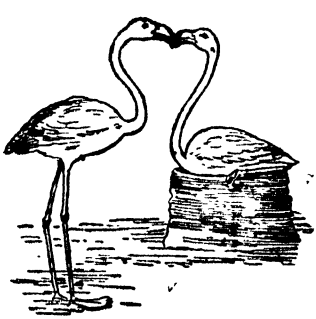
ज़मीन्दार—ऐसीतैसी तुझ-सी बदमाश वेश्याकी ! औरत जानकर छोड़े देता हूँ, नहीं तो, 'हरामज़ादा' कहनेवालीकी हड्डी-पसली तोड़ देता...। चल ! तुझे तेरे बन्दरके पास छोड़ दूँ...। आजसे तेरा-मेरा—'बस' हो गया...चल...!

# चुम्बन

ज़मीन्दारने तेज़ीसे मोटर चलाई, 'दौलताबाद' की तरफ़...।
मैना, लगी गालियाँ देने—कोसने—उसको—

मैना—तेरा—तेरा तो मैं मुर्दा निकलवाकर छोड़ूंगी—अरे! मुझे मामूली औरत न समझ! तूने मेरी इज़्ज़त ली, धन लिया—लाखों, अब तू जायगा कहाँ? मैं तेरा ख़ून करूँगी—तेरी ज़िन्दगी दुश्वार कर दूँगी...

मगर ज़मीन्दार अब चुप था। वह मैना-सी गाहियों छोकरियोंको चरा चुका था—काम हो जानेके बाद "प्रेम" की माला वह नहीं जपता।





**स्थान**—दौलतरामका अन्तःपुर

**समय**—सायंकाल

बाग़की तरफ़ नज़र आनेवाला जो झज्जा है उसीसे सटे 'कमरे' में दौलतराम परम असन्तुष्ट तेज़ीसे टहल रहा है। वह ज़ोर-ज़ोरसे सांसें ले रहा है—एकाएक चमककर पुकारा उसने—

*दौलत*—दार्सी ! दार्सी !!

दोनों दासियां एक साथ ही अन्दर आईं।

*दौलत*—देखो ! मैं सारे क़ानून जानता हूँ—तुम्हारी तरफ़से ज़रा भी मुलाहजा; संकोच हुआ कि, मैंने तुम्हें जेल-ख़ाने रवाना किया...। भूलोगी तो नहीं ?

*दासियाँ*—कभी नहीं, सरकार !

*दौलत*—सारे गहने-कपड़े उतार लेना—पूरी बेइज़्ज़तीसे—(मोटरकी आवाज़ आई) ले ! आ गई नवाबज़ादी...

झज्जेके पास जा छिपकर दौलतरामने देखा—फाटकपर मोटरसे पहले ज़मीन्दार उतरा, फिर मैना। मैनाके बंग-



लेमें दाख़िल होते ही ज़मीन्दार मोटर लेकर चला गया।
मगर; दौलतरामकी क्रोधाग्निमें घी डालकर...! कमरेमें
लौट वह बकने लगा—

*दौलत*—बदज़ात औरत—ज़रा भी क़ानून नहीं जानती—
अन्धोंके दाम और यारोंसे काम...

तब तक तो 'दासी! दासी' पुकारती, उछलती-कूदती
मैना आ ही गई—

*मैना*—दासी! दासी! अरे—इनके कान फूट गये क्या?
मारूँगी थप्पड़, कि आँखें बाहर निकलकर नाचने
लगेंगी...

मगर; दासियां तो दौलतरामके इशारेसे और पुराने
रागसे आज पागल थीं—

*दासी १*—दूर रह!

*दासी २*—हाथ उठाना हँसी-ठट्ठा नहीं है—!

*दासी १*—हाथ उठानेवालीका, हम भी मुँह तोड़ देंगी—
मुहँ...!



दासियोंका दौलतरामके सामने ऐसा व्यवहार मैनाको परम विचित्र आज मालूम पड़ा—इस बार तावसे वह उसीके सामने हुई—

*मैना*—क्या ? कमीन मज़दूरनें मेरा अपमान कर रही हैं और तुम मर्द होकर चट्टानकी तरह ठण्डे और जड़वत् —!

अब दौलतरामका आवेश भी रुक न सका। वह भयानक मुंह बना बोला—

*दौलत*—अपने 'मर्द' को तो तुमने नीचेहीसे लौटा दिया...

मैना इस आकस्मिक परिवर्तनको एकाएक समझ न सकी—वह समझ न सकी कि उसका शिकार मरनेसे पहले ही कैसे होशियार हो गया—

*मैना*—क्या ?

*दौलत*—मैं तो नामर्द हूँ. सुन्दरी ! तुम्हारे चोचलोंमें फँसकर जो नाचे वह मर्द हो ही नहीं सकता...

*मैना*—क्या बकते हो—हो क्या गया ?




दौलत—उस उल्लूके पट्ठेके साथ मोटर गाड़ीमें 'जो' तुमने किया है वही हुआ है—और क्या।

मैना—कैसी बातें—मेरी गाड़ी बिगड़ गयी थी—इसी लिये—

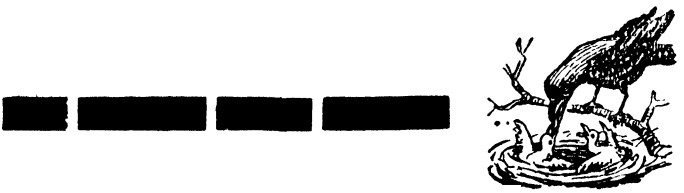
दौलत—मेरा दिमाग़ बिगड़ गया है—दासियो! निकालो इस नागनको—निकालो इस शनीचरीको—निकालो इस लुटेरनको! उतार लो मेरे सारे गहने इसके तनसे और इसकी कलंकित-कायापर एक चीथड़ा लपेटकर निकालो! निकालो!!

पहलेहीसे तैयार दासियाँ झपटीं...

मैना—ख़बरदार! दूर ही रहना, नहीं तो मैं किसीकी आँखे बाहर निकाल लूँगी।

दासियाँ—अरे चल, चुड़ैल! अब तेरी सुनता कौन है...?

मज़बूत दासियाँ ज़ोरसे पकड़ और झकझोर कर मैनाके तनसे गहने चुनने लगीं। और अब ख़ानसामेकी लड़कीका दिमाग़ चकराया...नशा उतरने लगा!



मैना अपमान ! बेइज़्ज़ती मेरी न करो—मैं उतारे देती हूँ—मैं आप ही—मेरी माँ ! हाय रे!! बचाओ कोई—बेटा विपता—अरे तेरा मुँह जले...!

नेपथ्य—माँ—माँ ! आता हूँ...

न जाने कहाँसे तीर-सा झपटता वह विपत आया ! उसने एक नज़रमें देखा उसकी माताका अपमान हो रहा था।

मैना—पार्पा ! मेरी बेइज़्ज़ती—हाय रे ! मैं—रानी...बच्चा—बच्चा मुझे बेटा !

विपत—छोड़ो ! छोड़ो !

वह दासियोंपर टूट पड़ा और पीटने लगा उन्हें। मगर, दौलतरामने बाधा दी—उसने मज़बूतीसे विपतको काबूमें कर ज़मीनपर पटक दिया और रस्सीसे उसके हाथ-पाँव बाँध दिये—

तबतक दासियोंने रोती मैनाके सारे गहने-कपड़े उतार उसे एक मैला चीथड़ा मात्र पहना दिया।



दौलत—निकालो! मुँह काला करो चुड़ैलका!

दासियां मैनाको घर बाहर घसीट ले चलीं।

मैना—मेरी माँ—बेटा! मेरा लाल!

वह निकाल दी गई। अब दौलत विपतपर टूटा। बांध बालकको कनेठी दे—दो लात लगा वह बोला—

दौलत—पाजी! तेरे बापने मेरे रुपये हज़म किये—माँने भी धनको पानीकी तरह बहा दादाके मालपर फ़ातहा पढ़ा—अब सारी कसर मैं तुझसे निकालूँगा। ज़िन्दगीभर ग़ुलामी कराते-कराते तेरे ख़ूनको पानी कर दूँगा—बदमाश! मैं सारे क़ानून जानता हूँ।

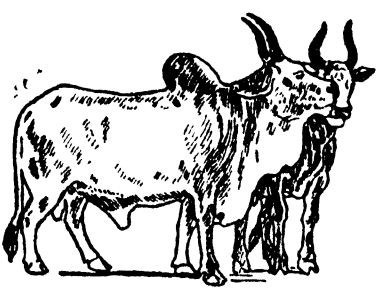
विपत—माँ! माँ!! छोड़ दे मुझे। मैं अपनी माँके पास जाऊँगा—

विपतको बंधा ही छोड़, दर्वाज़ा बन्दकर दौलतराम क्रोधमें हांफता बाहर हो गया! जाते-जाते—



दौलत——मर अब उस राक्षसीके लिये—पाजी! अब तेरी माँ नरक भोगेगी नरक—कोई क़ानून उसे अब बचा नहीं सकता...

विपत - आह! हाय रे बदमाश! छोड़ दे मुझे!...





गजरा बेचनवाली—तू कहाँ चली ?





**स्थान**—दौलतरामके घरके सामने सड़क

**समय**—सवेरा

हमारा ख़्याल है, दौलतरामके घरसे निकलते ही मैनाके लिये संसारमें कहीं शरण न रही...

ज़मीन्दारने सारा माल 'खींचकर' पहले ही उसको अस्वीकार कर दिया था...




मल्लू हज़ार सीधा होनेपर भी उस कुलटाको अब क्यों टिकायेगा अपनी छातीपर ..।

दौलतके कारण बिलासपुरमें विख्यात वह इतनी हो गई थी कि भीख भी असम्भव मालूम पड़ी उसे। वह रात तो उसने दौलतरामके फाटकपर बेहोशीमें बिताई—क्या करे यह वह समझ ही न सकी।

और दूसरे ही दिन होली थी। एक साल पहले इसी हालीपर अपने सीधे पतिको ग़रीब होनेकी वजहसे छोड़ दौलतके मोहमें मैना बिलासपुर चली आई थी। और एक ही सालमें उसका मोहक सपना सजा बजा और टूट भी गया!

सवेरे जागते ही वह चिल्ला उठी...

मैना—सुख! सुख! मेरे ऐशोआराम!

होलीकी ख़ुशीमें उठ-भोर घूमनेवाले कुछ लड़कोंकी नज़र मैनापर पड़ी।

लड़का १—पगली है...

लड़का २—बच्चोंको मारकर खा जाती है!



लड़का ३—मारो ! पत्थरसे मारो !!

अज्ञानी लड़के भी उस अभागिनीको पत्थरसे मारने लगे जिसे दुर्भाग्यने वज्रसे मारा था...

वह भागी—भागी बेतहाशा...।

मगर; कुछ ही दूरपर अनेक मस्त जवान नादान भी खड़े थे—होलीकी खुशीमें। मैनाको देखते ही वे रसीले हो उठे—

एक—अ र र र र र र कबीर !

दो—अरे कोई छबीली, रसीली आ रही है—होली है !

एक—फिर तो—

क र र र र र र कबीर !

*अरे, गोरी देना, कोरी देना, भोरी देना राम !*
*रात दिना बरजोरी देना—हाँ देना बे-दाम...*
*दयामय नाम तुम्हारा, माँगना काम हमारा !*

मगर; मैनाके जलेपर नमकका काम किया नौजवानोंके उत्साहने। मारे लाजके उसने घूंघट करनेके लिये वस्त्र-

को खींचा तो वह फटकर रह गया। वह पुनः भागी होलिहारोंसे बचनेके लिये...

मगर उन्होंने पुनः जा घेरा उस मनचलीको—

एक—कहाँ चली ? गजरा बेचनवाली तू कहाँ चली ?

मैना—दूर—अभागो !—पाजियो !—दूर !

दो—फूलोंका हार—प्यारी !

मुझको पिन्हा दे !

तब तो खिलेगी मेरे दिलकी कली !

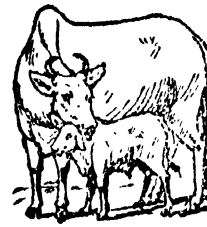
मैना जान छुड़ा और दौड़कर उन पागलोंसे दूर—न जाने किस ओर भागी—रोती हुई—

और होलिहारोंका कर्कश स्वर उसका बराबर पीछा करता रहा।

*कहाँ चली री ! कहाँ चली ?*

*जोबना बेचनवाली—तू कहाँ चली ?*





**स्थान**—दौलतरामका घर

**समय**—तीसरा पहर

बीस-बाईस घण्टेसे विपत बंधा है, उसकी कोई ख़बर लेनेवाला नहीं। तरह-तरहसे उसने बन्धन काटनेकी कोशिशें कीं, मगर; सफल न हो सका। अन्तमें लाचार हो वह दांतोंसे रस्सी काटने लगा।

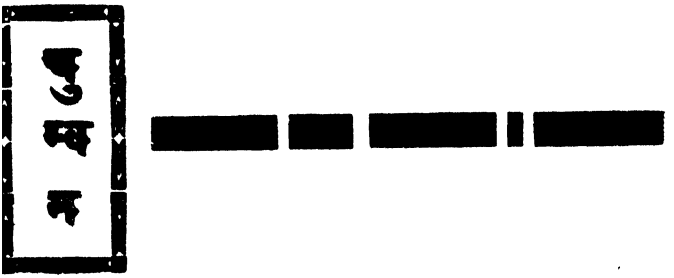
कई घण्टेके परिश्रमसे थक जानेके बाद आख़िर वह अपनेको मुक्त करनेमें समर्थ हुआ।

फिर तो, आनन-फाननमें छज्जेसे नीचे आ वह, सड़कपर अपनी माताकी तलाश करने लगा।

*विपत*— माँ ! अम्माँ !! तू कहाँ है ??

और विपतके भागनेके थोड़ी देर बाद दौलतराम जब कमरेमें आया तो लड़का नदारद ! ओह ! आप समझ और हम समझा नहीं सकते...दौलतरामके उस आक्रोशको...।

*दौलत*— यह भी भागा—अरे मलुआ ! मैं सारे क़ानून जानता



हूं। सारी शैतानी तेरी है। बाबा उड़ा ले गया—बच्चा भी और साथ ही मेरी लेई—पूँजी भी...। अब तो मैं एक न सुनूँगा -। आज ही सालेसे अपने सारे रुपये लूंगा—। लेकर दम लूँगा! मैं भारी 'लॉ-दाँ' हूं।

जल्दीमें कपड़े पहन डगडा ले, झपटा वह तिनकापुरकी तरफ...।





**स्थान**—बिलासपुरका बहिरंग

**समय**—सायंकाल

मलआके राजारामके टूट मन्दिरसे थोड़ी दूरपर एक पुराने पीपलके पेड़के नीचे अर्द्ध-विक्षिप्त मैना बुखारसे कांपती बक रही है—

*मैना*—भाग ! भाग, अभागिनी ! सुखोंसे दूर भाग ! तेरा सुन्दर सपना टूट गया—नशा जमा—उतर गया.....
आह ! ओह ! बुखार—ज्वर—तापसे मैं मरी—मेरा लाल विपता—अरे तेरा मुँह जले !

*नेपथ्य*—माँ ! अम्माँ !! तू कहाँ है ??

और विपत झपटा आकर अपनी मांसे लिपट गया।

*विपत*—माँ—अम्माँ...

*मैना*—बेटा ! मेरा लाल ! हीरा !!

*विपत*—ऐं ! गरम—क्यों...? माँ, तेरी देह गर्म क्यों है ? ओह !



मैना—मेरा अपमान हुआ है—'इन्सल्ट !' मेरा मिजाज़ तोड़ दिया गया। मेरे बच्चे ! मैं मर गई।

विपत—ऐसा ना—ऐसा न बोल माँ ! चल उस टूटे मन्दिरके पीछे चलें—यहाँ हवा और ठण्डक है...

सहारा देकर वह ज्वराक्रान्ता मैनाको टूटे मन्दिरके पीछे एक अधटूटे बरामदेमें ले जाता है—

मैना—मेरी माँ ! मैं मरना चाहती हूं...!





**स्थान**—मल्लूकी झोपड़ी

**समय**—सवेरा

आंख मलता झोपड़ी बाहर आ मल्लू पड़ोसियोंको पुकारता है; प्रसन्नतासे उछल-उछलकर—

*मल्लू*—देवन ! अरे हे सुन्नर ! रामूकी माँ ! जरा एक झाड़ू तो दो—घर साफ़ करना है...

*पड़ोसी*—क्या है—? आखिर है क्या मल्लू राम ?

*मल्लू*—पण्डित कहते है, सवेरेका देखा सपना सच होता है—है न ?

*पड़ोसिन*—क्या सपना देखा भैया !

*मल्लू*—ओह ! जै राजारामकी ! देखा मैंने कि, प्रभूने मुझे पुष्कल—बहुत—रुपया दिया—और देखा, मेरी 'वह' और मेरा विपता दोनों लौट आये हैं। उनके आनेसे मेरी दीवार, आँगन घर सभी सुखोंसे सिहर-सिहरकर हँस रहे हैं...!




पड़ोसिन—ले झाड़ू बेटा! चल मैं भी सफ़ाईमें तेरी मदद करती हूँ—

मल्लू बुढ़ीसे झाड़ू ले झोपड़ीमें घुसा—

मल्लू—नहीं माँ! एक सालसे विपता और उसकी माँका भी हिस्सा अकेले ही खा-खाकर मारे मुटाईके मैं मटिया-बुर्ज बन गया हूं—तू रहने दे!

उत्साहसे गीत गाता झोपड़ीमें मल्लू झाड़ू देने लगा, गीत उसका बाहरसे सुनाई पड़ता था—

## गीत

*बालम आओ! हमारे गेह रे...*

*तुम बिनु दुखिया देह रे...!*

*सब कोई कहे तुम्हारी नारी,*

*मो कहँ अति सन्देह रे!*

*एकमेक हूवै सेज न सोई,*



*तब लागी कैसो नेह रे !*

*अन्न न भावे, नींद न आवे,*

*गृह, बन, धरे न धीर रे !*

*ज्यों कामीको कामिनि प्यारी,*

*ज्यों प्यासे को नीर रे !*

*है कोई ऐसा पर-उपकारी,*

*पिय सों कहे सुनाय रे !*

*अब तो बेहाल 'कबीर' भये हैं,*

*बिनु देखे जिय जाय रे !*

इसी वक्त किसीकी पदध्वनि सुनाई पड़ी, उसने समझा उसके परिवारी ही आ गये !...

वह झपटा बाहरकी तरफ़—

मल्लू—बेटा ! बेटा !

मगर; बाहर बेटेकी जगह मल्लूने दौलतराम सेठको पाया !




दौलत—क्यों वे ! चचाको बेटा कहता है ?

मल्लू—सरकार ! क्षमा कीजिये—ग़लती हुई ! आज मैं अपनी लुगाई और लालकी राह देख रहा हूं—वे आते ही होंगे !

दौलत—चूल्हेमें जायँ तेरे घरवाले; पाजी ! मेरे रुपये ला ! नहीं तो सारे क़ानून मेरे चाटे हुए हैं बच्चू !

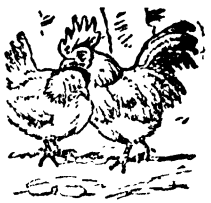
मल्लू—सरकार ! ज़रूर राजाराम मुझे रुपये देंगे ! मैंने यही तो सपना देखा है आज सवेरे...

दौलत—सपनेके बच्चे ! राजारामके ग़ुलाम ! मैं सारे क़ानून जानता हूं। समझ ले ! कल तड़के, सवेरे,भोरतक अगर मेरी भरपाई चुकता न कर देगा, तो अब, मारे जूतोंके तुझसे रुपये वसूल किये जायँगे।

'जूतों' पर अपमानसे चमका मलुआ

मल्लू—ज़ुबान सँभालो सेठ ! रुपयोंके वास्ते ईमानदार, ग़रीबकी इज़्ज़त न लो !

दौलत—इज़्ज़त तेरी ख़ाकमें मिलाकर, जूतोंसे ठुकराई जायगी



बदमाश ! अभी अच्छे क़ानूनदानोंसे वास्ता नहीं पड़ा है, गधा ! सूअर ! पाजी ! चोर !

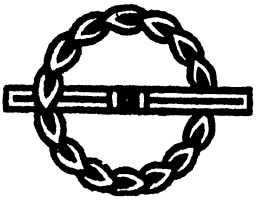
अब मल्लूसे सहन न हो सका—दुखसे मुर्झाकर भागा वह राममन्दिरकी तरफ़—

*मल्लू*—बक पागलों-सा ! हे राम ! कैसे-कैसे दिन दिखलाते हो प्रभो ! दीनानाथ !!

मल्लू दौलतरामके सामनेसे भाग गया...मगर; दौलत भी आज कुछ भी करनेपर तैयार था।

*दौलत*—कुछ भी हो ! अब मैं इसको छोड़नेका नहीं। अब मैं इसके साथ क़ानूनी, ग़ैर-क़ानूनी कोई भी कारवाई उठा न रखूँगा।

वह भी डण्डा ताने, हाँफता हुआ, झपटा मल्लूके पीछे।






**स्थान** -- राम-मन्दिर

**समय** —दोपहरसे पहले

मल्लू आगे और दौलतराम पीछे राममन्दिरकी तरफ आते हैं।

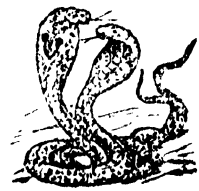
मल्लू सावेश अन्दर घुस गया, मगर; दौलत बाहर ही रुककर भीतर झाँकने लगा।

दौलतने देखा, मन्दिरमें जा मल्लू बहुत देरतक सावेग टहलता रहा।

क्रोध और अपमान और दुःखसे ओठ फड़क रहे थे। कुछ बोलनेकी इच्छा करके भी वह लहूकी घूंटकी तरह पी रहा था।

मल्लूका वह भयानक भाव देख, एकबार दौलत-राम दुरात्माकी आत्मा कांप उठी। वह तुरन्त भाग जानेपर आमादा हो गया—मगर, उसी वक्त, मल्लू बिगड़ा अपने इष्टदेव, राजा रामचन्द्रदेवपर—

मल्लू—राजाराम! बारह बरससे तुम्हारी चाकरी मैं बजा रहा हूँ...



...तुम विश्व-पालक हो, पण्डितोंके शब्दोंमें करुणा सिन्धु हो ! उदारताके हिमालय भी तुम्हीं कहे जाते हो ग़रीबनवाज़ !

...मगर - मगर,राजाराम ! तुमने मुझे तीन हज़ार रुपये न दिये—न दिये—न दिये !

...मैंने ठोकरें खाईं—गली-गलीकी, तिनके चुने वन-वनके ! मेरी प्यारी घरवाली दुखोंसे पागल हो न जाने कहाँ चली गयी। मेरा बेटा—कलेजेका टुकड़ा—टुकड़ोंका मोहताज मुझे छोड़ क्या जाने किधर भाग गया! और तुम—राजाराम ! ठण्डे पत्थर !!

...कल—कल कठोर महाजन जूते मारेगा मुझे—ह-ह-ह ! राजारामके ग़ुलामको कल जूते लगेंगे...

...बस—बस ! हो चुकी तेरी-मेरी यारी ! राजाराम ! तू राजा नहीं; रंक है। भगवान नहीं; मन-गढ़न्त है—स्वामी नहीं; ठग है।




...तेरी सेवा और रेगिस्तानकी खेती बराबर है...

राम ! राजाराम !

मारे आवेशके मलुआ रोने लगा। गदन कट जानेपर भी जो अपने आराध्यका अपमान नहीं कर सकता था उसीने स्वामीको आज सब कुछ सुना दिया। मलुआ भागा मन्दिरसे—मानो; उसने अपना अन्तिम अवलंब भी खो दिया—और मलुआ रोता था। और मलुआके वे आंसू परम तेजस्वी थे। ऐसे, जिनमें समुद्रोंके हाहाकार और प्रलयोंके प्रकम्पन भरे थे—दौलतरामने देखा! देखा राजारामकी नीलाम्बुजश्यामली मूर्ति हिल रही है—मुस्कुराती हुई। साथ ही, हनुमानकी प्रतिमा भी कांप रही है—

मूर्तियां बोलीं—लो !

*राम* – हनुमान...!

*हनुमान*—स्वामी !

*राम*—वह मुझको गालियाँ सुना गया है—सुना तुमने ?

*हनुमान*—सुनता तो उसकी ज़ुबान मुहँसे बाहर न कर देता !



मैं तो स्वामीके ध्यानमें मग्न था। कहाँ गया दुष्ट?

*राम*—शान्त! महावीर! वह आदमी मेरा सच्चा भक्त है—उसको पाँच हज़ार रुपये फ़ौरन दो!

*हनुमान*—स्वामीकी आज्ञासे मैं उसको पाँच करोड़ दे सकता हूँ—पाँच अर्ब—खर्व—

*राम*—उसने क्रोधमें मुझे 'कंगाल' कहा हनुमान! मैं कंगाल नहीं; वही अभागा है। मैं क्या करूँ। हनुमान! उसको कल, आते ही, पाँच हज़ार दो!

इसके बाद मूर्तियां स्तब्ध नज़र आईं। दौलतराम तो मानो सपनेसे जाग उठा। एकाएक वह निश्चय ही न कर सका कि, वर्तमान युगमें ऐसी बात विश्वसनीय है, या नहीं। मगर; आँखोंदेखी बातके लिये गवाह वह क्यों चाहता? उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि, कल मलुआको लाखों कलदार हनुमान देंगे। उसके मुंहमें मलुआके सौभाग्यपर पानी आ गया।

*दौलत*—लाखों रुपये! सैकड़ो हज़ार! हल्दी न फिटकिरी—हज़ार! हज़ार!



**स्थान**—राममन्दिरके पीछे

**समय**—आधीरात

विपतकी गोदमें सर रखे, बुखारसे जलती मैना प्रलाप कर रही है—भयानक !

*मैना*—नहीं—नहीं लूँगी रे ! रहने दे अपने सुख—गहने—विलास—मोटर—दुराचार—नहीं चाहिये रे !

हैरान मातृभक्त बालक विपत किंकर्तव्यविमूढ़ अपनी माताका मुंह देखता है ।

*विपत*—बको मत अम्माँ ! मुझे डर लगता है ।

*मैना*—दारू—हा हा हा हा ! मज़े—हो हो हो हो ! मारो मत ! अरे मुझे मत मारो ! मैं अपने ग़रीब, ईमानदार पतिके पास—आह !

व्यथासे बेहोश...





**स्थान**—मल्लूकी झोपड़ी

**समय**—सवेरा

मल्लू फांसी लगाकर मर जानेके लिये मोटी रस्सीमें गांठें बना रहा था...कि, दौलतराम नजर आया।

*मल्लू*—देखिये! आज अपमानकी बातें करियेगा, तो खून—सेठजी!

*दौलत*—मेरी बात सुन...! मैं कुछ न करूंगा। क्योंकि, क़ानून मैं जानता हूँ। मगर; मलुआ एक काम मेरा कर दे—

*मल्लू*—क्या काम?

*दौलत*—काम इतना ही है कि, आज तू टूटे मन्दिरमें मत जा...

*मल्लू*—न जाऊँ? राजारामके मन्दिरमें—? आज—? जब कि, मैं सब कुछ करनेपर आमादा हूँ—वाह, सेठजी! माफ़ कीजिये—आज तो मैं ज़रूर जाऊंगा।

*दौलत*—सुन भी—उसी मन्दिरमें ६ बजे दिनतक मुझे एक मन्त्र जगाना है—जाना तू—मगर; ६ बजेके बाद...



मल्लू—कुछ हो सरकार! लेकिन मैं तो राजारामका पुराना ख़िदमतगार हूँ—मैं न जाऊँगा तो मेरी सारी सेवाएं नष्ट...

दौलत—अरे ६ बजेके बाद जाना—जा, मैं अपना 'सूद' छोड़े देता हूँ—क़ानूनन...

मल्लू—मगर; नौकर हूँ मैं रामका—हाजिर रहूँ ज़रूर...

दौलत—मैं अपने सारे रुपये—समझ ले!—छोड़ देता हूँ—

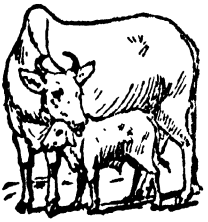
मल्लू—रुपये मुझे राजाराम देंगे...

दौलत—मैं तुझे एक हज़ार नक़द देता हूँ।

मल्लू—राजाराम मुझे सब कुछ देंगे...

दौलत—मलुआ! मैं सारे क़ानून जानता हूँ। मैं चाहूँ तो पुलिस तुझे मन्दिरमें कभी घुसने ही न दे! मान जा! मैं तुझे तीन हज़ार देता हूँ—ले! बस। ६ बजेके बाद तू आ जाना मन्दिरमें—बस—

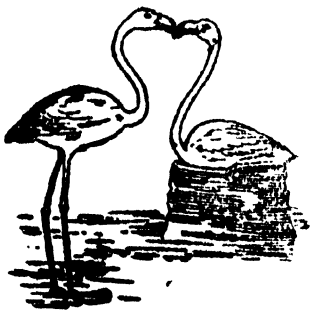
रुपयेकी गठरी मल्लूके सामने फेंक दौलतराम झपटा राममन्दिरकी तरफ़...



हनुमानके मुंहसे करोड़ों और खबों की बात सुन उसको लाखोंकी उम्मेद थी...

और मलुआ—एकाएक इतने रुपये घरबैठे ऐन मौके पर पाकर भौंचक-सा रह गया—

मल्लू—कैसी दिल्लगी! कितने रुपये!! जय—जय! राजा रामचन्द्रकी जय! प्रभो-सपना सच हुआ। अब मेरे स्वजनोंको भी मिला दो—भगवान; आज बरस दिन-का दिन—होली—है।





स्थान—राम मन्दिरके पीछे

समय—सवेरा

मैना बुख़ारसे पागल विपतकी गोदमें—

*मैना*—सर्दी ई ई ई ई ! ताप...! पाप !! मैं ख़त्म—बस—बेटे !!

*विपत*—बकोमत माँ !

*मैना*—लाल ! तू हमेशा मुझे चाहता रहा—मगर; मैं अभागिनी अपना फ़र्ज़ अदा न कर सकी ! अह ! भयानक सर्दी...मैं—मैं मर जाऊँगी...

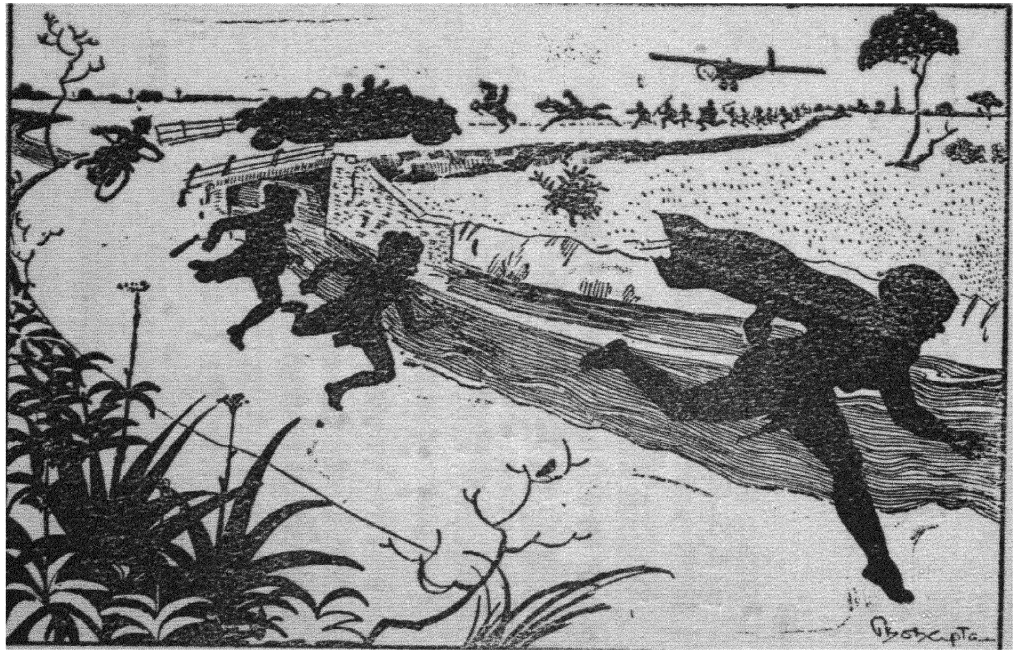
ज्वरावेशसे काँपती है...अभागिनी।

विपत कुछ सोचता—सोचता है कैसे माताके लिये कहीं से कोई गर्म ओढ़ना मिले—कैसे रे...? उसने कुछ निश्चय किया—

*विपत*—ठहरो माँ ! तुरन्त एक कंबल माँगकर, मैं शहरसे लाता हूँ—बिना ओढ़नेके तुम्हें बहुत कष्ट होगा।

वह भागा—पत्ते तोड़...

*मैना*—ना—ना राजा ! तू न जा—! बेटे—भैये !!



पैदल दौड़ा—सवार दौड़ा—मोटर बाइसिकिल और मोटरें दौड़ी विपत्ति के पीछे





स्थान—बिलासपुरका राजपथ

समय—सवेरा

होली खेलनेका दिन है न ! कहीं डफ बज रहा है, कहीं करताल। कहीं रोशनचौकी है, तो कहीं सेनाई।

स्थान-स्थानपर यौवन और उन्माद व्यक्ति-व्यक्ति बिखेर रहा है...और...

और अपनी मरती माताके लिये जान देनेवाला खेलाड़ी लड़का विपत एक कम्बलकी तलाशमें दौड़ता नज़र आता है ..

होलीके रङ्गीन रूपने उसको कई जगह आकर्षित करना चाहा, पर वह दौड़ता रहा। एक जगह अनेक बच्चे छोटी-छोटी पिचकारियोंसे रङ्ग खेल रहे थे—वहाँ वह रुक गया—

विपत—मुझे भी ज़रा खेलने दो !

और एक लड़केने अपनी पिचकारी विपतको दे दी। उसने किसी तरफ़ उड़ानेके लिये रङ्ग भी भरा...मगर; लो ! माताका ध्यान—कंबल गर्म—नहीं तो अह ! वह भागा !



विपत—ना—मैं होली नहीं खेलूँगा। मेरी माँ असुखी है—
मुझे गर्म कंबल चाहिये...

थोड़ी दूरपर एक भला आदमी उसको नज़र आया—उसने भरसक आग्रह प्रकटकर निवेदन किया—

विपत—बाबूजी मेरी माँ बीमार है।

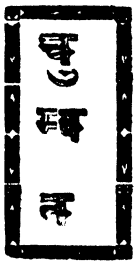
आदमी—ले एक पैसा...!

विपत—मुझे एक कंबल चाहिये हज़ूर!

आदमी—भाग, पाजी! अभीसे ठगने चला! कैसा यह भी देश है, जहाँ नन्हें नन्हे-बच्चे भीख माँगकर ठगते हैं—भाग! पोलीस!

डरकर बेचारा भागा भले आदमीके सामनेसे। कुछ आगे एक जगह उसने देखा राजाकी ओरसे ग़रीबोंको तरह-तरहकी चीजें दी जा रही थीं। राजाके अधिकारियों और भिक्षुकोंकी भीड़ लगी थी।

भिक्षुक—जय हो! भण्डार भरा रहे!



दानाध्यक्ष—इसको सवा मन गुड़ दो !

सिपाही—जय हो ! राजकी बढ़ती हो !

उदार दानीसे बालक विपतने भी प्रार्थना की ।

विपत—हुजूर मुझे एक कंबल चाहिये !

दानाध्यक्ष—क्या ? इसको चार पैसे दो ! बच्चा है...

विपत—पैसे नहीं सरकार ! मुझे एक कंबल दीजिये मेरी माँ सख़्त बीमार है...

दानाध्यक्ष—भाग ! निकालो बदमाशको ! ठग है पाजी !

राजाके प्यादोंने धक्के दे, कनेठी दे, विपतको निकाल बाहर किया—

जाते-जाते भी वह कम्बलोंके ढेरकी तरफ़ देखता जाता था । उसका बस चलता तो ज़रूर एक कम्बल लेकर वह उड़ जाता...मगर;अब ?—क्या कंबल बिना उसकी प्यारी माँ मर जायगी—? नहीं, वह चोरी करेगा—वह नन्हा, आठ-नौ सालका छोकरा...!

सिपाहियोंकी आंखें बचा विपत धीरेसे कम्बलोंके ढेरके



पास जा रहा और मौका साध, एक कम्बल सरका वह
धीरेसे राजपथकी तरफ़ सरका...
मगर: दुर्भाग्य ! दानाध्यक्षजी चश्मा लगाकर बैठे थे।
उन्होंने विपतको कम्बल चुराकर भागते देख लिया—
गृद्धहि दृष्टि अपार...!

*दानाध्यक्ष*—पकड़ो ! बदमाश कंबल चुराकर भागा जा रहा है...

*सब*—पकड़ो ! पकड़ो !!

और एक अभागे लड़केके पीछे राजाके अनेक अधिकारी
पड़ गये।—सशस्त्र
पैदल दौड़ा—सवार दौड़ा—मोटर बाइसिकिल और
मोटरें दौड़ीं विपतके पीछे, मगर; कोई माने या न माने,
बालकके पावोंमें गरूड़के पङ्ख लग गये—वह हवामें
लटकता कंबल चुराये—राममन्दिरकी—अपनी मरती
जननीकी ओर झपटा...






**स्थान**—राममन्दिरके पीछे

**समय**—सवेरे पौने नव बजे

मैना ज्वरसे पीड़ित हो मरणासन्न...प्रलाप...

*मैना*—सुख—! कहाँ गया वह सुख जिसके लिये मैंने अपने ईमानदार मर्दको छोड़ दिया—बेईमान बनी! पापिनी! मज़ेके लिये तूने उस साधूको छोड़ा था, अब भोग—ले—सज़ा...!

...बेटा! विपता! कहाँ गया भैया! कंबल लाने...? ओह! तेरे आनेके पहले ही मैं—मैं...मैं रहमके क़ाबिल नहीं। तू दयावश कंबल लेनेको क्यों गया भोले!

...मैं औरत नहीं, मैं माँ नहीं। मेरा कोई नहीं, मैं किसीकी भी नहीं। अ-ह! धिक्कार है ऐसे कठोर नीरस जीवनपर—आह!—आह! राम—राम!

और मैना सदाके लिये चीख़ कर चुप हो गयी!





**स्थान** — राममन्दिर

**समय** — सवेरे नव बजे

हनुमानसे लाखों पानेकी उम्मीदमें उत्सुक बैठा दौलतराम बार-बार घड़ी देख रहा है—और नौ भी बज गये...वह सन्देहमें पड़ गया—

*दौलत* — अयँ...! नौ भी बज गये...मलुआ साला आता ही होगा—हनुमानने रुपये—लाखों...अभी न दिये.. क्यों...? क्या धोका...?

इसी वक्त दौलतरामने रामचन्द्रदेवकी मूर्तिको पुनः हिलते देखा। मूर्तियाँ पुनः बातें करने लगीं—

*राम*—हनुमान...! अभागे मल्लूको पाँच हज़ार रुपया दिया तुमने ?

*हनुमान*—धर्मावतार ! तीन हज़ार नक़द सवेरे ही उसके पास भेज दिया है। बाक़ी जो आज्ञा हो—पूँजीपति मूँज़ी सामने बैठा है सरकारके...

अब दौलतने समझा कि, हनुमानने धोका देकर उसीसे



मल्लूको रुपया दिलाया है—अरे ! हनुमानने भी धोका दिया—ओह !

*दौलत*—क्या ? मुझको चकमा—तेरी बन्दरकी दुममें रस्सा...

दौलतराम घूंसा मार बैठा जोशमें महावीरकी मूर्तिपर—
और लो ! महावीर 'कनक भूधराकार' हो गये ! और
दौलतरामके दोनों हाथ उनकी छातीसे सट गये—
मक्खीकी तरह वह मक्खीचूस हनुमानकी छातीसे
झूलने लगा—उसकी नसें टूटने—जान निकलने लगी...

*हनुमान*—हूँ—! हूँ ! पापी !

*दौलत*—दोहाई है ! मारो मत मुझे—दोहाई !

*हनुमान*—मल्लू लकड़हारे को दो हज़ार फलदार और देगा कि, नहीं...?

*दौलत*—दूँगा—दो हज़ार दस दूँगा ! मारो मत, हनुमानजी महाराज !

*हनुमान*—अच्छा, बदकारी छोड़ेगा...?

*दौलत*—फ़ौरन—आजही से !



हनुमान—हूँ—! हूँ ! पापी !




*हनुमान*—पर स्त्री को माता मानेगा ?

*दौलत*—अपनी को भी ! छोड़ दो ! बापरे...

तबतक मल्लू भी आ गया और हनुमान पूर्ववत् हो गये।
दौलतराम पसीनेसे लथपथ हाँफने लगा।

*मल्लू*—जय जय, राजारामकी ! सेठजी, मन्त्र सध गया सरकार का...?

*दौलत*—मन्त्र नहीं मेरा कपार सधा—ले दो हज़ार और...

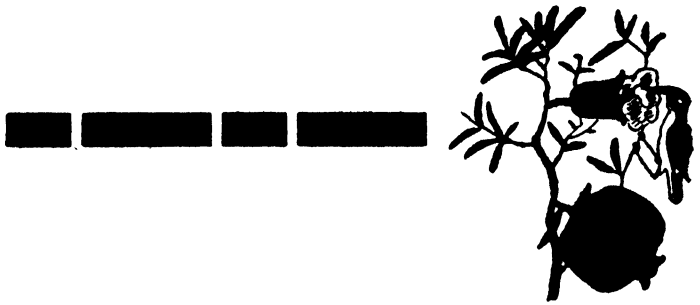
*मल्लू*—क्यों ? क्यों ? इसकी मुझको ज़रूरत नहीं, आप फ़िज़ूल क्यों देते है ?

*दौलत*—रामदूत हनुमानका हुक्म है कि, तुझे पाँच हज़ार रुपये मैं दूँ—फ़ौरन !

दौलत रुपयेकी दूसरी गठरी कमरसे निकाल मल्लू के सामने फेंक बाहर झपटा...!

*दौलत*—इस मन्दिरमें आकर मैंने झख मारा...

*मल्लू*—जय हो, राजाराम ! स्वामी, बहुत दिये...अब—अब



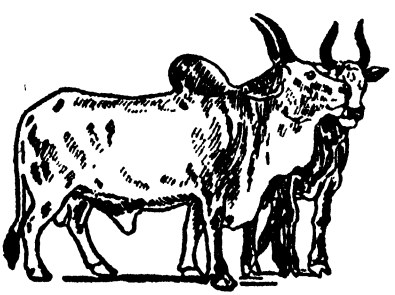
मेरा मैना—मेरा प्यारा विपत—प्रभो ! तुम सब कर सकते हो...

इसी वक्त घनघोर शोर सुनाई पड़ा...

नेपथ्य—पकड़ो ! चोर है !! कम्बल चुराकर भागा है !

मल्लू— कैसा शोर...चोर कौन ?.. देखूँ तो...!

वह भी मन्दिरके बाहर झपटा...कमरमें रुपये पाँच हज़ार लिये ! राजारामका वरदान






**स्थान**—राममन्दिरके पीछे

**समय**—सवा नौ बजे सवेरे

मैना मरी पड़ी है। कंबल लिये कोसोंसे भागता—प्राण छोड़कर भागता—सिपाही, पुलीस, घोड़ा, मोटरसे भागता—विपत आता है...आते ही माँको कंबल ओढ़ाकर उसकी लाशसे वह लिपट जाता है अनजान!

*विपत*—माँ! अम्माँ! सो गयी क्या? देख तो! वे मुझे पकड़ेंगे—कम्बलके लिये! वे भयावने—हथियारबन्द... माँ...

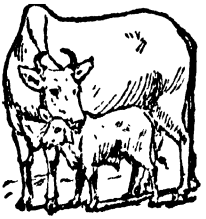
*नेपथ्य*—पकड़ो! मारो! इसीमें घुसा है। इसी कम्बलमें...

विपत माताकी छातीसे सटकर मारे भयके काँपता हुआ—

*विपत*—माँ—अम्माँ! वे मुझे मारेंगे—माँ...!!

और भीषण भयसे वह सन्न—समाप्त!—हो गया!

तबतक सिपाही, पुलिस, साजेण्ट, मोटर और धर्मा-



[illegible] सभी राममन्दिरके पीछे—कम्बलके नीचे छिपे चोरको घेरकर खड़े हो गये...

एक—शातिर...चोर...!

दो—बचपनमें जब यह हालत है; तब बड़े होनेपर अल्लाह ही मालिक है।

मल्लू—क्या है? मामला क्या है सरकार!

तीन—भारी चोर पकड़ा गया है...!

कई सिपाही आगे बढ़कर रोबसे

एक—कहाँ है...?

दानाध्यक्ष—कंबलको पहचानता है सोत्साह!

दानाध्यक्ष—यही राजाका कम्बल है...!

कोई—चोर कहाँ गया...?

किसीने कम्बलको ऊपर उठा लिया...और मल्लू, दौलतराम तथा सारी जनताने देखा—क्या—? दो शव! मैना और विपत एक दूसरेके अभिन्न अंशसे कलेजेसे सटे थे—अह!



*सिपाही*—दोनों बेदम हैं...!

*सिपाही*—भाग गया साला चोर !

*सार्जण्ट*—आख़िर ये दोनों थे कौन ?

*मल्लू*—ये...? ये दोनों हमारे राजारामके क़ैदी थे—सज़ा पूरी हो जानेपर छोड़ दिये गये। राजाराम ! जय हो—जय हो तुम्हारी लीलामय !

मलुआ पागलोंसा तेज़ीसे भागा एक ओर...

*सार्जण्ट*—यह आदमी कौन था ?

*दौलत*—वही इस चोर लड़केका बाप और बेचारी औरतका ख़ाविन्द है—क़ानूनन ! सचमुच ये बेचारे ग़रीब थे—

*दानाध्यक्ष*—ग़रीब थे ? बे—चारे ?

*दौलत*—निहायत ! औरतके पास तो, मुझे मालूम है, एक फटी सारीके अलावा और कुछ था ही नहीं। मैं सारे क़ानून जानता हूँ भाई; ज़्यादा क्या कहूँ !...

*सार्जण्ट*—बेचारोंकी जानें मुफ़्त ही गयीं !



**स्थान**—नदी—मँझधार

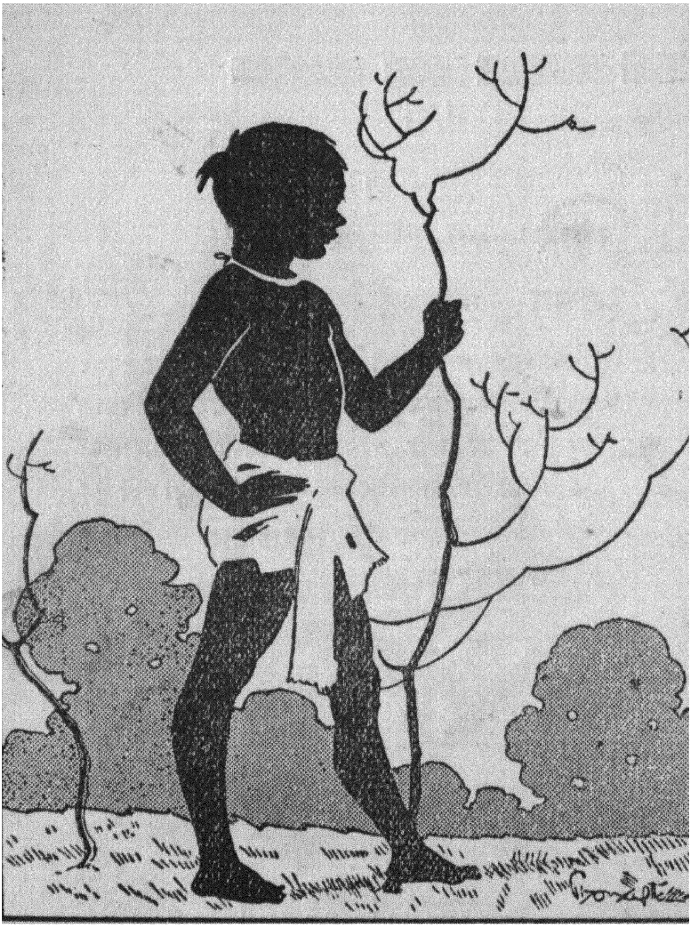
**समय**—मध्याह्न

नदीमें एक नाव जा रही है जिसके सिरेकी ओर उदास दुखिया मल्लू नज़र आता है। गठरीसे निकाल-निकाल एक-एक कर सारे पाँच हज़ार रुपये, राजारामकी एक युगकी सेवाका अमृत-फल वह नदीमें बहा रहा है! और उस पारसे हालीकी तरंगमें लहराते—सुखियोंका गीत सुनाई पड़ रहा है—

## गीत

*केसरिया रंग रँगा चोला...!*

*मनमोहनकी रास रसीली,*
*ललचाये जियरा भोला*
*फाग राग अनुराग अलख लख,*
*चितने पट घूंघट घोला*
*केसरिया रंग रँगा चोला...*



सख़्त बदनसीब. विपत

